अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाए

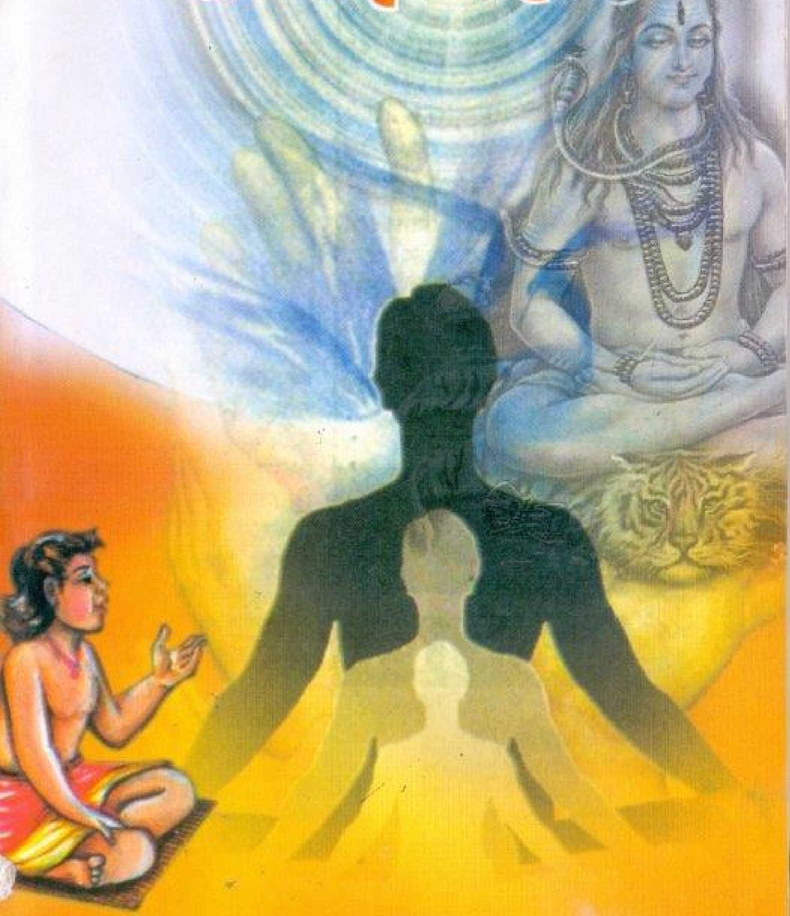

अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाए

*

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

*

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१०   मूल्य : ३०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो शब्द

भारतीय संस्कृति का मूल आधार अध्यात्म है। इसी के कारण हमारा देश समस्त संसार में अति प्राचीन काल से प्रसिद्ध और माननीय रहा और इस विज्ञान प्रधान युग में भी संसार के बहुसंख्यक ज्ञानी व्यक्ति उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। यद्यपि हम अच्छी तरह जानते हैं कि वर्तमान समय में मनुष्य या तो अज्ञानग्रस्त हो जाने से अध्यात्म का अर्थ ही नहीं समझते अथवा पाश्चात्य भौतिकवाद से आकर्षित होकर अध्यात्म को अलाभकर और निकम्मा मान बैठे हैं। पर इस प्रकार के व्यक्तियों की भूल या अवहेलना के कारण अध्यात्म का महत्त्व नहीं घट सकता। मानवजीवन की गाड़ी कभी एक पहिये पर, अर्थात् भौतिकवादी मान्यताओं पर सुचारु रूप से नहीं चल सकती। मनुष्य की अंतरंग वृत्तियों का परिमार्जन और विकास बिना आध्यात्मिक प्रगति के नहीं हो सकता और अध्यात्म से रहित व्यक्ति "मानव" कहलाने का अधिकारी नहीं बन सकता।

इसी विषय-परिस्थिति अर्थात् आध्यात्मिक भावना का अधिकांश में अभाव हो जाने के कारण, इन दिनों संसार की हालत बड़ी संकटपूर्ण हो उठी है। मनुष्यों ने धन को, भौतिक-संपदा को ही सब कुछ मान लिया है और उसे प्राप्त करने के लिए वे भलाई-बुराई, नैतिकता-अनैतिकता, सदाचार-दुराचार की कुछ परवाह नहीं करते। परिणाम यह हुआ है कि मनुष्यों की पारस्परिक सद्भावना का निरंतर ह्रास होता जाता है और सर्वत्र एक हीन कोटि की स्वार्थपरता, एक प्रकार का आसुरी संघर्ष उत्पन्न हो गया है। सामान्य व्यक्तियों से लेकर बड़े-बड़े राष्ट्रों में भयंकर आपाधापी चल रही है और कहीं प्रत्यक्ष तथा कहीं अप्रत्यक्ष रूप से वे एक दूसरे का पराभव करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप निकट भविष्य में एक नाशकारी संसार-संकट उत्पन्न हो जाने की संभावना प्रतिदिन बढ़ती जाती है। इस अवस्था में अध्यात्म और भौतिकता में समन्वय का मार्गदर्शन करने वाली यह पुस्तिका कल्याणकारी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

—प्रकाशक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

१ भौतिकता की बाढ़ मारकर छोड़ेगी ४
२. क्या यही हमारी राय है ? ६
३. भौतिकतावादी दृष्टिकोण हमारे लिए नरक-सृजन करेगा १३
४. भौतिक ही नहीं, आध्यात्मिक प्रगति भी आवश्यक १८
५. अध्यात्म की उपेक्षा नहीं की जा सकती २३
६. अध्यात्म की अनंत शक्ति सामर्थ्य २६
७. अध्यात्म समस्त समस्याओं का एकमात्र हल ३०
८. आध्यात्मिक लाभ ही सर्वोपरि लाभ है ३५
९. अध्यात्म मानवीय प्रगति का आधार ४१
१०. अध्यात्म से मानव-जीवन का चरमोत्कर्ष ४६
११. हमारा दृष्टिकोण अध्यात्मवादी बने ५२
१२. आर्ष अध्यात्म का उज्ज्वल स्वरूप ५८
१३. लौकिक सुखों का एकमात्र आधार ६३
१४. अध्यात्म ही है सब कुछ ७१
१५. आध्यात्मिक जीवन इस तरह जियें ७७
१६. लोक का ही नहीं, परलोक का भी ध्यान रहे ८२
१७. अध्यात्म और उसकी महान् उपलब्धि ८६
१८. आध्यात्मिक लक्ष्य और उसकी प्राप्ति ९३
१९. आत्म-शोधन अध्यात्म का श्रीगणेश ९९
२०. आत्मोत्कर्ष-अध्यात्म की मूल प्रेरणा १०४
२१. आध्यात्मिक आदर्श के मूर्तिमान् देवता—भगवान् शिव ११४
२२. आद्यशक्ति की उपासना से जीवन को सुखी बनाइये ११९
२३. अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाए १३६
२४. आध्यात्मिक साधना का चरम लक्ष्य १४२
२५. अध्यात्म लक्ष्य की सर्वांगपूर्णता १४६
२६. अपने अतीत को भूलिए नहीं १५१
२७. महान् अतीत को वापस लाने का पुण्य प्रयत्न १५५

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाए

☀

भौतिकता की बाढ़ मारकर छोड़ेगी

१६७३ विवाह के पीछे अधिक से अधिक १ तलाक। यह स्थिति सन् १८६० की संयुक्त राज्य अमेरिका की है। इस वर्ष वहाँ ५३०६१७ नये विवाह हुए, इनमें से ३१७३ का संबंध विच्छेद (तलाक) हुआ। इसके बाद भौतिक सुख-सुविधाओं में तेजी से वृद्धि हुई, इस वृद्धि से भी तीव्र गति पारिवारिक जीवन में अशांति की रही। सन् १९६७ में अमेरिका में १६१३००० नये विवाह संबंध हुए, जिनमें से लगभग एक तिहाई अर्थात् ५३४६०० लोगों के संबंध विच्छेद हुए। नये विवाहों की प्रतिशत वृद्धि जहाँ २६० प्रतिशत थी वहाँ तलाकों में १६०० की प्रतिशत की वृद्धि यह सोचने को विवश करती है कि बढ़ती हुई भौतिकता जन-जीवन के लिए भूखे रहने से भी बढ़कर उत्पीड़क है।

बढ़ती हुई यांत्रिकता और भौतिकता ने मनुष्य को इतना विलासी बना दिया है कि उसे यौन-सुख के अतिरिक्त भी संसार में कोई सुख, कुछ कर्तव्य और उत्तरदायित्व हैं, यह सोचने को भी समय नहीं मिलता। अनियंत्रित भोगवासना ने योरोप के सारे समाज को चरित्र भ्रष्ट कर दिया है। कोई भी पत्नी, पति पर यह विश्वास नहीं कर सकती कि वह कब किस नये साथी का चुनाव कर लेगा। सौंदर्य और शरीर के आर्कषणों के पीछे धुत्त मनुष्य गुणों की, चरित्र की बात सोच ही नहीं पाता। उसी का परिणाम है आज अकेले अमेरिका में ३०००००० महिलायें ऐसी हैं, जिनके विवाह संबंध हो गये हैं, पर या तो उन्होंने स्वयं या उनके पतियों ने उन्हें छोड़ दिया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दांपत्य जीवन में जहाँ निष्ठा नहीं होती, उस समाज के युवक-युवतियाँ दिग्भ्रांत होते हैं। उनकी दिग्भ्रांति, उद्दंडता, अराजकता, विद्रोह और तोड़-फोड़ के रूप में प्रकट होती है। वह स्थिति उतनी दुःखांत नहीं होती, जितनी मानसिक शांति के नाम पर परस्पर आकर्षण का भ्रम। प्रौढ़ पीढ़ी के प्रति कोई श्रद्धा उनमें होती नहीं, फलतः सांसारिक अनुभवों का लाभ प्राप्त करने की अपेक्षा पानी की बाढ़ की तरह उन्हें जो अच्छा लगता है, वह उधर ही दौड़ पड़ते हैं। अनैतिक संबंधों की बाढ़ आज उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह आँधी अभी दूसरे देशों में अधिक है, पर कोई संदेह नहीं यदि अपने देश में बढ़ रहे पाश्चात्य प्रभाव के कारण वह स्थिति यहाँ भी न बन जाये।

रूस को अपने चरित्र और नैतिकता का बड़ा गर्व रहता है। वहाँ भी ६ बच्चों में से १ बच्चा निश्चित अवैध संबंध से जन्मा होता है। न्यूजीलैंड में ८ के पीछे १, इंगलैंड में १३ में १, आस्ट्रेलिया में १२ में १, अमेरिका में १४ में १ बच्चा ऐसा होता है, जिसके माता-पिता विवाह के पूर्व ही शरीर संबंध स्थापित कर चुके होते हैं। इस तरह की अवैध संतानों की संख्या अकेले अमेरिका में ही तीन लाख से भी अधिक है।

वर्तमान पीढ़ी की विलासी प्रवृत्ति आने वाली संतानों के लिए किस तरह घातक बनती जा रही है, उस पर दृष्टि दौड़ायें तो स्थिति कुछ ऐसी विस्फोटक और चौंकाने वाली दिखेगी कि हर व्यक्ति यही सोचेगा कि १०० वर्ष के बाद इस संसार में पाये जाने वाले सभी मनुष्य शंकर जी की बारात की तरह टेढ़े, काने, कूबड़े, अंधे, लूले, लँगड़े, किसी का पेट निकला हुआ, किसी का आवश्यकता से अधिक पिचका हुआ हो तो कोई आश्चर्य नहीं। करोड़ों में कोई एक पूर्ण स्वस्थ हुआ करेगा, तो वह सिद्ध-महात्माओं की तरह पूज्य और सबका नेता हुआ करेगा। यदि आज का संसार अपनी तथाकथित प्रगति के पाँव रोकता नहीं तो क्या अमेरिका, क्या भारत इस प्रगति के लिए सबको तैयार रहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विलासिता का एक दुर्गुण यह भी है कि वह भोग से बढ़ती है, शांत नहीं होती। वासना की भूख न केवल अनैतिक आचरण करने को बाध्य करती है, वरन् शरीर को विषैले पदार्थों से उत्तेजित कर और अधिक भोग का आनंद लूटने को दिग्भ्रांत करती है। अमेरिका में आज १५०००००० व्यक्ति चरस, गाँजा, कोकीन आदि में से किसी न किसी का नशा अवश्य करते हैं। फ्रांस में अब गणना उल्टी है अर्थात् यह पूछा जाता है कि कितने प्रतिशत लोग नशा नहीं करते। यह औसत ५ से अधिक नहीं बढ़ता। पश्चिम जर्मनी में स्त्री-पुरुषों में होड़ है, कौन अधिक चरस पिये ? वहाँ के ४ लाख पुरुष नशेबाज हैं तो स्त्रियाँ २ लाख। रूस के लोग प्रतिवर्ष कम से कम ६० अरब रुपये की शराब पी जाते हैं।

इसका उनके स्वास्थ्य पर पड़ा प्रभाव उतना घातक नहीं, जितना आने वाली पीढ़ी पर पड़ता है। मनुष्य शरीर में प्रजनन कोष (जनेटिक सेल्स) सबसे अधिक कोमल होते हैं, इन्हीं में बच्चों के शरीर निर्धारित करने वाले क्रोमोसोम (संस्कार कोश) पाये जाते हैं। नशों के कारण यह गुण सूत्र अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। उसी का कारण होता है कि बच्चे काने, कूबड़े, लूले, लँगड़े पैदा होते हैं। इंग्लैंड में ४० बच्चों के पीछे १ बच्चा अनिवार्य रूप से कुरूप होता है। आस्ट्रेलिया में ५० में १, स्पेन में ७० के पीछे १ और हांगकांग में ८५ में से १ बच्चा लँगड़ा-अपाहिज पैदा होता है। अमेरिका में प्रतिवर्ष २५०००० बच्चे ऐसे पैदा होते हैं, जिनके शरीर का कोई न कोई अंग विकृत अवश्य होता है। इस समय वहाँ के विभिन्न अस्पतालों तथा घरों में ११०००००० बच्चे ऐसे पैदा होते हैं, जिन्हें किसी न किसी रूप में विकलांग कहा जा सकता है। वह न तो किसी मोटर दुर्घटना का परिणाम होगा, न चोट या मोच का। स्पष्ट है कि यह सब लोगों के आहार-विहार और जीवन पद्धति का दोष है, जो आगामी पीढ़ी को यों दोषी बना रहा है।

यौन सुख की अनियंत्रित बाढ़ आज के भौतिकवाद की भयंकर देन है। वह लोगों के स्वास्थ्य को किस प्रकार बुरी तरह से नष्ट कर रही है, इसका सही अनुमान तो योरोप के अस्पतालों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाकर ही हो सकता है, पर यदि किसी को उसकी जानकारी देनी ही हो तो यह कहना ठीक होगा कि जिस तरह अपने देश के अशिक्षित लोगों में अंध-विश्वास की बहुतायत है, उसी तरह योरोपीय देशों में अधिकांश व्यक्ति यौन-रोगों से पीड़ित मिलेंगे। "न्यूजवीक" साप्ताहिक ने अपने एक अंक में लिखा है कि योरोप में ४० हजार महिलायें ऐसी हैं, जो इसी कारण कैंसर से बीमार हैं और उनकी कोई चिकित्सा नहीं है। इसी प्रकार अमेरिका के डॉक्टरों ने भी यौन-रोगों को रोक सकने की अपनी सामर्थ्य से हाथ ढीले कर दिये हैं।

यह तूफानी झंझा भौतिकवाद की चलाई हुई है। मनुष्य उससे बचना चाहता है तो वह आध्यात्मिकता का आश्रय ले, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं है। आध्यात्मिकता ही स्वास्थ्य, सदाचार, शांति और नैतिक मूल्य स्थिर रख सकती है।

अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा आदि देशों में विज्ञान लोगों के रोयें-रोयें में बस गया है। हमारी गतिविधियाँ उनके अंधानुकरण की हैं। हम चाहते हैं कि भारतवर्ष भी पाश्चात्य देशों का अनुकरण करे और यंत्रीकरण को बढ़ावा दे, ताकि देश में खुशहाली बढ़े। पर ऐसा सोचते समय हम वहाँ के जीवन में यंत्रीकरण के फलितार्थों की बात भूल जाते हैं। यदि उसका भी समानांतर वर्णन कर दिया जाता तो हम अनुभव करते हैं कि हमारे लिए यंत्रीकरण उतने उपयोगी नहीं हैं, जितना आजकल महत्त्व दिया जा रहा है।

प्रोफेसर हार्वर्ड डिंगले जो लंदन विश्व-विद्यालय के एक प्रख्यात खगोल पिंडों के भौतिकीय एवं रासायनिक विज्ञान के ज्ञाता (एस्ट्रोफिजिस्ट) तथा दर्शनशास्त्र एवं विज्ञान के इतिहास के भी ज्ञाता थे—उनका कथन है कि जब हम उस विज्ञान की प्रकृति के बारे में विचारते हैं, जो आजकल प्रचलित है एवं जिसका उपयोग आजकल हो रहा है, हम ऐसी परिस्थितियाँ पायेंगे, जिनसे भगवान् के दूत भी रोने लगें। यह ऐसा युग नहीं है कि आँख मींचकर विज्ञान की शक्ति को महत्त्व दिया जाए। विज्ञान की सत्यता का ही ध्यान रखा जाए और आध्यात्मिक सत्यों को पूर्णरूपेण भुला दिया जाए तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके वही परिणाम हो सकते हैं, जो आज अमेरिका, इंग्लैंड में दिखाई दे रहे हैं और जो सुखद नहीं हैं।

अमेरिका का आकाश कभी अवकाश नहीं पाता। वहाँ हर क्षण कम से कम एक हजार जहाज आकाश में केवल पहरेदारी के लिए गड़गड़ाते घूमा करते हैं। पहरेदारी की चिंता भयग्रस्तों को होती है। अमेरिका जैसा भयभीत कोई दूसरा देश नहीं, यह विज्ञान की देन है।

हवाई जहाजों के अतिरिक्त वहाँ हजारों कारखाने, मोटरें, मशीनें चौबीस घंटे चलते रहते हैं; उससे वातावरण में गंदी गैसें छाई रहती हैं। शोर इतना होता है कि एक शहर में जितना शोर होता है, यदि उसे विद्युत् शक्ति में बदल दिया जाए तो सारे शहर के उपभोग की आवश्यकता को पूरा करके भी बहुत-सी विद्युत् शेष बच जायेगी।

गंदी गैसों के कारण वहाँ नई-नई तरह की बीमारियाँ फैलती जा रही हैं। कुछ बीमारियाँ ऐसी हैं, जो केवल अमेरिका में ही पाई जाती हैं, उनके उपचार के लिए उसे निरंतर नई-नई औषधियों की खोज में लगे रहना पड़ता है। तीन चौथाई विज्ञान वहाँ एक चौथाई विज्ञान के दुष्परिणामों की रोक-थाम भर के लिए है। होता उल्टा है, विज्ञान जितना बढता है, वहाँ की समस्याएँ उतनी ही जटिल होती जा रही हैं। वहाँ के मूर्धन्य मनीषी आइंस्टीन तक को इसलिए कहना पड़ा था—"विज्ञान की प्रगति के साथ धर्म की प्रगति न हुई तो संसार अपनी इस भूल के भयंकर दुष्परिणाम आप ही भुगतेगा।"

चौबीस घंटे शोर के कारण वहाँ ७० प्रतिशत लोगों के मस्तिष्क खराब हैं। आत्म-हत्यायें और हत्यायें सबसे अधिक अमेरिका में होती हैं, ६० प्रतिशत अमेरिकन नींद की गोलियाँ लेकर सोते हैं, अन्यथा उनके मस्तिष्क इतने अशांत होते हैं कि उन्हें स्वाभाविक नींद लेना भी कठिन हो जाता है। दांपत्य जीवन जितना अमेरिका और इंग्लैंड में क्लेशपूर्ण है, उतना संसार के किसी भाग में नहीं। अमेरिका में एक कहावत प्रचलित है—रात को विवाह प्रातः संबंध-विच्छेद' (नाइट मैरिजेज मार्निंग डाइवर्स)। यह घटनायें बताती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं कि भौतिक प्रगति और यांत्रिक सभ्यता मनुष्य जीवन का इष्ट और लक्ष्य नहीं। उससे वास्तविक सुख-शांति की कल्पना करना निरर्थक है। हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा और आध्यात्मिकता के प्रकाश को फिर से प्राप्त करना होगा।

क्या यही हमारी राय है ?

भावनाओं की गहराई में जाकर जब मानव-जीवन की सार्थकता पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता है कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य बाह्य सुखोपभोग तक सीमित नहीं। सांसारिक सुख जीवन को सरस और सर्वांगपूर्ण बनाये रखने की दृष्टि से उपयोगी हो सकते हैं, किंतु उन्हें ही साध्य मान लेना आत्मकल्याण की सबसे बड़ी बाधा है। मनुष्य के दु:खों तथा अवनति का कारण बाह्य सुखों की अनियंत्रित आकांक्षा के अतिरिक्त और कुछ हो नहीं सकता। आज सर्वत्र इंद्रिय सुखों का इंद्रजाल फैला हुआ है। इसी से मानव जीवन में गहरी अस्तव्यस्तता समाई हुई है।

हमारा पतन इसीलिए नहीं हुआ कि हमारे पूर्वजों के बनाये हुए रीति-रिवाज और सामाजिक प्रतिबंध कठोर थे—खराब थे, वरन् इसलिए कि उनका जो सात्त्विक लक्ष्य था, उस पर पहुँचने के लिए जिस वातावरण और साधनों की आवश्यकता थी, उनको बहिष्कृत किया गया और एक नये सिद्धांत पर ही उन सभी को जोड़ दिया गया।

जब तक हमारी परंपरायें, आत्म-ज्ञान और अंत:दर्शन की आवश्यकता की पूर्ति के आर्ष-सिद्धांत के अनुसार रहीं तब तक बाह्य और आंतरिक जीवन में सुख-शांति और संतोष की परिस्थितियाँ बनी रहीं। किंतु जैसे ही बाह्य सुखों की प्रधानता बढ़ी वैसे ही क्लेश, कलह और कटुता के दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम दिखाई देने लगे। यह हमारी अंधानुकरण की प्रवृत्ति के कारण हुआ। हमारे पाँव पाश्चात्य संस्कृति के रूपमान और आकर्षक पथ की ओर इस तरह बढ़े कि हमारे अपने आदर्श और सिद्धांत पूर्णतया भौतिकवादी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धांतों पर विलीन हो गये। इंद्रियजन्य सुखों को ही प्रधानता दी जाने लगी। परिणामस्वरूप आध्यात्मिक जीवन का ढांचा ही लड़खड़ा गया।

भौतिक और आध्यात्मिक विचारधारा में एक मौलिक मतभेद है। आध्यात्मिक आदर्श मनुष्य का जीवन अन्य प्राणियों की अपेक्षा श्रेष्ठतर मानते हैं और मनुष्य से दिव्य जीवन के दार्शनिक दृष्टिकोण को समझने की अपेक्षा करते हैं। दिव्यजीवन का अर्थ है—मानवीय सद्गुणों से समृद्ध, शुद्ध जीवन। इसमें आत्मकल्याण के निजी उद्देश्य के साथ विश्वकल्याण की आदर्श भावना सन्निहित है। अर्थात् मनुष्यों के बल, बुद्धि और पराक्रम को श्रेष्ठ साधन मानते हुए भी प्राणिमात्र के प्रति आत्मभावना ही हमारी विशेषता है। इसमें किसी के उत्पीड़न का कहीं भाव तक नहीं आता। विश्वसुख और विश्वशांति का इससे बढ़कर दूसरा आदर्श हो नहीं सकता। सरल शब्दों में हिल-मिलकर सांसारिक सुखों का उपभोग और आत्म कल्याण की दृढ़तर भावना ही पूर्वी संस्कृति का स्वरूप है। इसी से मानवीय हितों की रक्षा संभव हो सकती है।

किंतु भौतिकवादी मान्यता का रूप ही कुछ दूसरा है। उसकी संपूर्ण परंपरायें, रीति और रिवाज बाह्य जगत् के सुखों को प्राप्त करने के साधन मात्र हैं अर्थात् सुख चाहे वह किसी से छीनकर प्राप्त किये जाएँ अथवा मनुष्येतर प्राणियों की हिंसा द्वारा प्राप्त हों, उनको पा लेना दुष्कृत्य नहीं बुद्धिमत्ता मानी जाती है। इससे वहाँ के आचार-विचार और जीवनयापन के विभिन्न व्यवसायों में भी वैसी ही भयानकता छाई हुई है। तलाक के बड़े-बड़े आँकड़े छापना ही मानो उनकी बुद्धि का और सभ्यता का प्रतीक है। माता-पिता के प्रति सद्भावना की कमी, सामाजिक-जीवन में स्वार्थपरता, बेईमानी, चोरी, झूठ, छल, कपट, आडंबर—यही सब विशेषतायें हमने भी उनसे सीख लीं। छोटी-छोटी बातों में कानून की शरण, धन का अपव्यय और उसे प्राप्त करने के लिए अनैतिक आचरण करना, अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए पशु-पक्षियों तक का हाड़-मांस और खून चूस लेने में ही जो अपनी विशेषता समझता हो, उसे भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई बुद्धिमान् व्यक्ति भला कहेगा ? ऐसी घृणित परंपरायें जिस समाज तथा राष्ट्र में फैल रही हों उन्हें क्या तो सुख प्राप्त होंगे और क्या उनका आत्मकल्याण होगा ? दर-दर की ठोकरें खाना, क्षुब्धता, अशांति और उद्विग्नता के दुष्परिणाम ही उन्हें मिल सकते थे, वही मिले भी। ऐसी अवस्था में धर्म और अध्यात्मवाद को दोष लगाना उचित नहीं है। दु:ख के परिणाम हमने स्वयं पैदा किये हैं। इसका दोषारोपण किसी दूसरे पर करने का हमारा कोई अधिकार नहीं है।

भौतिक सभ्यता का अनुकरण आज जिस तेजी से हो रहा है—लोगों का नैतिक पतन भी उसी गति से हो रहा है। स्वामी विवेकानंद ने वर्षों पहले इस बात की चेतावनी देकर हमें सतर्क किया था। उन्होंने कहा था—"ध्यान रखो, यदि तुम आध्यात्मिकता का त्याग कर दोगे और इसे एक ओर रखकर पश्चिम की जड़वादपूर्ण सभ्यता के पीछे भागने लगोगे तो तुम्हारा अब तक का संपूर्ण गौरव समाप्त हो जायेगा, तुम्हारी जाति मरी समझी जायेगी और राष्ट्र की सुदृढ़ नींव जिस पर इसका निर्माण हुआ है, पतन के गहरे गर्त में चली जायेगी—इसका प्रतिफल सर्वनाश के अतिरिक्त और कुछ न होगा।"

भौतिक सभ्यता का प्रभाव हमारे खान-पान से लेकर रीति-रिवाजों तक आ गया है या यों कहिए कि हम पूर्णतया अभारतीय बनते चले जा रहे हैं। हमारे वस्त्र ऐसे हो रहे हैं कि देखने वालों की आँखों में शरारत और कामुकता नाचने लगती है। सिनेमा-साहित्य, नाच, स्नो-पाउडर की भरमार ऐसी बढ़ती है कि लोगों का सारा धन, समय और शक्तियाँ इन्हीं में बर्बाद हो रही हैं। खान-पान, बोली-भाषा, आचार-विचार सभी बदल गये हैं। अपने परिवार के प्रति क्या कर्तव्य होने चाहिए ? शिक्षा का स्वरूप कैसा हो ? जीवन कैसे जियें ? यह किसी को मालूम तक नहीं है। अवांछनीय प्रतियोगिताओं की बाढ़ में अनैतिकता की बन आई है। स्त्रियों और कुमारियों में सौंदर्य प्रदर्शन की भावना इतना उग्र रूप धारण करती जा रही है कि पुरुषों की आँखें शर्म के मारे झुकी जा रही हैं। घर के लोग खाने-पीने के लिए तड़पें और कुछ चालाक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति शौक-मौज का जीवन बितायें। स्त्री और पुरुष के भेद को मिटा देने वाली इस जड़ सभ्यता ने कितना पैशाचिक उत्पीड़न किया है इस समाज का, कि देखने वालों का दम घुटा जा रहा है। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। क्या यही हमारी सभ्यता है ? इसी को संस्कृति कहें ? हमारे गौरव, हमारी कीर्ति और हमारी संपन्नता का भारतवर्ष यह नहीं है। यह तो बहका हुआ कदम है, जो विदेशियों की राह पर चल रहा है और उसी में नष्ट हो जाता है।

भारतीय धर्म वह था जो "जीवन-सिद्धि" को साकार रूप दे चुका था। यहाँ दांपत्य प्रेम, पितृ-भक्ति, मातृ-पूजा, मातृ-स्नेह सभी एक से एक बढ़-चढ़ कर थे। लोगों के आहार कितने सरल और सात्त्विक थे ? संयम और ब्रह्मचर्य की गरिमा से चेहरे प्राणवान्, कांति युक्त तथा ओजस्वी हुआ करते थे। सदाचार, प्रेम, न्याय और आत्मीयता की भावनाओं के कारण सभी ओर सुख और संतोष छाया रहता था। इस पुण्य भूमि पर देवता भी जीवन प्राप्त करने की कामना किया करते थे। भौतिक और आध्यात्मिक सम्मिश्रण के कारण लौकिक जीवन तो सुख और शांति से पूरित हुआ ही करते थे, पारलौकिक अनुभूतियाँ भी यहाँ उपलब्ध हुआ करती थीं। जो एक ऐसे ठोस दर्शनशास्त्र पर आधारित रहती थीं कि दूसरे देश वाले इस पुण्य भूमि के दर्शन करना अपना भाग्य समझते थे।

हमें भौतिक मान्यताओं की रूढ़िवादिता से बाहर निकलकर विवेकशील मनुष्य बनना पड़ेगा। अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करना होगा। मनुष्य जीवन को सच्चे दृष्टिकोण से देखने की दार्शनिक बुद्धि का विकास किए बिना मानवीय प्रगति संभव हो नहीं सकती। पूर्णतया भोगवादी जीवन के परिणाम दुःखदायी ही होते हैं। हम आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि के सम्मिश्रित मार्ग को समझें और उस पर चलें, तो मानव जीवन का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकते हैं। यही हमारी पूर्व परंपरा है और अब इसी राह पर चलने के लिए हमें समुद्यत होना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भौतिकवादी दृष्टिकोण हमारे लिए नरक सृजन करेगा

पूर्ण भौतिकवादी होने का सबसे बड़ा दंड यह है कि ईश्वर के प्रति मनुष्य की आस्था शिथिल हो जाती है। भौतिकवादी और ईश्वरवादी में परस्पर विरोध है। निश्चित है कि जो भौतिकवादी होगा, उसकी दृष्टि संसार तक ही सीमित रहेगी और जो ईश्वरवादी है उसकी दृष्टि संसार तक ही सीमित न रहकर लोक-परलोक, पाप-पुण्य, आत्मा और परमात्मा तक जायेगी ही।

'खाओ, पीयो और मौज करो' का सिद्धांत मानने और उस पर आचरण करने वालों को इतना अवकाश ही कब रहता है कि वे आत्मा-परमात्मा के विषय में कुछ सोच सकें। उन्हें तो खाने-पीने और मौज करने के साधन-सामग्री जुटाने में ही अपना सारा समय लगाना होगा। उनकी बुद्धि, उनकी विद्या और उनका सारा परिश्रम-पुरुषार्थ उन्हीं उपकरणों के संचय में यापन होता रहेगा; क्योंकि भौतिक ही सही, कोई भी उपलब्धि शक्तियों को केंद्रित कर क्रियाशील बनाये बिना नहीं हो सकती। 'खाओ, पियो और मौज करो' की वृत्ति स्वाभाविक रूप से तृप्त ही नहीं होती है। भौतिकवादी कितना ही क्यों न कमाये, कितनी ही संपत्ति क्यों न संचित कर ले और कितने ही साधन क्यों न इकट्ठे कर ले, उसे संतोष अथवा तृप्ति हो ही नहीं सकती। इसके दो कारण हैं—एक तो यह वृत्ति स्वयं ही असंतोषिनी होती है, दूसरे भौतिक भोगों में तृप्ति कहाँ ? आज के साधन कल पुराने हो जाते हैं। नये साधनों की लालसा जाग पड़ती है और नये भी जल्दी ही पुराने हो जाते हैं। इस प्रकार यह चक्र निरंतर रूप से रात-दिन चलता रहता है। ऐसी दशा में मनुष्य का पूरा जीवन खाओ, पीयो और मौज करो के साधन जुटाने में ही जुटा हुआ समाप्त हो जाता है। भौतिकता की अतिशयता से ग्रसित मनुष्य के पास इतना अवकाश ही नहीं रहता कि वह उस आदि सत्ता और अनादि कारण परमात्मा के विषय में सोच सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत मात्रा में भौतिक साधनों का ही संचय करने के लिए मनुष्य जल्दी ही ईमानदारी, नीति, न्याय तथा धर्म की सीमा छोड़ कर अनुचित एवं असत्य की रेखा में चला जाता है और तब त्वरित गति से संचय में बढ़ता हुआ आत्मा-परमात्मा से इतनी दूर चला जाता है, जहाँ पर न तो उसकी आवाज सुनाई देती है और न झलक ही दिखाई देती है। साथ ही ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, असत्य एवं अनीति के लौह आवरण उस ज्योति का मार्ग स्वयं ही रुद्ध कर देते हैं।

इस प्रकार भौतिकता की भयानक लिप्साएँ ईश्वरीय निष्ठा को इस सीमा तक नष्ट कर देती हैं कि मनुष्य अनजाने में ही पूरा नास्तिक बन जाता है। एक बार यदि वह शाब्दिक रूप में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार भी करता रहे, भले ही इनकार न करे, तब भी वह आस्तिक नहीं रह पाता। उसका अनुभूति से रहित हो जाना, उसका सर्वशक्तिमत्ता के प्रति विनम्र न होना, उसका सहारा छोड़ देना अथवा उसके निर्दिष्ट गुणों से परांग-मुख हो जाना विशुद्ध नास्तिकता ही है। सच्ची आस्तिकता की पहचान गुण-अवगुण ही हैं। ईश्वर के अस्तित्व में 'हाँ' अथवा 'ना' नहीं।

'खाओ, पियो और मौज करो' का सिद्धांत हर पदार्थ तथा हर अवसर का रस चखने की प्रेरणा करता है, जिससे बहुत बार खाद्य-अखाद्य तथा कार्य-अकार्य की मर्यादा के प्रति आस्था उठ जाती है, जिससे मनुष्य न जाने कितने अखाद्यों का भक्षण करने लगता है और न जाने कितने दुर्व्यसन अपने पीछे लगा लेता है। सुरा-सुंदरी भोगवादियों के दो ऐसे उपकरण हैं, जिनसे कदाचित् ही कोई भाग्यवान् बचा रह सके। अमर्यादित जीवन जीने के जो दुष्परिणाम शोक, संताप, असंतोष एवं अशांति के रूप में सामने आते हैं, उन्हें बहुधा भोगवादियों को भोगना पड़ता है।

जो देश जिस अनुपात से भौतिकवादी एवं भोग-परायण है और जिस अनुपात से उसको साधन-सामग्री की सुविधा है, वह उसी अनुपात में असंतुष्ट एवं अशांत है। आशंका, संदेह, तनाव, भय तथा युद्धोन्माद उनकी चिंतनधारा का अंग बन गये हैं। वे जो कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोच पाते हैं, विनाश को सामने रखकर और जो कुछ कर पाते हैं स्वार्थ को सामने रखकर। परोपकार के नाम से किया हुआ उनका प्रवर्तन किसी निहित स्वार्थ से मुक्त नहीं होता। आज जब शांति तथा निःशस्त्रीकरण की कल्याणकारी बात उनके सामने आती है तो उनका अस्तित्व सिहर उठता है कि शांति अथवा निःशस्त्रीकरण की अवस्था में हम कहीं इतने कमजोर न हो जायें कि कोई दूसरे हमारे भोग-उपभोगों को छीन लें। भौतिक भोगों के रोगियों के पास आत्मबल अथवा आत्मविश्वास कहाँ ? और कहाँ होती है उनके पास वह निःस्पृहता, वह तत्त्व दृष्टि जिसके आधार पर भोग-साधनों की निःसारता को देख-समझ सकें। वे भौतिक भोगों की अचिरंतनता को पशु बल से चिरंतनता में बदलने की कोशिश में लगे रहते हैं और चाहते हैं कि शेष सारा संसार विनष्ट हो जाता तो हमारे भोग साधन निरापद एवं निष्कंटक हो जाते और तब हम उन्हें आँख मूँदकर इस प्रकार भोगते जैसा कि अब तक भोग नहीं पाये हैं; और इसी निश्चिंतता अथवा निष्कंटकता को वे विश्व शांति की संज्ञा देना चाहते हैं किंतु आध्यात्मिकता का मीठा फल 'शांति' इन विचारों एवं कार्यों में कहाँ ?

आज संसार में अमेरिका भोगवाद तथा भौतिक साधनों का सर्वोच्च निदर्शन बना हुआ है। उस देश में प्रचुर धन-संपत्ति है। अगणित उद्योग, विशालकाय कल-कारखाने तथा वैभव की असीम चकाचौंध है। आदमी का सब काम यंत्र करते है और हर द्वार पर एक मोटर कार खड़ी रहती है। होटल, रेस्तराँ, सिनेमा, पार्क, नाचघर, नाटकशाला तथा प्रमोद स्थलों की भरमार है। हर व्यक्ति की आय व्यय से कहीं अधिक है। ऐसा लगता है कि संसार के सारे साधन, सारी सामग्री और संसारी लक्ष्मी अमेरिका में ही सिमटकर आ गई है। किंतु इस संपन्नता की स्थिति में वहाँ का जन-जीवन कितना अतृप्त, कितना अशांत, कितना व्यग्र, कितना व्यस्त और कितना बोझिल है, इसका अनुमान वहाँ प्रतिवर्ष होने वाली आत्महत्याओं की रोमांचकारी संख्या से लगाया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमेरिका के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित कुछ दिन पहले की एक रिपोर्ट से पता चला है कि अमेरिका में लगभग बीस हजार व्यक्ति प्रति वर्ष आत्महत्या करते हैं। आत्महत्याओं की यह भयानक संख्या ही वहाँ के अशांत एवं असफल जन-जीवन को स्पष्ट कर देने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त न जाने कितने लोग रोग-शोक से पीड़ित होकर, अशांति एवं असफलता से दुःखी होकर, अतृप्ति तथा लालसाओं में घुल-घुल कर मरते होंगे और न जाने कितनी आत्महत्यायें ऐसी होती होंगी, जिनका या तो पता न चलता होगा अथवा उन पर पर्दा डालकर स्वाभाविक मृत्यु घोषित कर दिया जाता होगा।

इन आत्महत्याओं के अनेक कारण हो सकते हैं, किंतु विशेष कारणों में—निराशा, पारिवारिक कलह, आर्थिक कठिनाई, शराब तथा अनीश्वरवाद की गणना की जाती है।

कहना होगा कि यह सब कारण भौतिक भोगवाद की ही देन है। इतने कारोबारी तथा शक्तिसंपन्न देश में निराशा का क्या कारण ? भोगवाद का अंत निराशा में ही होता है। भोगवादी शीघ्र ही मिथ्या एवं नश्वर सुखों में अपनी सारी शक्तियाँ नष्ट कर डाला करते हैं, जिससे अकाल ही में खोखले होकर निर्जीव हो जाते हैं। ऐसी दशा में न तो उनके लिए किसी वस्तु में रस रहता है और न जीवन में अभिरुचि। स्वाभाविक है उन्हें एक ऐसी भयानक निराशा आ घेरे, जिसके बीच जी सकना मृत्यु से भी कष्टकर हो जाये। पर मुसीबत यह कि उनके आस-पास का भोगपूर्ण वातावरण उन्हें अधिकाधिक ईर्ष्यालु, चिंतित तथा उपेक्षित बनाकर जीने योग्य ही नहीं रखता और वे अनीश्वरवादी होने से, आत्मा-परमात्मा को भूले हुए कोई आधार न पाकर आत्महत्या के जघन्य पाप का ही सहारा लेते हैं।

भोगवादी प्रायः स्वार्थी तथा दूसरों के प्रति निरपेक्ष रहा करते हैं। घर में कोई बीमार है, दुःखी अथवा संतप्त है, किंतु दूसरे लोग उसकी उपेक्षा करके अपने मनोरंजनों में लगे रहते हैं। दूसरे का दुःख घटाना उनके सिद्धांत में ही नहीं होता। सुना जाता है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमेरिका तथा अन्य पाश्चात्य देशों में पति को मृत्यु शैय्या तक पर छोड़कर अपने मनोरंजन कार्यक्रमों में चली जाती है। रोगी माता-पिता को कराहता छोड़कर स्त्रियाँ संतानें दोस्तों के साथ संलग्न हो जाती हैं। कोई भी मनोरंजन के एक भी अवसर को किसी के लिए त्याग नहीं सकता। पूरा परिवार एक होते हुए भी सब एक-दूसरे से अलग रहा करते हैं। सुख में भले ही साथ दे दें, किंतु दुःख में कोई किसी को पूछता ही नहीं। साथ ही साधनों में किंचित कमी अथवा संपर्क में रंचमात्र नीरसता आते ही पति-पत्नी तथा प्रेमी-प्रेमिकायें संबंध विच्छेद कर लेते हैं। ऐसी दशा में न जाने कितने निराशा एवं मानसिक तनाव से प्रेरित होकर आत्महत्या कर लिया करते हैं।

अमेरिका जैसे संपन्न देश की जनता को भला आर्थिक कठिनाई क्या हो सकती है ? और वास्तविक कठिनाई होती भी नहीं, किंतु भोगवाद का प्रदर्शनपूर्ण जीवन, स्पर्धापूर्ण रहन-सहन और अधिकाधिक की होड़ उनकी आवश्यकताओं को पूरा ही नहीं होने देती। एक कार से दो कार की कामना उन्हें गरीब अनुभव कराती है। कमरे-कमरे में रेडियो और ऊँचे-ऊँचे होटल, नाचघर अथवा मनोरंजन की हीसका उनकी आर्थिक कठिनाई को इस हद तक बढ़ा देती है कि जिसकी पूर्ति असंभव हो जाती है और व्यक्ति अपने को असफल समझकर जीवन से निवृत्त हो जाता है। आस-पास का भोग-वैभव से भरा कृत्रिम वातावरण उसे जीने ही कब देता है।

शराब जहाँ साक्षात् विष है—वहाँ 'खाओ, पियो और मौज करो' के सिद्धांत का एक अनिवार्य अंग है। जीर्ण भोगों को नवीन बनाने, जीवन में रस लाने और असफल प्रेम की पीड़ा भुलाने के लिए भौतिकवादियों के पास शराब के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नहीं होता। निदान हर्ष-शोक, जिंदगी तथा मनोरंजन के लिए शराब को अनिवार्यता देने से शरीर एवं मस्तिष्क की स्थिति इतनी कमजोर हो जाती है कि जीवन बोझ लगने लगता है और तब एक छोटी-सी भी अप्रियता आत्महत्या के लिए प्रेरित कर देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नास्तिकता अथवा ईश्वर के प्रति अनास्था, ऐसा कौन-सा पाप है, जिसकी ओर मनुष्य को उन्मुख नहीं कर देती। जिसे आत्मा-परमात्मा में विश्वास होता है, वह उसके आधार पर संसार में सब ओर से निराधार होकर भी जिंदगी की नाव पार निकाल ले जाता है। जिन अभागों के पास यह आधार नहीं होता, उनकी जिंदगी टूटी नाव की तरह एक छोटी-सी लहर से ही अतल में बैठ जाते हैं। अनीश्वरवादी तनिक-सी बात पर इतनी बड़ी सीमा तक निराश, निरुत्साह, नीरस तथा निरुपाय हो जाता है कि उसे आत्महत्या ही एकमात्र ऐसा उपाय सूझता है कि जिसके आधार पर वह शांति पा जाने की आशा करता है।

कहना न होगा कि भौतिक भोगवाद मनुष्य-जीवन के लिए बड़ा भयानक विश्वास है। भौतिक आवश्यकताओं के साथ आध्यात्मिक आस्था ही जीवन को सुखी, शांत तथा संपन्न बना सकती हैं।

भौतिक ही नहीं, आध्यात्मिक प्रगति भी आवश्यक

जहाँ आज की तुलना में पूर्वकाल में साधनों का इतना बाहुल्य नहीं था, वहाँ तब इस संसार में इतने दुःखों, दोषों, द्वंद्वों तथा द्वेषों के साथ रोग-शोक तथा संतापों का भी बाहुल्य नहीं था। आज जैसे अभाव, असंतोष, अल्पता, असहनीयता, अहंकार, अबोधता असत्य अथवा शोषण, छल-कपट, छीना-झपटी, स्वार्थ एवं संकीर्णता का बोल-बाला पूर्वकाल में रहा है—इसके भी प्रमाण उपलब्ध नहीं होते। जीवन-साधनों की प्रचुरता के बीच भी मनुष्य का जीवन आज जितना अशांत है एवं अभावग्रस्त है, उतना पहले कभी नहीं रहा। साधनों की न्यूनता एवं अल्पता में भी लोग आज की अपेक्षा कहीं अधिक प्रसन्न, पुष्ट तथा सुखी थे।

इस विपर्यय अथवा विरोधाभास का क्या कारण हो सकता है ? इसका कारण यही है कि मनुष्य ज्यों-ज्यों भौतिकता को प्रमुखता देकर बाह्य साधनों की दासता स्वीकार करता गया, त्यों-त्यों उसका मानसिक पतन होता चला गया, वह सहज मानवीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुणों से रिक्त होकर मशीन बनता चला गया। वह प्रेम, सौहार्द्र तथा मानसिक पुनीतताओं के प्रति निरपेक्ष होकर संकीर्ण एवं स्वार्थी, लोभी तथा लोलुप बन गया है। इस प्रकार की दूषित मनःस्थिति में सुख, संतोष तथा हँसी-खुशी की संभावना हो भी किस प्रकार सकती है ? आज जहाँ एक ओर राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सामरिक तथा औद्योगिक प्रगति की ओर शक्तियों तथा साधनों को केंद्रित किया जा रहा है, वहाँ मानसिक क्षेत्र की सर्वथा उपेक्षा की जा रही है। मानसिक विकास, मनोन्नति अथवा हार्दिक पवित्रता की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आधिभौतिक तथा औद्योगिक अथवा आर्थिक योजनाओं को जितना महत्त्व दिया जा रहा है, यदि उसका कुछ अंश मनोविकास की ओर, मनोभूमि को शुद्ध तथा समतल बनाने की ओर दिया जाने लगे तो कोई कारण नहीं कि रोग-भोग और शोक-संतापों की समस्या दूर तक हल न हो जाए।

जीवन की वास्तविक प्रसन्नता तथा हँसी-खुशी के लिए किए जाने वाले बाह्य उद्योगों के साथ-साथ यदि मानसिक विकास की योजना का गठबंधन कर दिया जाए तो आज के सारे साधन मनुष्य की प्रसन्नता बढ़ाने में चार चाँद की भूमिका प्रस्तुत करने लगे। अन्यथा यह बढ़े हुए भौतिक साधन लोभ, लालच, तृष्णा और आवश्यकताओं की वृद्धि करने के अतिरिक्त मनुष्य को कोई भी पुरस्कार न दे सकेंगे। मनुष्य जिस प्रकार आज उसी प्रकार आगे भी इनकी चमक-दमक में प्रसन्नता पाने के लिए इनके पीछे उसी प्रकार पागल होकर भागता रहेगा, जिस प्रकार कस्तूरी-मृग नाभि में में ही तत्त्व होने पर भी वन के वृक्ष, लता-द्रुम तथा तृणों को सूँघता फिरता है और अपने इसी भ्रम में व्यस्त रहकर जीवन को यातना के रूप में बदल लेता है। भौतिक विकास के साथ-साथ जब तक मानसिक विकास की योजना नियोजित नहीं की जायेगी, मनुष्य के लिए वास्तविक प्रसन्नता पा सकना संभव नहीं। साधनों की एकांगी बढ़ोत्तरी मनुष्य को अधिकाधिक आलसी, प्रमादी, अकर्मण्य, ईर्ष्यालु तथा स्वार्थी बनाने के साथ-साथ अतृप्त एवं तृष्णाकुल बना देगी। साधनों के साथ-साथ मनुष्य की कामनायें तथा आवश्यकतायें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ेंगी, जिनकी पूर्ति संभव नहीं और तब ऐसी दशा में उसका क्षुब्ध एवं असंतुष्ट रहना स्वाभाविक ही है। मानसिक आरोग्य नष्ट हो जाने पर भूमि से लेकर स्वर्ग तक के साधन मनुष्य को हँसी-खुशी देने से वे कृतकृत्य न हो सकेंगे। साधनों से आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं, वृद्धि होती है। संतुष्टि हृदय का गुण है, मनोभूमि की उपज है, इसे वहीं जगाना और उगाना है, तभी मनुष्य को वह प्रसन्नता, वह हँसी-खुशी नसीब हो सकती है, जिसकी उसे खोज है और जिसे पाने के लिए उसने इतने साधन इकट्ठे कर रखे हैं।

जिसने अपने अभ्यास एव प्रयास से मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास की ओर प्रगति कर ली है, उसकी स्थिति में साधनों का होना न होना कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत नहीं कर सकते। मनो-स्वास्थ्य संपन्न व्यक्ति के लिए साधनों अथवा सहारों की अपेक्षा नहीं होती। उसकी मनोजन्य हँसी-खुशी उसके जीवन में चाँदनी की तरह प्रकाश एवं शीतलता बिछाये ही रहती है। जीवन की अनिवार्य आवश्यकतायें और रहन-सहन के कतिपय साधन ही उसको स्वर्गीय सुख देने के लिए पर्याप्त होते हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिगें, ऊँची-ऊँची कोठियाँ, मोटर, जहाज और हवाई जहाज उसके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते। वह बैंक की ओर तृष्णा भरी आँखों से नहीं देखता, उस आत्मसंतुष्ट योगी और मानसिक महारथी को न तो अभाव सताता है और न साधन ललचाते हैं। उसका अपेक्षित वैभव उसके स्वस्थ मानस में प्रसन्नता बनकर यों ही बिना किसी हेतु के जगमगाते रहते हैं। जो वस्तु, जो संपदा और जो वैभव हमारी उस मनोवृत्ति पर निर्भर है, जिसका निवास हमारे भीतर है उसके लिए आकाश-पाताल के कुलावे मिलाते रहना; साधनों और सुविधाओं के लिए और जिसको हम बिना साधनों के अनायास ही पा सकते हैं, उसके लिए रिरियाते रहना अथवा उनके लिए जीवन का दाँव हार बैठना बुद्धिमानी की बात नहीं कही जा सकती। अपनी समस्याओं का समाधान साधनों में नहीं, अपने अंदर खोजिये, अपने मानसिक स्वास्थ्य में अन्वेषण कीजिये। वह वहीं है और आप अवश्य उसे प्राप्त कर लेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक ऐसे लोग भी होते हैं, जो वास्तविक प्रसन्नता का निवास सांसारिक-साधनों में तो नहीं मानते किंतु यह अवश्य मानते हैं कि इस संसार से अलग कोई एक ऐसा स्थान अवश्य है, जहाँ पर मनुष्य जीवन की सफलता एवं प्रसन्नता के भंडार भरे पड़े हैं—और वह स्थान है 'स्वर्ग' किसी प्रकार यदि स्वर्ग को प्राप्त कर लिया जाये तो वास्तविक प्रसन्नता, सुख एवं सौख्य अनायास ही सदा-सर्वदा मिल जायेगा। तब न तो कुछ करना होगा और न संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी, नितांत निष्क्रिय रूप से यों ही बैठे-बैठे सब प्रकार के आनंदों का भोग करते रहेंगे। अपनी इस धारणा के आधार पर वे संसार से ही रूठ बैठते हैं और अंधेरे में तीर चलाने की तरह एक अनदेखे तथा अनजाने स्वर्ग का अन्वेषण किया करते हैं। मनुष्य की यह धारणा भी बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कही जा सकती। उसका सारा जीवन और सारी शक्तियाँ यों ही किसी काल्पनिक स्वर्ग की खोज में नष्ट हो जाती हैं, किंतु हाथ में कुछ भी नहीं लगता। अब अंत में उन्हें पश्चात्ताप के साथ अपनी भूल पर खेद करते हुए महाप्रयाण करना पड़ता है।

अच्छा हो यदि मनुष्य अपने मस्तिष्क से इस धारणा को निर्वासित कर दे कि संसार के बाहर स्वर्ग नाम का कोई ऐसा स्थान, लोक अथवा क्षेत्र है, जिसको प्राप्त कर लेने पर उसकी स्थायी प्रसन्नता की समस्या सदा-सर्वदा के लिए हल हो जायेगी। स्वर्ग इस संसार से बाहर अन्यत्र कहीं नहीं है, वह यहीं इसी संसार में आपके मनोमंदिर में विराजमान् हैं। उसे कभी भी अपने वांछित प्रयत्नों से बाहर प्रतिबिंबित किया जा सकता है। जहाँ प्रेम, पवित्रता, सदाशयता, सहयोग, त्याग एवं उदारता का वातावरण मौजूद है, वहाँ स्वर्ग नहीं तो और क्या है ? जिसका हृदय वासनाओं, तृष्णाओं, कामनाओं तथा आवेग-उद्वेगों से मुक्त है, वह स्वर्ग में ही तो निवास करता है। स्वर्ग हमारे अंदर-बाहर सर्वत्र बिखरा पड़ा है। किंतु यदि हमारे हृदय में असंतोष, ईर्ष्या-द्वेष, पाप एवं पश्चात्ताप की चितायें जल रही हैं, वासनाओं तथा वितृष्णाओं का धुआँधार हो रहा है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आँखों पर भौतिकता की चमक चढ़ी हुई है, साधनों का लोभ भरा हुआ है, तो हम उस सार्वत्रिक स्वर्ग को कैसे तो अनुभव कर सकते हैं और किस प्रकार देख सकते हैं ? अपने मानसिक मलों को दूर करिये, दृष्टि पथ से लोभ एवं स्वार्थ के अपराधों को दूर करिये, अपने मस्तिष्क में दैवी भावनाओं की कृषि कीजिये, अपने चारित्रिक विकास से देवों की स्थिति प्राप्त करिये और तब देखिये कि स्वर्ग आप में और स्वर्ग में आप ही निवास कर रहे हैं। यहीं इस संसार में आपकी समस्या का समाधान आपको हस्तगत हो गया है। न कहीं दूर जाने की आवश्यकता पड़ेगी और न संसार से रूठकर विमुख होकर अपने को लजाने-सताने की आवश्यकता। निश्चय मानिये कि आप स्वर्ग में ही निवास कर रहे हैं, किंतु आपके मनोविकारों, वासनाओं, अनियंत्रित कामनाओं, स्वार्थों और संकीर्णता ने उसके सुख-सौंदर्य को उसी प्रकार निष्प्रभाव कर दिया है, जिस प्रकार किसी भी सर्वसुंदर कमरे को जूते की लगी हुई थोड़ी-सी गंदगी अपावन एवं नारकीय बना देती है। शुद्धि एवं सात्त्विकता का विकास कीजिये और यथा स्थान एवं स्थिति में स्वर्गीय सुख-शांति का प्रसाद पाइए।

यह भूल जाइये कि वास्तविक सुख-शांति का निवास भौतिक साधनों की प्रचुरता में है, किंतु यह याद रखिये कि उसका निवास मानसिक उत्कर्ष में ही है। जिसका साधारण-सा अर्थ है कि अपनी मनोभूमि को अतिशयताओं के घास-फूस व कुश-कंटक से आवृत न होने दीजिए। जो कुछ आपको प्राप्त है, उसमें संतुष्ट रहिये और अधिक पाने की चेष्टा करते रहिए, अति कामनाओं अथवा अतिशयता के अभिशाप से अपनी रक्षा कीजिये, जीवन के प्रति रुचि, संतोष और आस्था की भावना रखिये और अभाव के भाव को अपने निकट मत फटकने दीजिए। सभी के साथ प्रेम एवं सहानुभूति का व्यवहार कीजिये और श्रद्धापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवनयापन करिये और देखिए कि आपकी प्रसन्नता आपके पास विराजमान है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म की उपेक्षा नहीं की जा सकती

सुप्रसिद्ध अमेरिकन उद्योगपति एडिंग्टन ने अपना संपूर्ण जीवन धन-संपत्ति की विशाल मात्रा अर्जित करने, भोग, ऐश्वर्य और इंद्रिय सुखों की तृप्ति करने में बिताया। वृद्धावस्था में भी उनके पास धन-संपत्ति के अंबार लगे थे। पर वह शक्तियाँ जो मनुष्य को आत्म-संतोष प्रदान करती हैं, एडिंग्टन के पास कब की विदा हो चुकी थीं ? मृत्यु की घड़ियाँ समीप आई देखकर उनका ध्यान भौतिकता से हटकर दार्शनिक सत्यों और आध्यात्मिक तथ्यों की ओर आया। वह अनुभव करने लगे कि पार्थिव जीवन की हलचलें और भौतिक सुखोपभोग प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य नहीं। लोकोत्तर जीवन तत्त्वों की शोध एक अनिवार्य कर्तव्य था। उसे भुला दिया गया। पश्चात्ताप की अग्नि में जलने लगे एडिंग्टन। उन्होंने कहा—भौतिकता में क्षणिक सुख है और निरंतर विकसित होने का विनाशकारी गुण। निष्कर्ष तो इतने खराब होते हैं, जिनके बारे में कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती। विक्षोभ और दुर्वासनाओं की भट्टी में जलता हुआ प्राणी मृत्यु के आने पर जल-विहीन मछली की तरह तड़पता है; पर तब सब परिस्थितियाँ हाथ से निकल चुकी होती हैं, केवल पश्चात्ताप ही शेष रहता है।"

जीवन के इस महत्त्वपूर्ण सारांश से वर्तमान और आगत पीढ़ी को अवगत कराने के लिए एडिंग्टन ने एक महान् साहस किया। उन्होंने एक संस्था बनाई और अपनी सारी संपत्ति उसे इसलिए दान कर दी कि यह संस्था मानव जीवन के आध्यात्मिक सत्य और तथ्यों की जानकारी अर्जित करे और उन निष्कर्षों से सर्वसाधारण को परिचित कराये, जिससे आगे मरने वालों को इस तरह पश्चात्ताप की आग में झुलसते हुए न विदा होना पड़े। यह संस्था अमेरिका में खोली गई। उसकी शाखा ३२ ईस्ट ५७ वीं गली न्यूयार्क (अमेरिका) में थी। वहाँ प्रति वर्ष धर्म और विज्ञान के संबंध पर उत्कृष्ट कोटि के भाषण कराये जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस शृंखला से 'विज्ञान दर्शन और धर्म (साइंस फिलासॅफी एंड रिलीजन) शीर्षक से रसेल ब्रेन के निबंध का सारांश आध्यात्मिक चेतना की पुष्टि में उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जाता है। रसेल ब्रेन का कथन है—"विज्ञान हमें पदार्थ की भौतिक जानकारी दे सकता है। किंतु पदार्थ क्यों बना ? कैसे बना ? इसका कोई उत्तर उसके पास नहीं है। जिन सत्य निर्णयों को विज्ञान नहीं दे सकता, उन्हें केवल दर्शन और धर्म के द्वारा ही खोजा जा सकता है। उसी का नाम अध्यात्म है।"

अज्ञात वस्तु की खोज मजेदार हो सकती है, पर जब तक उस वस्तु के संपूर्ण कारण को न जान लिया जाये, उस वस्तु को जीवन का अंग बनाना घातक ही होगा। मान लीजिये—एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे यह पता नहीं कि अल्कोहल के गुण क्या हैं और हाइड्रोक्लोरिक एसिड के क्या गुण हैं ? सल्फर, अमोनिया, क्लोरिन, फास्फेट की कितनी-कितनी मात्रा में मिलकर कौन-सी चीज बनेगी ? पर वह जो भरी शीशी मिलती जाती हैं, उनसे दवायें तैयार करता जाता है तो क्या वे दवाएँ किसी मरीज को लाभ पहुँचा सकती हैं ? लाभ पहुँचाना तो दूर वह मरीज की जान ही ले सकती हैं। नियंत्रण रहित विज्ञान ऐसी ही दुकान है, जहाँ सीमित ज्ञान के आधार पर औषधियाँ बनती हैं, उनसे एक रोग ठीक होता है, पर वे दो नये रोग और पैदा कर देती हैं।

आकाश के ग्रह-नक्षत्र चक्कर लगाते हैं। पता है, कौन ग्रह पृथ्वी से कितनी दूर है ? किस ग्रह को सूर्य की परिक्रमा करने में कितनी यात्रा करनी पड़ती है ? उनकी आंतरिक रचना के बारे में भी जानकारियाँ मिल रही हैं। पर यह ग्रह-नक्षत्र चक्कर क्यों काट रहे हैं ? यह विज्ञान नहीं बता सकता, उसके लिए हमें आध्यात्मिक चेतना की ही शरण लेनी पड़ती है। अध्यात्म में ही वह शक्ति है, जो मनुष्य के आंतरिक रहस्यों का उद्घाटन कर सकती है। विज्ञान उस सीमा तक पहुँचने में समर्थ नहीं है।

अध्यात्म एक स्वयं सिद्ध शक्ति है, उसका वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण (एनालिसिस) नहीं किया जा सकता। मस्तिष्क के गुणों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के बारे में विज्ञान चुप है। हमें नई-नई बातों की उत्सुकता क्यों रहती है ? हम आजीवन कर्तव्यों से क्यों बँधे रहते हैं ? निर्दय कसाई भी अपने बच्चों से प्रेम और ममत्व रखते हैं, हिंसक डकैत भी स्वयं कष्ट सहते पर अपनी धर्मपत्नी, अपने बच्चों के भरण-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करते हैं। चोर और उठाईगीरों को भी अपने साथियों और मित्रों के साथ सहयोग करना पड़ता है। सहानुभूति, सेवा और सच्चाई यह आत्मा के स्वयं सिद्ध गुण हैं। मानवीय जीवन में उनकी विद्यमानता के बारे में कोई संदेह नहीं है। यह अलग बात है कि किसी में इन गुणों की मात्रा कम है। किसी में कुछ अधिक होती है।

सौंदर्य की अदम्य पिपासा, कलात्मक और नैतिक चेतना को भौतिक नियमों के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। इन्हें जिस शक्ति के द्वारा व्यक्त और अनुभव किया जा सकता है, वह अध्यात्म है। हमारा ६६ प्रतिशत जीवन इन्हीं से घिरा हुआ रहता है। १ प्रतिशत आवश्यकतायें भौतिक हैं, किंतु खेद है कि १ प्रतिशत के लिए जीवन के शत-प्रतिशत अंश को न्योछावर कर दिया जाता है। ६६ प्रतिशत भाग अंततोगत्वा उपेक्षित ही बना रहता है, इससे बढ़कर मनुष्य का और क्या दुर्भाग्य हो सकता है ? अशांति, असंतोष उसी के परिणाम हैं।

"विश्वास की इच्छा" (दि विल टु बिलीव) नामक पुस्तक के लेखक वैज्ञानिक विलियम जेम्स और हेंडरसन ने जब महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्ष सिद्धांत (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) को पढ़ा—समय, ब्रह्मांड, गति और सृष्टि के मूल तत्त्वों (टाइम, स्पेस, मोशन एंड कॉजेशन) के साथ व्यक्तिगत अहंता (सेल्फ) का तुलनात्मक अध्ययन किया, तो उन्हें भी यही कहना पड़ा कि भौतिक जगत् संभवतः संपूर्ण नहीं है। हमारा संपूर्ण भौतिक जीवन आध्यात्मिक वातावरण में पल रहा है। उस परम पालक आध्यात्मिक शक्ति को ही लक्ष्य कह सकते हैं। ऐसी शक्ति को अमान्य नहीं किया जा सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने आगे बताया कि वह तत्त्व जो विश्व के यथार्थ का निर्देश करते हैं, भौतिक शास्त्र के द्वारा विश्लेषण (एनालाइज) नहीं किये जा सकते। उसके लिए एक अलग आध्यात्मिक नक्शा (स्केच) तैयार करना पड़ेगा और सचेतन इकाइयों द्वारा ही उनका अध्ययन करना पड़ेगा। यह सचेतन इकाइयाँ हमारे विचार, श्रद्धा, अनुभूतियाँ, तर्क और भावनायें हैं। उन्हीं के द्वारा अध्यात्म को स्पष्ट किया जा सकता है। उन्हीं के विकास द्वारा मनुष्य जीवन में अभीष्ट सुख-शांति की प्राप्ति की जा सकती है। भावनाओं की तृप्ति भावनायें ही कर सकती हैं, पदार्थ नहीं। इसलिए भाव-विज्ञान (अध्यात्म) को हम छोड़ नहीं सकते।

अध्यात्म की अनंत शक्ति-सामर्थ्य

अध्यात्म विज्ञान और आध्यात्मिक साधनायें इतनी सामर्थ्यवान्, प्रभावशाली हैं कि उनके द्वारा भौतिक विज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण सफलतायें उपलब्ध की जा सकती हैं। हमारे देश में अनेकों ऋषियों, महर्षियों, संत-महात्माओं, योगी, यतियों का जीवन इसका प्रमाण है। बिना साधनों के उन्होंने आज से हजारों वर्ष पूर्व अंतरिक्ष, पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा आदि के संबंध में अनेकों महत्त्वपूर्ण तथ्य खोज निकाले थे। अनेकों विद्याओं, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान में उनकी गति असाधारण थी। बड़े-बड़े राजमुकुट उनके पैरों में झुकते थे। लेकिन अपनी अध्यात्म साधना के समक्ष वे सब कुछ महत्त्वहीन समझते थे और निरंतर अपने ध्येय में संलग्न रहते थे।

आज उन्हीं अध्यात्मवेत्ताओं के देश में इस महान् विज्ञान की जितनी दुर्गति हुई है, उस पर किसी विचारशील व्यक्ति का दुःखी होना स्वाभाविक ही है। अध्यात्म विज्ञान के प्रति आजकल हमारे मूल्यांकन की कसौटी, परिचय प्राप्ति के ढंग इतने बदल गये हैं कि हम अध्यात्म विद्या से बहुत दूर भटक गये हैं। इसके वास्तविक मर्म को न जानने के कारण अध्यात्म के नाम पर बहुत से लोग जीवन के सहज पथ को छोड़कर अप्राकृतिक, असामाजिक, उत्तरदायित्वहीन जीवन बिताने लग जाते हैं। गलत, अस्वाभाविक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन क्रम के कारण कई बार शारीरिक अथवा मानसिक रोगों से पीड़ित हो जाते हैं।

आज आध्यात्मिक जीवन बिताने का अर्थ जन-साधारण में लोक जीवन को उपेक्षित मानने से होता है। अक्सर लोगों में यह धारणा भी कम नहीं फैली है कि—'यह संसार क्षण-भंगुर' है, 'माया है ?' इसका त्याग करने पर ही मोक्ष-कल्याण की मंजिल प्राप्त हो सकती है और इसी धारणा से प्रेरित होकर बहुत से लोग अपना कर्तव्य, अपनी जिम्मेदारियाँ छोड़ बैठते हैं। अपना घर-बार छोड़ बैठते हैं। लेकिन यदि घर-गृहस्थी को छोड़ना, अपने कर्तव्यों से मुँह मोड़ना ही आध्यात्मिक पथ पर बढ़ने के प्रथम चिह्न हैं, तो सारे ऋषियों को हमें आध्यात्मिक इतिहास से हटाना पड़ेगा, क्योंकि प्रायः सभी ऋषि-महर्षि गृहस्थ थे। जन-साधारण का स्वाभाविक जीवन बिताते थे। गुरुकुल पाठशालायें चलाते थे। जनता के धर्म-शिक्षण का कार्य पूरी तरह निभाते थे।

ऋषियों ने संन्यास आश्रम की व्यवस्था करके घर छोड़ने की बात भी कही थी, लेकिन जीवन के शेष चौथे भाग में, वृद्धावस्था में वह भी मुक्ति के लिए नहीं, अपितु जीवन भर अर्जित ज्ञान से समाज को लाभान्वित करने, परमार्थ का जीवन बिताने के लिए। सांसारिक दृष्टि से भी धर्म-अर्थ-काम के बाद फिर मोक्ष का नंबर आता है। खेद होता है जब लोग विभिन्न परिस्थितियों में जीवन के निखरे बिना, संस्कारित हुए बिना—अपने स्वाभाविक जीवन पथ को छोड़कर संसार को छोड़ते हैं, अपने कर्तव्य-उत्तरदायित्वों से मुँह मोड़ते हैं। चूँकि उनकी वृत्तियाँ परिमार्जित तो होती नहीं, इसलिए आगे चलकर अनेकों द्विविधाओं, द्वंद्वों में पड़कर वे अशांति और असंतोष का जीवन बिताते हैं। अपने आपको कोसने लगते हैं। संसार में क्षण-भंगुरता के पाठ को पढ़कर न जाने कितने होनहार व्यक्तियों का जीवन नष्ट हो जाता है। अपने लिए या समाज के लिए वे जो कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करते वह तो होता ही नहीं, उल्टे ऐसे लोग समाज पर भार-स्वरूप बनकर रहने लगते हैं, क्योंकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरीर रहते कोई कितना ही त्यागी बने, उसे भोजन-वस्त्र आदि की आवश्यकता तो होती है।

वस्तुतः 'मुक्ति' जीवन के सहज विश्वास क्रम की वह अवस्था है, जहाँ मानवीय चेतना सर्वव्यापी विश्व-चेतना से युक्त होकर स्पंदित होने लगती है और उसमें से परमार्थ कार्यों का मधुर संगीत गूँजने लगता है। तब व्यक्ति अपने सुख, अपने लाभ, अपनी मुक्ति को भूलकर सबके कल्याण के लिए लग जाता है। इस ऊँची मंजिल तक सांसारिक परिस्थितियों में साधनामय जीवन बिताने से ही पहुँचा जा सकता है। जिस तरह बिना सीढ़ियों के छत पर नहीं पहुँचा जा सकता, उसी तरह संसार में अपने कर्तव्य, उत्तरदायित्वों को पूर्ण किये बिना जीवन मुक्ति की मंजिल तक नहीं पहुँचा जा सकता। ऋषियों ने जीवन के सहज पथ का अनुगमन करके पारिवारिक जीवन में रहकर ही अपूर्व आध्यात्मिक उत्कर्ष प्राप्त किया था—ब्रह्म का साक्षात्कार भी।

जब तक शरीर है संसार में रहना है। भूख, प्यास महसूस होती है तब तक इस संसार को नाशवान्, क्षण-भंगुर कहकर लोकजीवन की उपेक्षा करना बहुत बड़ी भूल है; अपने आपको धोखा देना है। ऐसी स्थिति में मुक्ति असंभव है। अपने वैयक्तिक, सामाजिक, सांसारिक उत्तरदायित्वों को त्यागकर जीवन मुक्ति की चाह रखने वाले व्यक्ति को इस संबंध में निराश ही रहना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं। अध्यात्म शास्त्र के प्रणेता ऋषियों ने तो मनुष्य को उत्तरोत्तर कर्तव्ययुक्त जीवन बिताने का निर्देश दिया था। चार आश्रमों में प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम में विद्याध्ययन, गुरु सेवा, आश्रम के कार्य, फिर इससे बढ़कर गृहस्थ में परिवार के भरण-पोषण का भार, समाज के कर्तव्यों का उत्तरदायित्व सौंपा था। क्रमशः वानप्रस्थ और संन्यास लोक-शिक्षण, जन-सेवा के लिए निश्चित थे। इस व्यवस्था के अनुसार, एक क्षण भी मनुष्य उत्तरदायित्वहीन जीवन नहीं बिता सकता। कैसा था उनका अध्यात्म ? जनक राजा होकर भी जीवन मुक्त थे। हरिश्चंद्र सत्यवादी—राम अवतारी। कृष्ण भोगी होकर भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योगी थे। क्रोधी स्वभाव होने पर भी दुर्वासा महर्षि थे, श्रीकृष्ण के गुरु।

जो लोक-जीवन को पुष्ट न कर सके, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास साध न सके, जो जगपथ पर चलते हुए मनुष्य को शक्ति-प्रेरणा न दे सके, जो मनुष्य को व्यावहारिक जीवन का राजमार्ग न दिखा सके, वह 'अध्यात्म विज्ञान' हो ही नहीं सकता।

अध्यात्मशास्त्र में तो अपने लाभ की बात, अपने सुख की इच्छा का बिल्कुल ही स्थान नहीं है, चाहे वह लौकिक हो या पारलौकिक। वहाँ तो अपने से सबमें प्रयाण होता है। संकीर्ण से महान् की ओर, सीमित से असीम की ओर गति होती है। ऋषि कहता है—"मुझे राज्य की, स्वर्ग की, मोक्ष की कामना नहीं है। मुझे यदि कोई चाह है तो वह दुःखी-आर्त लोगों की सेवा करने, उनके दुःख-दर्द को दूर करने की।" कैसा महान् था हमारा अध्यात्म शास्त्र—जो मोक्ष, स्वर्ग, राज्य की संपदाओं को भी ठुकरा देता था। एक हम हैं कि संतान-धन-पद-यश-स्वर्ग की प्राप्ति के लिए अध्यात्मवादी बनने का प्रपंच रचते हैं, अपनी आत्मा को धोखा देते हैं। वस्तुतः जो अंतर-बाह्य, लौकिक-पारलौकिक सभी क्षेत्रों में हमें व्यक्तिवाद से हटाकर समष्टि में प्रतिष्ठित करे, व्यक्तिगत चेतना से उठाकर विश्व-चेतना में गति प्रदान करे वहीं से अध्यात्म की साधना प्रारंभ होती है।

अध्यात्म के नाम पर हमारे यहाँ गलत आचरण, विचित्र रहन-सहन, अजीब आदतें, कौतूहलपूर्ण हरकतों को भी बड़ा महत्त्व मिल गया है और इनसे समाज को गलत प्रेरणा भी मिलती है। अक्सर देखा जाता है कि जो अन्न न खाये पर फल, दूध खूब उड़ाये, लेटे नहीं खड़ा ही खड़ा रहे, भस्म रमाये या तिलक छापे, बढ़िया रेशमी वस्त्रों से श्रृंगार करे, मौन रखे—बोले नहीं, विक्षिप्त-सा आचरण करे, तात्पर्य यह है कि अपने रहन-सहन, आहार-विहार में कोई विचित्रता रखे, उसे बड़ा आध्यात्मिक व्यक्ति माना जाता है। ऐसे कई व्यक्ति तो बेहूदी गालियाँ भी बकते हैं और फिर भी लोग उतना ही उनकी कृपा के लिये उनसे चिपकते हैं। कैसी विडंबना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है ? अप्राकृतिक-जीवन, विकृत आचरण, फूहड़ रहन-सहन भी हमारे यहाँ आध्यात्मिक गुण समझे जाते हैं। विचार कीजिए, कभी ऐसा अध्यात्म जो जीवन को अस्वाभाविक बनाये मनुष्य का कल्याण कर सकता है ? कदापि नहीं।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अध्यात्म विज्ञान के महत्त्व को समझें, उसके बारे में पर्याप्त जानकारी करें और इसके नाम पर जो गलत बातें प्रचलित हो रही हैं, उनसे अपना बचाव करें। अध्यात्म को अपने जीवन विश्वास का आधार बनायें।

अध्यात्म-समस्त समस्याओं का एकमात्र हल

तन, मन और धन लौकिक जीवन की तीन विभूतियाँ मानी गई हैं। संसार के सुखों का आधार भी इन्हीं को कहा गया है। शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे और अभाव का आक्रमण न हो तो फिर मनुष्य का सुखी रहना असंभाव्य नहीं है। यद्यपि इनके संयोग से मिलने वाला सुख चिरस्थायी नहीं होता, तथापि जीवन में उसका भी एक महत्त्व और स्थान है। उसे हेय और नगण्य नहीं कहा जा सकता है।

लौकिक सुख हेय और नगण्य तब ही माना जाता है, जब इसकी अधिक लिप्सा मनुष्य के आत्मिक सुख में बाधा डालती है। वैसे सुखपूर्वक जीवन-यापन करना बुरा नहीं। संसार में जीव आया ही सुख की खोज करने और उसको प्राप्त करने है किंतु वह सुख मात्र सांसारिक नहीं है। वह शाश्वत सुख है, जो आत्मा-परमात्मा के साक्षात्कार से प्राप्त होता है। मनुष्य को लौकिक सुखों तक ही सीमित न रह जाना चाहिए। उसे चाहिये कि वह उनसे ऊपर उठ-कर अलौकिक और आत्मिक सुख पाने का प्रयत्न भी करे। हाँ, लौकिक सुख-सुविधा को वह उस उद्देश्य के लिए सोपान बना सकता है।

जो मनुष्य लौकिक सुख से सर्वथा वंचित है, हर समय दुःखों, क्लेशों और शोक-संतापों से घिरा रहता है, वह आत्मिक प्रगति कदाचित् ही कर पाता है। कातर और दुःखी व्यक्ति साधारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सांसारिक प्रगति तक नहीं कर पाता, तब आत्मिक उन्नति तो और भी कठिन है। आत्मिक प्रगति के लिए जिस अखंड साधना की आवश्यकता है, वह दुःखी अवस्था में नहीं की जा सकती। सांसारिक समस्याओं के साथ ही आत्मिक साधना संभव है। समस्याओं के रहते और उनकी हठपूर्वक उपेक्षा करने से जो परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, वे आत्मिक साधना में अवश्य अवरोध बनकर खड़ी होंगी। सांसारिक समस्याओं की भी अपनी एक सत्ता होती है, जिसकी अवज्ञा कर सकना असंभव नहीं तो सरल भी नहीं हैं।

संसार भर में समस्याओं की कमी नहीं। किसी के सम्मुख शारीरिक समस्या होती है तो किसी के सम्मुख मानसिक और किसी को आर्थिक समस्या घेरे रहती है। किसी न किसी प्रकार की समस्या प्रायः सबके पीछे लगी रहती है। समस्याओं से सर्वथा रहित कदाचित् ही कोई व्यक्ति रहता है। कोई यदि शरीर से दुःखी है, निर्बल, बुढ़ापा घेरे है तो कोई मन से उद्विग्न है। कहीं सम्मान में धक्का लग गया है। संतान नालायक निकल गई और कोई विरोध उत्पन्न हो गया है। बहुत से जीविका, व्यय और व्यापार, व्यवसाय में चढ़ाव-उतार के कारण आर्थिक संकट में फँसे हैं। इस प्रकार शारीरिक, मानसिक और आर्थिक समस्याओं में से कोई-न-कोई समस्या सबके सामने खड़ी ही रहती है। इन समस्याओं का समाधान किये बिना उन्नति और प्रगति का मार्ग पा लेना बहुत कठिन है।

लोग अपनी समस्याओं को यथासाध्य सुलझाने का भी यत्न करते हैं। अर्थ संकट आ जाता है, तो सब कुछ भूलकर उसके सुलझाने में लग जाते हैं। शारीरिक समस्या खड़ी हो जाती है तो उसका उपाय करने लगते हैं और जब कोई मानसिक उलझन में पड़ जाते हैं तो उसका उपचार सोचते हैं। पर होता यह है कि एक समस्या सुलझाने में लगे रहने से संसार की दूसरी समस्याओं को अवसर मिल जाता है और वे अपना प्रभाव बढ़ा लेती हैं। जैसे शारीरिक समस्या में संलग्न होने पर आर्थिक संकट उठ खड़ा होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और अर्थ संकट की ओर ध्यान देने पर मानसिक उद्विग्नता आ घेरती है।

उस प्रकार एक के बाद एक, कोई-न-कोई समस्या आती रहती है और मनुष्य का जीवन उनको सुलझाने में ही तबाह हो जाता है, वास्तविक लक्ष्य के लिए कुछ नहीं कर पाता। यदि कोई ऐसा उपाय निकल आये, जिसको प्रयोग में लाने पर सारी समस्याएँ एक साथ शमन होती रहें तभी कुछ काम बन सकता है। नहीं तो जीवन इसी प्रकार के ऊहापोह में व्यतीत हो सकता है। सारी समस्याओं का एक सामान्य हल है—अध्यात्मवाद। यदि शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में अध्यात्मवाद का समावेश कर लिया जाये और अपना दृष्टिकोण सर्वथा आध्यात्मिक बना लिया जाये, तो सारी समस्याओं का समाधान साथ-साथ होता चले और आत्मिक प्रगति के लिए अवसर एवं अवकाश भी मिलता रहे। विषयों में सर्वथा भौतिक दृष्टिकोण रखने से ही सारी समस्याओं का सूत्रपात होता है। दृष्टिकोण में वांछित परिवर्तन लाते ही सब काम बनने लगेंगे।

अध्यात्मवाद का व्यावहारिक स्वरूप है—संतुलन, व्यवस्था एवं औचित्य। शारीरिक समस्या तब पैदा होती है, जब शरीर को भोग-साधन समझकर बरता जाता है। आहार-विहार और रहन-सहन को विलासपरक बना लिया जाता है। इसी अनौचित्य एवं अनियमितता से रोग उत्पन्न होने लगते हैं और स्वास्थ्य समाप्त हो जाता है। सर्दी, जुकाम, सिर दर्द, रक्तचाप, हृदय शूल, अजीर्ण और यहाँ तक कि कभी-कभी असाध्य राज-रोगों का शिकार बनना पड़ता है। ऐसी दशा में एक यही शारीरिक समस्या ही मनुष्य की सारी जिंदगी अपने अर्थ लगा लेती है, तब वह कैसे परमात्मा का सामीप्य प्राप्त करने के लिए साधना कर सकता है और कब आत्मा का चिंतन कर सकता है ? रोगी रहने वाला मनुष्य किसी लौकिक और पारलौकिक प्रगति के लिए एक प्रकार से असमर्थ ही बन जाता है।

यह शारीरिक समस्या बड़ी आसानी से हल हो सकती है, यदि इसके विषय में दृष्टिकोण को आध्यात्मिक बना लिया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पवित्रता अध्यात्मवाद का पहला लक्षण है। शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर उसे सर्वथा पवित्र और स्वच्छ रखा जाए, आत्म-संयम और नियमितता द्वारा शरीर-धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन करते रहा जाए तो शारीरिक संकट की संभावना ही न रहे। वह सदा स्वस्थ और समर्थ बना रहे। अपने अनियम और असंयम द्वारा भगवान् के इस पवित्र मंदिर को ध्वंस करने का अपराध भयानक पाप का कारण बनता है। शरीर भगवान् का मंदिर है।

उपरोक्त बात न तो कभी भूलनी चाहिए और न तत्विरोधी आचरण ही करना चाहिये। शरीर में आत्मा का निवास रहता है और आत्मा, परमात्मा का ही अंश होता है, इसलिए शरीर भगवान् का मंदिर ही है। जो व्यक्ति भगवान् के इस पवित्र मंदिर का समुचित संरक्षण एवं सेवा करता रहता है, उसके सामने शारीरिक समस्याएँ खड़ी नहीं होती। यदि संयोगवश खड़ी भी हो जाती है तो उनका शीघ्र ही समाधान हो जाता है। शरीर के विषय में आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने का सुफल आरोग्य होता है। जिसने नियमन एवं आत्म-संयम द्वारा आरोग्य की प्राप्ति कर ली, उसने मानो आत्मिक लक्ष्य की और एक मंजिल पार कर ली।

स्वास्थ्य और आरोग्य का संबंध पौष्टिक पदार्थों से जोड़ना भूल है। अधिक या अधिक पुष्टकर भोजन करने से न तो स्वास्थ्य बनता है और न आरोग्य की उपलब्धि होती है। इसका आधार है—आत्म-संयम एवं नियमितता। इसके प्रमाण में हमारे सामने ऋषियों-मुनियों का अनुकरणीय उदाहरण मौजूद है। खाद्य के नाम पर वे कतिपय फल और कंद-मूल आदि का ही प्रयोग किया करते थे। तथापि सदा स्वस्थ और निरोग-दीर्घजीवी बने रहते थे। उनके शरीर बड़े ही सुडौल, सुंदर और सामर्थ्यवान् होते थे। इसी क्षमता के बल पर ही तो वे बड़ी-बड़ी तपस्याएँ और साधनाएँ कर सकने में सफल रहा करते थे। यदि हम शरीर के विषय में आत्म-संयम, नियमितता और युक्ताहार, विहार का आध्यात्मिक दृष्टिकोण व्यवहार में लाते रहें तो शारीरिक समस्याओं का एक साथ समाधान हो जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब मन के क्षेत्र में आइये। मनुष्य का मन शरीर से भी अधिक शक्तिशाली साधन है। इसके निर्द्वंद्व रहने पर मनुष्य आश्चर्यजनक उन्नति कर सकता है, किंतु खेद है कि आज लोगों की मनोभूमियाँ बुरी तरह विकारग्रस्त बनी हुई हैं। चिंता, भय, निराशा, क्षोभ, लोभ और आवेगों का भूकंप उसे अस्त-व्यस्त बनाये रहता है। स्थिरता, प्रसन्नता और सदाशयता का कोई लक्षण दृष्टिगोचर नहीं होता। ईर्ष्या, द्वेष और रोष-क्रोध की नष्टकारी चिताएँ जलती और जलाती ही रहती हैं। ऐसे कितने लोग मिलेंगे, जिनकी मनोभूमि इन प्रकोपों से सुरक्षित हो और जिसमें आत्म-गौरव, धर्मपरायणता और कर्तव्यपालन की सद्भावनायें फलती-फूलती हों ? अन्यथा लोग मानसिक विकारों, आवेगों और असद्विचारों से अर्धविक्षिप्त से बने घूम रहे हैं। इस प्रचंड मानसिक पवित्रता, उदार भावनाओं और मनःशांति का महत्त्व समझें और निःस्वार्थ, निर्लोभ एवं निर्विकारिता द्वारा उसको सुरक्षित रखने का प्रयत्न करते चलें तो मानसिक विकास के क्षेत्र में बहुत दूर तक आगे बढ़ सकते हैं।

क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ? किस प्रकार करना चाहिए और कौन-सी गतिविधि नहीं अपनानी चाहिए ? इस बात का उचित न्याय सामने रखकर चलने वाले आध्यात्मिक लोग बहुधा मानसिक समस्याओं से सुरक्षित बने रहते हैं। अपनी उन्नति करते चलें और दूसरों की उन्नति में सहायक होते चलें, अपनी स्थिति और दूसरों की स्थिति के बीच अंतर से न तो ईर्ष्यालु बने और न हीनभावी। इसी प्रकार असफलता में निराशा को और सफलता में अभिमान को पास न आने दें। मनःशांति का महत्त्व समझते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों और विरोधों में भी उद्विग्न और क्रुद्ध न हों। सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, दया और प्रेम का प्रश्रय लेते चलें। मनःक्षेत्र में इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण का समावेश कर लेने पर मानसिक समस्याओं के उत्पन्न होने का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्थिक क्षेत्र में तो आध्यात्मिक दृष्टिकोण का महत्त्व और भी अधिक है। इस क्षेत्र में ही लोग अधिक अनात्मिक और अनियमित हो जाया करते हैं। आर्थिक क्षेत्र के आध्यात्मिक सिद्धांत हैं—मितव्ययिता, संतोष, निरालस्य और ईमानदारी। मितव्ययी व्यक्ति को आर्थिक संकट कभी नहीं सताता। ऐसा व्यक्ति जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के सिवाय कृत्रिमता को कभी भी प्रश्रय नहीं देता। विलास, भोग और अनावश्यक सुख-सुविधा के साधनों से उसका कोई लगाव नहीं होता और न वह प्रदर्शन की ओछी वृत्ति को ही अपनाया करता है। संतोषी आर्थिक क्षेत्र में ईर्ष्या-द्वेष, प्रतिस्पर्धा, लोभ और स्वार्थपरता के पापों से बचा रहता है। आर्थिक क्षेत्र में आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति निरालस्य होकर भरपूर परिश्रम करता है। ईमानदारी के पारिश्रमिक द्वारा मितव्ययिता और संतोषपूर्वक जीवनयापन करता हुआ सदा प्रसन्न रहता है। न तो उसे स्वार्थ की अधिकता सताती है, न ईर्ष्या जलाती है और न ऐसे व्यक्ति के विरोध में कोई अन्य लोग ही खड़े होते हैं।

इस प्रकार तन, मन और धन के शक्तिशाली साधनों को उपयोगी बनाकर व्यवहार जगत् और आर्थिक जगत् में समान रूप से आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखकर चला जाए तो मनुष्य की सारी समस्याओं का एक साथ ही समाधान हो जाए और तब वह लौकिक और आत्मिक दोनों जीवनों में समान रूप से प्रगति कर सकता है।

आध्यात्मिक लाभ ही सर्वोपरि लाभ है

यह विचार निश्चय ही भ्रमपूर्ण है कि धन-वैभव, मान-सम्मान तथा पद-प्रतिष्ठा पा लेने पर जीवन सफल एवं सार्थक हो जाता है। यह उन उपलब्धियों की तुलना में तुच्छ एवं नगण्य है, जिन्हें आगे बढ़कर और वर्तमान से ऊपर उठकर अवश्य पाया जा सकता है।

विद्या-बुद्धि, पुत्र-कलत्र, ऐश्वर्य एवं वैभव आदि समस्त सांसारिक उपलब्धियाँ अस्थिर अथवा क्षणभंगुर हैं। हजारों लोगों को यह नित्य-प्रति मिलती और मिटती रहती है। इनकी प्राप्ति होने से सुख हो जाता है और चले जाने से दुःख होता है। संसार की यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारी अस्थिर उपलब्धियाँ मनुष्य को सुख-दुःख के दोलन में झुलाती रहती हैं, जिससे चित्त क्षुब्ध और व्याकुल रहता है। इन उपलब्धियों के सुख में भी दुःख छिपा रहता है। मनुष्य अच्छी तरह जानता है कि यह सब विभूतियाँ नश्वर एवं गमनशील हैं। किसी समय में नष्ट हो सकती हैं, छोड़कर जा सकती हैं। इन्हें पाकर मनुष्य इनकी रक्षा तथा इन्हें अपने पास बनाये रहने के लिए दिन-रात व्यग्र एवं व्यस्त रहा करता है। ऐसी दशा में सुख-संतोष अथवा निश्चिंतता का होना संभव नहीं। इस प्रकार सांसारिक उपलब्धियों की प्राप्ति एवं अप्राप्त दोनों ही दुःख का कारण है।

संसार में रहकर सांसारिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने का प्रयत्न करना बुरा नहीं। बुरा है उनके लोभ में उस महान् लाभ का त्याग कर देना, जो स्थिर एवं शाश्वत सुख का हेतु है। ऐसा सुख जिसमें न तो विक्षेप होता है और न परिवर्तन। उपलब्धियों के बीच से गुजरते हुए मानव-जीवन के सारपूर्ण लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करना ही सच्चा पुरुषार्थ है, मनुष्य को जिसे करना ही चाहिए।

मानव-जीवन का सर्वोपरि लाभ आध्यात्मिक लाभ ही है। सांसारिक लाभों के नितांत अभाव की स्थिति में भी आध्यात्मिक लाभ मनुष्य को सर्वसुखी बनाने में सर्वदा समर्थ है, जबकि आध्यात्मिक लाभ के अभाव में संसार की समग्र उपलब्धियाँ भी मनुष्य को सुखी एवं संतुष्ट नहीं बना सकतीं, बल्कि वे उल्टी जान के लिए जंजाल बनकर चिंता में वृद्धि करती हैं।

आध्यात्मिक लाभ के अतिरिक्त संसार की कोई भी उपलब्धियाँ मनुष्य को क्षुद्रता से विराट् की ओर और तुच्छता से उच्चता की ओर नहीं ले जा सकती। यह विशेषता केवल आध्यात्मिकता में ही है कि मनुष्य क्षुद्र से विराट् और तुच्छ से उच्च हो जाता है।

आध्यात्मिक जीवन आत्मिक सुख का निश्चित हेतु है। अध्यात्मवाद वह दिव्य आधार है, जिस पर मनुष्य की आंतरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार की उन्नतियाँ तथा समृद्धियाँ अवलंबित हैं। सांसारिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए भी जिन परिश्रम,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुषार्थ, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों की आवश्यकता होती है, वे सब आध्यात्मिक जीवन के ही अंश हैं। मनुष्य का आंतरिक विकास तो अध्यात्म के बिना हो ही नहीं सकता।

अध्यात्मवाद जीवन का सच्चा ज्ञान है। इसको जाने बिना संसार के सारे ज्ञान अपूर्ण हैं और इसको जान लेने के बाद कुछ भी जानने को शेष नहीं रह जाता। यह वह तत्त्वज्ञान एवं महाविज्ञान है, जिसकी जानकारी होते ही मानव-जीवन अमरतापूर्ण आनंद से ओत-प्रोत हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से पाये हुए आनंद की तुलना संसार के किसी आनंद से नहीं की जा सकती, क्योंकि इस आत्मानंद के लिए किसी आधार की आवश्यकता नहीं होती। वस्तुजन्य सुख नश्वर होता है, परिवर्तनशील तथा अंत में दु:ख देने वाला होता है। वस्तुजन्य मिथ्या आनंद वस्तु के साथ ही समाप्त हो जाता है, जबकि आध्यात्मिकता से उत्पन्न आत्मिक सुख जीवन भर साथ तो रहता ही है, अंत में भी मनुष्य के साथ जाया करता है। वह अक्षय और अविनश्वर होता है, एक बार प्राप्त हो जाने पर फिर कभी नष्ट नहीं होता। शरीर की अवधि तक तो रहता ही है, शरीर छूटने पर भी अविनाशी आत्मा के साथ संयुक्त रहा करता है।

ऐसे अविनाशी आनंद की उपेक्षा करके जीवन को क्षणिक एवं मिथ्या सुखदायी उपलब्धियों में लगा देना और उनमें सतोष अथवा सार्थकता अनुभव करना अनमोल मानव-जीवन की सबसे बड़ी हानि है। जब आनंद ही मानव-जीवन का वर्तमानकालिक लक्ष्य है तब शाश्वत आनंद के लिए ही प्रयत्न क्यों न किया जाये ? क्यों क्षणभंगुर सुख की छाया-वीथियों में ही भटकते रहा जाये।

मनुष्य सांसारिक उपलब्धियों को प्राप्त करे, किंतु आध्यात्मिक उपलब्धि का बलिदान देकर नहीं। यदि वह ऐसी भूल करता है तो निश्चय ही अपने को प्रवंचित एवं प्रताड़ित करता है। जीवन को आध्यात्मिक मार्ग पर नियुक्त कर देने से सांसारिक लाभ तो होता ही है, साथ ही मनुष्य अपने परम लक्ष्य अक्षय आनंद की ओर भी अग्रसर होता जाता है। अध्यात्मवाद में दोनों लाभ अपनी पराकाष्ठा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक निहित हैं, जिन्हें मनुष्य को अपनी क्षमता भर प्राप्त ही करना चाहिए। यही उसके लिए प्रेय भी है और श्रेष्ठ भी।

आध्यात्मिक जीवन कोई अप्राकृतिक अथवा आरोपित जीवन नहीं है। आध्यात्मिक जीवन ही वास्तविक एवं स्वाभाविक जीवन है। इससे भिन्न जीवन ही अस्वाभाविक एवं आरोपित जीवन है। दुःख, क्लेश, चिंता एवं विक्षोभ के बीच से बहते हुए जीवन-प्रवाह को स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है। जीवन का प्रसन्न प्रवाह ही वास्तव में स्वाभाविक जीवन है। अध्यात्मवाद का त्याग करके अपनाया हुआ जीवन प्रवाह किसी प्रकार भी निर्मल, स्निग्ध धारा के रूप में नहीं बह सकता। एकमात्र सांसारिक जीवन में लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि विकारों के आवर्त बनते ही रहेंगे, जो कि मनुष्य को अशांत एवं असंतुलित बनायेंगे ही। जबकि आध्यात्मिक जीवन सुख एवं शांति के दुकूलों में प्रसन्नतापूर्वक बहता हुआ मनुष्य को सुख-शांति की शीतलता प्रदान करता रहेगा।

आध्यात्मिक जीवन अपनाने का अर्थ है—असत् से सत् की ओर जाना। सत्य, प्रेम और न्याय का आदर करना। निकृष्ट जीवन से उत्कृष्ट जीवन की ओर बढ़ना। इस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन अपनाये बिना मनुष्य वास्तविक सुख-शांति नहीं पा सकता। धनवान्, यशवान् होकर भी यदि मनुष्य आत्मा की उच्च भूमिका में न पहुँच सका, तो क्या वह किसी प्रकार भी महान् कहा जायेगा ? सत्य की उपेक्षा और प्रेम की अवहेलना करके, छल-कपट और दंभ के बल पर कोई कितना ही बड़ा क्यों न बन जाये, किंतु उसका वह बड़प्पन एक विडंबना के अतिरिक्त और कुछ भी न होगा। महानता की वह अनुभूति जो आत्मा को पुलकित अथवा दैवत्व की ओर प्रेरित करती है कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। यह दिव्य अनुभूति केवल आध्यात्मिक जीवन अपनाने से ही प्राप्त हो सकती है।

वासनापूर्ण निकृष्ट जीवन त्यागकर शुद्ध सात्त्विक जीवन-यापन करने की प्रेरणा देने वाला अध्यात्मवाद ही है। वह मनुष्य को तम से ज्योति और मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने वाला है। बाह्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वस्तुओं के सुख की भाँति अध्यात्मवाद का आंतरिक सुख अस्थिर नहीं होता। वह चिरंतन, स्थिर, एकरस होता है। संसार की अशुद्धताएँ, इंद्रिय भोग की लिप्सा और वस्तुवाद की निस्सारता अध्यात्मवादी को प्रभावित नहीं कर पातीं। वह अंदर-बाहर एक जैसा तृप्त, संतुष्ट तथा महान् रहा करता है।

आत्मा में अखंड विश्वास रखकर जीवनयापन करने वाला आध्यात्मिक ही कहा जायेगा। आत्मा है—यह मान लेना ही आत्मा में विश्वास करना नहीं है। आत्मा में विश्वास करने का आशय है—इस अनुभूति से प्रतिक्षण ओत-प्रोत रहनां कि "संसार में व्याप्त परमात्मा के अंश आत्मा के द्वारा हमारा निर्माण किया गया है। हम यह पंचभौतिक शरीर ही नहीं हैं, बल्कि आत्मरूप में वही कुछ हैं, जो परमात्मा है।" ऐसी अनुभूति होने से ही हम अपने को ठीक से पहचान सकेंगे और सत्य, प्रेम, सहानुभूति, दया, क्षमा आदि ईश्वरीय गुणों का आदर कर सकेंगे। जिस समय हममें इन गुणों के ठीक-ठीक मूल्यांकन तथा इनको अपने अंदर विकसित करने की चाह जाग उठेगी, हम अध्यात्म पथ पर अग्रसर हो चलेंगे।

अध्यात्म सदाचरण और सदाचरण अध्यात्म के प्रेरक मित्र हैं। सदाचरण अध्यात्मवाद का सक्रिय रूप है और अध्यात्मवाद सदाचरण की घोषणा है। सदाचारी आध्यात्मिक तथा आध्यात्मिक व्यक्ति का सदाचारी होना अवश्यंभावी है।

भौतिक लोभ-लिप्सा को त्यागकर निर्विकार अध्यात्म पथ का अवलंबन करने से मनुष्य स्वभावतः आंतरिक संतोष, प्रेम, आनंद एवं आत्मीयता की दैवी संपदायें प्राप्त कर लिया करता है। अक्षय दैवी संपदा पा जाने पर मनुष्य पूर्णकाम हो जाता है और तब फिर उसे और कुछ चाहने की अभिलाषा नहीं रह जाती। अध्यात्मजन्य दैवी संपदाओं में संसार के सारे भौतिक तथा अभौतिक सुख निहित हैं।

आध्यात्मिक जीवन का सबसे बड़ा लाभ आत्मोद्धार माना गया है। अध्यात्मवादी का क़िसी भी दिशा में किया हुआ पुरुषार्थ परमार्थ का ही दूसरा रूप होता है। वह प्रत्येक कार्य को परमात्मा का कार्य और परिणाम को उसका प्रसाद मानता है। पुरुषार्थ द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमार्थ-लग्न व्यक्ति के ईर्ष्या, द्वेष, माया, मोह, लोभ, स्वार्थ, तृष्णा, वासना आदि के संस्कार नष्ट हो जाते हैं और उनके स्थान पर त्याग, तपस्या, संतोष, परोपकार आदि के शुभ संस्कार विकसित होने लगते हैं। अध्यात्म मार्ग के पुण्य पथिक के हृदय से तुच्छता, दीनता, हीनता, दैन्य तथा दासता के अवगुण वैसे ही निकलते जाते हैं—जैसे शरद ऋतु में जलाशयों का जल मलातीत हो जाता है। स्वाधीनता, निर्भयताभाव, संपन्नता, पवित्रता आदि प्रवृत्तियाँ आध्यात्मिक जीवन की सहज उपलब्धियाँ हैं। इन्हें पाकर मनुष्य को कुछ भी तो पाना शेष नहीं रह जाता। इस प्रकार की स्थायी प्रवृत्तियों को पाने से बढ़कर मनुष्य जीवन में कोई दूसरा लाभ हो ही नहीं सकता।

संसार का कोई संकट, कोई भी विपत्ति आध्यात्मिक व्यक्ति को विचलित नहीं कर सकती, उसके आत्मिक सुख को हिला नहीं सकती। जहाँ बड़े से बड़ा भौतिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति तनिक सा संकट आ जाने पर बालकों की तरह रोने, चिल्लाने और भयभीत होने लगता है, वहाँ आध्यात्मिक दृष्टिकोण वाला मनुष्य बड़ी से बड़ी आपत्ति में भी प्रसन्न एवं स्थिर रहा करता है। उसका दृष्टिकोण आध्यात्मिकता के प्रसाद से इतना व्यापक हो जाता है कि वह संपत्ति तथा विपत्ति दोनों को समान रूप से परमात्मा का प्रसाद मानता है और आत्मा को उसका अभोक्ता, जबकि भौतिकवादी अहंकार से दूषित दृष्टिकोण के कारण अपने को उनका भोक्ता मानता है। आध्यात्मिक व्यक्ति आत्म-जीवी और भौतिकवादी शरीर-जीवी होता है। इसीलिए उनकी अनुभूतियों में इस प्रकार का अंतर रहा करता है।

सुख-संपत्ति की प्राप्ति से लेकर संकट सहन करने की क्षमता तक संसार की जो भी दैवी उपलब्धियाँ हैं, वे सब आध्यात्मिक जीवनयापन से ही संभव हो सकती हैं। मनुष्य जीवन का यह सर्वोपरि लाभ है। उसकी उपेक्षा कर देना अथवा प्राप्त न करने से बढ़कर मानव-जीवन की कोई हानि नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म—मानवीय प्रगति का आधार

प्राचीनकाल में भारत अपनी उन्नत्ति के चरम शिखर पर विराजमान् था। यह ऋषि-मुनियों का देश जगत्गुरु कहा जाता था। किसी देश का वास्तविक गौरव उसकी भूमि, वनस्पति, प्राकृतिक वैभव अथवा जलवायु के आधार पर निश्चित नहीं होता है। वह होता है, वहाँ के जनगण के विकास, उनके आचार-विचार और आचरण के आधार पर। प्राचीनकाल में इस देश के निवासी आध्यात्मिक जीवन पद्धति अपनाकर नर-रत्नों, महापुरुषों, पराक्रमियों, सद्गुणियों के रूप में सुखी, संपन्न और दीर्घजीवन का गौरव पाते थे। गरीब से लेकर अमीर तक और श्रमिक से लेकर शासक वर्ग तक ऐसा कदाचित् ही कोई व्यक्ति होता था, जो जीवन में अध्यात्मवाद का समावेश करके न चलता हो। इसी आध्यात्मिक जीवन पद्धति के कारण ही यहाँ के लोग बड़े ही आदर्श और उच्च-भावी होते थे और अपने साथ-साथ अपने देश को भी गौरवान्वित करते थे।

अध्यात्म मानवजीवन की सफलता का बहुत बड़ा आधार है। जीवन में अध्यात्म का समावेश किये बिना कोई मनुष्य सच्ची सफलता का अधिकारी नहीं बन सकता। लौकिक अथवा भौतिक विभूतियों की उपलब्धि ही जीवन की सफलता नहीं है। मानव-जीवन की वास्तविक सफलता है—अखंड एवं अक्षुण्ण सुख-शांति एवं संतोष की उपलब्धि। अंतर की यह मांगलिक स्थिति आत्मिक स्वास्थ्य पर निर्भर है। आत्मिक स्वास्थ्य के बिना बाह्य जीवन नितांत असफल एवं संतापयुक्त ही रहता है, फिर चाहे उसमें भौतिक विभूतियाँ और लौकिक संपदायें कितनी ही प्रचुर मात्रा में क्यों न उपलब्ध हों।

भारत के समाज हितैषी ऋषि-मुनि, मनुष्य की वास्तविक सफलता और उसके लिए अध्यात्मवाद की आवश्यकता से अच्छी तरह अवगत थे। वे अवश्य ही चाहते थे कि यदि जनसाधारण अध्यात्म के अलौकिक स्तर पर भले ही न पहुँचे तथापि वे अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में इतना अध्यात्म तो अवश्य ही ग्रहण करें, जिससे वे अपने सामान्य जीवन में पूरी तरह से सुखी, संतुष्ट और शांत रह सकें। इसी मंतव्य के अंतर्गत उन्होंने अपने जनगण के लिए सामान्य साधना, स्वाध्याय और प्रातः तथा सायंकालीन संध्या-वंदन का नियम अनिवार्य बना दिया था। जो लोग प्रमादवश इस अनिवार्य नियम का पालन नहीं करते थे, उन्हें या तो समाज से बाहर माना जाता था अथवा पतित तथा पापी।

भारतीय समाज आज जिस हीनावस्था में दिखलाई दे रहा है, उसका कारण यही है कि उसने अपने जीवन से आध्यात्मिक आदर्शों का एक प्रकार से बहिष्कार कर दिया है। कोरे भौतिक-आदर्श को अपनाकर चलने से जीवन के हर क्षेत्र में उसकी गतिविधि दूषित हो गई है। उसका चरित्र और आचरण निम्नकोटि का हो गया है। इस आदर्शहीन जीवन का जो परिणाम होना चाहिए, वह रोग-दोष, शोक-संताप के रूप में सबके सामने है। साधन, सामग्री और अवकाश व अवसर होने पर भी—कहीं भी, किसी ओर सुख-शांति के दर्शन नहीं हो रहे हैं दुर्भाग्य से आज देश में उल्टी विचारधारा चल पड़ी है।

पहले जो लोग अध्यात्मवाद का आश्रय लेकर चलते थे, वे ही सभ्य, शिष्ट और सुसंस्कृत माने जाते थे। किंतु आज सभ्यता का तमगा उन लोगों के पास माना जाता है, जो अध्यात्म के प्रति उपेक्षा और तिरस्कार का भाव रखते हैं। जो अध्यात्म की, लोक-परलोक की, धर्म-कर्म की बात करता है, उसे मूर्ख, प्रतिगामी और पिछड़ा हुआ समझा जाता है। आध्यात्मिक विचारधारा के लोगों का उपहास किया जाता है। जिस समाज की विचारधारा इस प्रकार प्रतिकूलतापूर्ण हो गई हो, उसका सुख-सौभाग्य अस्त हो ही जाना चाहिए।

अध्यात्मवाद की उपेक्षा का जहाँ मुख्य कारण यह है कि लोग अज्ञानवश भौतिकवाद के वशीभूत हो गए हैं, उन्हें विषय-वासना और भोग, एषणाओं ने बुरी तरह जकड़ लिया है; वहाँ एक कारण यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि आज अध्यात्मवाद का सच्चा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वरूप लोगों के सामने नहीं है। यदि अपनी वह प्राचीनकाल वाली उपयोगिता अध्यात्मवाद आज भी उपस्थित कर सके, अपना वास्तविक स्वरूप और सच्चा महत्त्व प्रकट कर सके तो निश्चय ही उसके प्रति समाज की सारी उपेक्षा और तिरस्कार भाव तिरोहित होते देर न लगे। किंतु अप्रकटन की स्थिति से किसी सत्य सिद्ध विज्ञान का न तो महत्त्व ही घट जाता है और न ही उसकी उपयोगिता ही नष्ट हो जाती है। अध्यात्म एक सत्य सिद्ध विज्ञान है। उसका महत्त्व सदा बना रहेगा। यह मध्यकालीन अंधकार शीघ्र ही दूर होगा और अध्यात्मवाद मानव-जीवन में अपना समुचित स्थान पाकर समाज का शोक-संताप हरेगा। कोई भी अध्यात्मवादी व्यक्ति इस विश्वास से विचलित नहीं हो सकता।

भारतीय अध्यात्मवाद कितना शक्तिशाली विज्ञान है—यदि इसका प्रमाण पाना है तो भारतीय ऋषियों, तपस्वियों व साधकों का जीवन और उनकी घटनाओं को देखना होगा। भारतीय ऋषि-मुनि यदा-कदा आवश्यकता पड़ने पर ऐसे-ऐसे विलक्षण और आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाते थे, जिन्हें चमत्कार कहा जा सकता है। उनके आशीर्वाद से दूसरों का भला और शाप से अहित होने के असंख्यों उदाहरण पुराणों और इतिहासों में भरे पड़े हैं। महात्माओं की आध्यात्मिक शक्ति से भयभीत रहकर बड़े-बड़े बलधारी राजा-महाराजा उनकी प्रसन्नता के लिए विविध उपचार करते रहते थे।

आज भी समाज जिन महात्माओं तथा साधकों की पूजा-प्रतिष्ठा करता है, उसका कारण भी उनका आध्यात्मिक तेज ही है। वैसे सामान्यतः पूजा-प्रतिष्ठा का हेतु धन-वैभव और शक्ति सत्ता आदि का तो उनके पास लेशमात्र भी नहीं होता।

योग शास्त्रों में जिन सिद्धियों और विभूतियों का वर्णन किया गया है, वे वस्तुतः आध्यात्मिक साधना की ही उपलब्धियाँ हैं। योग-शास्त्र के अध्येता भली प्रकार जानते हैं कि उक्त शास्त्र की दक्षिण-मार्गी और वाम-मार्गी जिन अलौकिक विभूतियों और सिद्धियों का विस्तार से वर्णन किया गया है, उसके विधि-विधान के अंतर्गत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म साधना का सार ही सन्निहित है। अध्यात्म साधना में जो व्यक्ति जितनी सीमा तक अग्रसर हो जाता है, वह उस सीमा तक चमत्कारी व्यक्ति बन जाता है। वे ऐसी समर्थ सूक्ष्म-शक्तियों का उपार्जन कर लेते हैं, जिनके द्वारा अभाग्यग्रस्त लोगों का भी कल्याण संपादन किया जा सकता है। अध्यात्म की शक्तियाँ अपार एवं अपरिमेय हैं। इस शक्ति के आधार पर संसार के ऐसे कार्य भी सरलतापूर्वक किए जा सकते हैं, जिन्हें संसार असंभव कह सकता है। अध्यात्म एक सर्वांगीण संपूर्ण विज्ञान है, जिसकी आराधना से साधारण मनुष्य एक चमत्कारी दिव्य पुरुष बन सकता है। अपने इस महान् विज्ञान की उपेक्षा करने से ही आज का भारतीय समाज इस अधोगति को प्राप्त हुआ है।

निश्चय ही अध्यात्म की चमत्कारी स्थिति तक सबको पहुँचने की आवश्यकता नहीं है। तथापि इतनी आवश्यकता तो सबके लिए ही है कि वह इसकी साधना से अपने जीवन में सुख-शांति का समावेश कर सकें। ऋषि-मुनियों की अखंड आत्म-साधना की हिसका करना उचित नहीं, क्योंकि वह सर्वसाधारण के वश की बात नहीं होती और जो लोग लोभ, स्पर्धा अथवा अहंकार के वशीभूत होकर अपने सामान्य जीवन की साधना से हटकर असाधारण साधना में चले जाते हैं, वे न तो इधर के ही रहते हैं और न उधर के। यद्यपि अध्यात्म की असाधारण साधना किसी के लिए वर्जित नहीं है, तथापि वह तब तक उचित नहीं है जब तक मनुष्य उस साधना के योग्य मानसिक स्तर में न पहुँच जाए। ऋषि-मुनियों की तरह चमत्कारी सिद्धियाँ प्राप्त कर लेने के लोभ से जो लोग हठपूर्वक सांसारिक कर्तव्य त्यागकर योग साधनाओं में लग जाते हैं, वे भूल करते हैं और उस ओर का कोई विशेष लाभ तो नहीं उठा पाते, इस ओर से संसार से भी वंचित हो जाते हैं।

ऋषित्व की प्राप्ति किसी एक जन्म की साधना का फल नहीं होता। वह तो जन्म-जन्मांतरों की निर्बाध साधना का ही संचित सत्फल होता है। साधना की सिद्धि साहसिक घटना नहीं है। वह तो जन्म-जन्म की साधन परंपरा का एक सुनिश्चित परिणाम ही होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। कोई साधक अपने पूर्वजन्मों की परंपरा में अपने आवश्यक कर्तव्यों के साथ थोड़ी-थोड़ी अध्यात्म साधना भी करता चलता है। धीरे-धीरे उसका विकास होता है और संस्कार संचय होते जाते हैं। कालांतर में जब संस्कारों की निधि संचय हो जाती है, तब किसी एक जन्म में सारी संचित साधना सिद्धि के रूप में परिपक्व हो जाती है और वह व्यक्ति चमत्कारी शक्तियों का विधान बन जाता है। सामान्य स्थिति से चमत्कारी स्थिति पर पहुँचने की यही सुंदर, सरल और असंदिग्ध विधि है। साहसिक साधना से किसी लाभ के होने की आशा संदिग्ध ही रहती है।

सामान्य व्यक्तियों के लिए यही उचित है कि जीवन में चमत्कारी सिद्धि के लोभ से विमुख होकर अध्यात्मवाद के उस व्यावहारिक आदर्श को अपनाया जाए, जिससे जीवन में शोक-संताप की मात्रा कम हो और सुख-शांति की वृद्धि होती चले। लौकिक जीवन में जितने भी सुख-साधन और प्रसन्नतादायक अवसर हैं, उनका मूल अध्यात्म ही है। जब मनुष्य जीवन में आध्यात्मिक विचारधारा का समावेश कर लेता है तो उसका अंतर तथा बाह्य सर्वथा निर्दोष तथा उदार हो जाता है। वह सबके साथ आत्मीयता तथा आत्म-भाव अनुभव करने लगता है। किसी को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष किसी भी प्रकार से कष्ट दे सकना उसके वश की बात नहीं होती। परोपकार, पुण्य तथा परमार्थ में उसका विश्वास अटल तथा अडिग हो जाता है। ऐसे विचार तथा व्यवहार वाले व्यक्ति के लिए चारों ओर अनुकूलता ही अनुकूलता उत्पन्न हो जाती है। यह अखंड नियम है कि जो व्यक्ति संसार में सबके लिए अनुकूल होगा, उसके लिए सारा ससार भी अनुकूल ही रहेगा। अनुकूलता को सुख-शांति तथा कल्याण की जननी माना गया है। जिसने अपनी आध्यात्मिक विचारधारा से स्त्री, पुत्रों, परिवार, परिजनों, मित्रों, सहृदयों, संबंधियों और संपर्कों को अनूकूल बना लिया, उसने मानो इस भूमि पर ही अपने लिए स्वर्ग की भूमिका तैयार कर ली।

लौकिक जीवन में आरोग्य, धन-संपत्ति और स्नेह-सौजन्य—इन तीन विभूतियों को सुख-शांति का आधार माना गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। जिनको इन तीन विभूतियों की प्राप्ति हो जाती है, वह निश्चित रूप से अपने को सुखी और संतुष्ट अनुभव करता है। यह तीनों विभूतियाँ अध्यात्म की साधारण-सी सिद्धियाँ हैं। कोई भी अध्यात्मवादी इन्हें बड़ी सरलता से अनायास ही प्राप्त कर सकता है। अध्यात्मवाद के सत्परिणाम चिरप्रसिद्ध हैं। उसके आधार पर लौकिक तथा पारलौकिक, भौतिक एवं आत्मिक दोनों प्रकार की सुख-शांति प्राप्त होती है।

आध्यात्मिक विचारधारा और तदनुरूप आचरण करने वाले को शांति, संतोष, हर्ष-उल्लास, निर्भयता और प्रसन्नता की स्थिति प्राप्त होना अनिवार्य है। यद्यपि यह स्थिति आत्मभूत भी होती है तथापि आध्यात्मिक चरित्र वाला व्यक्ति भौतिक-साधनों से भी वंचित नहीं रहता। जब किसी सत्पुरुष को उपरोक्त स्थिति प्राप्त ही होनी है तो उसके साथ उसके स्थूल साधनों का जुड़ा रहना भी अनिवार्य है, जिस प्रकार आकार के साथ उसका प्रकार जुड़ा रहता है। इस प्रकार अध्यात्मवादी अंतर और बाह्य दोनों ओर से सुखी और संपन्न बना रहता है।

अपनी और अपने समाज की वर्तमान अधोदशा का सुधार करने के लिए हम सबको पूर्वजों से निर्देशित आत्मा के महाविज्ञान अध्यात्मवाद को अपने व्यावहारिक जीवन में सिद्ध करते चलना चाहिए। इससे भौतिक उन्नति के साथ-साथ आत्मिक उन्नति भी होती चलेगी और एक दिन हम सब अपने परमकल्याण की प्राप्ति कर लेंगे।

अध्यात्म से मानव-जीवन का चरमोत्कर्ष

इस संसार में मानवजीवन से अधिक श्रेष्ठ अन्य कोई उपलब्धि नहीं मानी गई है। एकमात्र मानवजीवन ही वह अवसर है, जिसमें मनुष्य जो भी चाहे प्राप्त कर सकता है। इसका सदुपयोग मनुष्य को कल्पवृक्ष की भाँति फलीभूत होता है।

जो मनुष्य इस सुरदुर्लभ मानवजीवन को पाकर उसे सुचारु रूप से संचालित करने की कला नहीं जानता है, अथवा उसे जानने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में प्रमाद करता है, तो यह उसका एक बड़ा दुर्भाग्य ही कहा जायेगा। मानव जीवन वह पवित्र क्षेत्र है, जिसमें परमात्मा ने सारी विभूतियाँ बीज रूप में रख दी हैं, जिनका विकास नर को नारायण बना देता है। किंतु इन विभूतियों का विकास होता तभी है, जब जीवन का व्यवस्थित रूप से संचालन किया जाए। अन्यथा अव्यवस्थित जीवन, जीवन का ऐसा दुरुपयोग है, जो विभूतियों के स्थान पर दरिद्रता की वृद्धि कर देता है।

जीवन को व्यवस्थित रूप से चलाने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। उसे अपनाकर चलने पर ही इसमें वांछित फलों की उपलब्धि की जा सकती है। अन्यथा इसकी भी वही गति होती है, जो अन्य पशु-प्राणियों की होती है। जीवन को सुचारु रूप से चलाने की वह वैज्ञानिक पद्धति एकमात्र अध्यात्म ही है, जिसे जीवन जीने की कला भी कहा जा सकता है। इस सर्वश्रेष्ठ कला को जाने बिना जो मनुष्य जीवन को अस्त-व्यस्त ढंग से बिताता रहता है, उसे उनमें से कोई भी ऐश्वर्य उपलब्ध नहीं हो सकता, जो लोक से लेकर परलोक तक फैले पड़े हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, जिनके अंतर्गत आदि से अंत तक की सारी सफलतायें सन्निहित हैं, इसी जीवन कला के आधार पर ही तो मिलते हैं।

सामान्य लोगों के बीच प्रायः यह भ्रम फैला हुआ है कि अध्यात्मवादी का लौकिक जीवन से कोई संबंध नहीं है। वह तो योगी, तपस्वियों का क्षेत्र है, जो जीवन में दैवी वरदान प्राप्त करना चाहते हैं। जो सांसारिक जीवनयापन करना चाहते हैं, घर-बार बसाकर रहना चाहते हैं, उनसे अध्यात्म का संबंध नहीं। इसी भ्रम के कारण बहुत-से गृहस्थ भी, जो दैवी वरदान की लालसा के फेर में पड़ जाते हैं, अध्यात्म मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते हैं। किंतु अध्यात्म का सही अर्थ न जानने के कारण थोड़ा-सा पूजा-पाठ कर लेने को ही अध्यात्म मान लेते हैं।

यह बात सही है कि अध्यात्म मार्ग पर चलने से, उसकी साधना करने से दैवी वरदान भी मिलते हैं और ऋद्धि-सिद्धि की भी प्राप्ति होती है। किंतु वह उच्चस्तरीय सूक्ष्म-साधना का फल है। कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिनों पूजा-पाठ करने अथवा जीवन भर यों ही कार्यक्रम के अंतर्गत पूजा करते रहने पर भी ऋषियों वाला ऐश्वर्य प्राप्त नहीं हो सकता। उस स्तर की साधना कुछ भिन्न प्रकार की होती है। वह सर्वसामान्य लोगों के लिए संभव नहीं। उन्हें इस तप-साध्य अध्यात्म में न पड़कर अपने आवश्यक कर्तव्यों में ही आध्यात्मिक निष्ठा रखकर जीवन को आगे बढ़ाते रहना चाहिए। उनके साधारण पूजा-पाठ का जो कि जीवन का एक अनिवार्य अंग होना ही चाहिए, अपनी तरह से लाभ मिलता रहेगा।

थोड़ी-सी साधारण पूजा, उपासना करके जो जीवन में अलौकिक ऋद्धि-सिद्धि पाने की लालसा रखते हैं, वे किसी जुआरी की तरह नगण्य-सा धन लगाकर बहुत अधिक लाभ उठाना चाहते हैं। बिना श्रम के मालामाल होना चाहते हैं। ऐसे लोभी उपासकों की यह अनुचित आशा कभी भी पूरी नहीं हो सकती और हो यह भी सकता है कि इस लोभ के कारण उनको अपनी उस सामान्य उपासना को कोई फल न मिले। देवताओं का वरदान वस्तुतः इतना सस्ता नहीं होता जितना कि लोगों ने समझ रखा है। वे मंदिर में जाकर हाथ जोड़ देने या अक्षत-पुष्प जैसी तुच्छ वस्तुयें चढ़ा देने से प्रसन्न हो जायेंगे और अपने वरदान लुटाने लगेंगे—ऐसा सोचना अज्ञान के सिवाय और कुछ नहीं है। सामान्य पूजा-पाठ का अपना जो पुरस्कार है, मिलेगा वही, उससे अधिक कुछ नहीं।

वरदायी अथवा अलौकिक ऐश्वर्य का आधार अध्यात्म सामान्य उपासना मात्र नहीं है। उसका क्षेत्र आत्मा के सूक्ष्म-संस्थानों की साधना है। उन शक्तियों के प्रबोधन की प्रक्रिया है, जो मनुष्य के अंतःकरण में बीज रूप में सन्निहित रहती हैं। आत्मिक अध्यात्म के उस क्षेत्र में एक से एक बढ़कर सिद्धियाँ एवं समृद्धियाँ भरी पड़ी हैं। किंतु उनकी प्राप्ति तभी संभव है, जब मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से निर्मित अंतःकरण, पाँचों कोशों, छहों चक्रों, मस्तिष्कीय ब्रह्म-रंध्र में अवस्थित कमल, हृद्स्थित सूर्य-चक्र, नाभि की ब्रह्म-ग्रंथि और मूलाधारवासिनी कुंडलिनी आदि के शक्ति-संस्थानों और कोश-केंद्रों को प्रबुद्ध, प्रयुक्त और अनुकूलतापूर्वक निर्धारित दिशा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में सक्रिय बनाया जा सके। यह बड़ी गहन, सूक्ष्म और योगसाध्य तपस्या है। जन्म-जन्म से तैयारी किये हुए कोई बिरले ही यह साधना कर पाते हैं और अलौकिक सिद्धियों को प्राप्त करते हैं। यह साधना न सामान्य है और न सर्वसाधारण के वश की, तथापि असंभव भी नहीं है।

एक समय था, जब भारतवर्ष में अध्यात्म की इस साधना पद्धति का पर्याप्त प्रचलन रहा। देश का ऋषि वर्ग उसी समय की देन है। जो-जो पुरुषार्थी इस सूक्ष्म साधना को पूरा करते गये, वे ऋषियों की श्रेणी में आते गये। यद्यपि आज इस साधना के सर्वथा उपयुक्त न तो साधन हैं और न समय, तथापि यह परंपरा पूरी तरह से उठ नहीं गई है। अब भी यदा-कदा, यत्र-तत्र इस साधना के सिद्ध पुरुष देखे-सुने जाते हैं, किंतु इनकी संख्या बहुत विरल है। वैसे योग का स्वाँग दिखाकर और सिद्धों का वेश बनाकर पैसा कमाने वाले रंगे सियार तो बहुत देखे जाते हैं। किंतु उच्चस्तरीय अध्यात्म-विद्या की पूर्वोक्त वैज्ञानिक पद्धति से सिद्धि की दिशा में अग्रसर होने वाले सच्चे योगी नहीं के बराबर ही हैं। जिन्होंने साहसिक तपस्या के बल पर ही आत्मा की सूक्ष्म शक्तियों को जाग्रत् कर प्रयोग योग्य बना लिया होता है, वे संसार के मोह जाल से दूर प्रायः अप्रत्यक्ष ही रहा करते हैं। शीघ्र किसी को प्राप्त नहीं होते और पुण्य अथवा सौभाग्य से जिसको मिल जाते हैं, उसका जीवन उनके दर्शन मात्र से ही धन्य हो जाता है।

इतनी बड़ी तपस्या को छोटी-मोटी साधना अथवा थोड़े से कर्मकांड द्वारा पूरी कर लेने की आशा करने वाले बाल-बुद्धि के व्यक्ति ही माने जायेंगे। यह उच्चस्तरीय आध्यात्मिक साधना शीघ्र पूरी नहीं की जा सकती। स्तर के अनुरूप ही पर्याप्त समय, धैर्य, पुरुषार्थ एवं शक्ति की आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति धीरे-धीरे अपने बाह्य जीवन के परिष्कार से प्रारंभ होती है। बाह्य की उपेक्षा कर सहसा ही आत्मिक स्तर पर साधना में लग जाना अक्रमिक है, जिसमें सफलता की आशा नहीं की जा सकती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज हम सब जिस स्थिति में चल रहे हैं, उसमें जीवन-निर्माण की सरल आध्यात्मिक साधना ही संभव है। इस स्तर से शुरू किये बिना काम भी तो नहीं चल सकता। बाह्य जीवन को यथास्थिति में छोड़कर आत्मिक स्तर पर पहुँच सकना भी तो संभव नहीं है। अस्तु, हमें उस अध्यात्म को लेकर ही चलना होगा, जिसे जीवन-जीने की कला कहा गया है।

जीवन विषयक अध्यात्म हमारे गुण, कर्म, स्वभाव से संबंधित है। हमें चाहिए कि हम अपने में गुणों की वृद्धि करते रहें। ब्रह्मचर्य, सच्चरित्रता, सदाचार, मर्यादा-पालन और अपनी सीमा में अनुशासित रहना आदि ऐसे गुण हैं, जो जीवन जीने की कला के नियम माने गये हैं। व्यसन, अव्यवस्था, अस्त-व्यस्तता व आलस्य-प्रमाद जीवन-कला के विरोधी दुर्गुण हैं। इनका त्याग करने से जीवन-कला को बल प्राप्त होता है। हमारे कर्म भी गुणों के अनुसार ही होने चाहिए। गुण और कर्मों में परस्पर विरोध रहने से जीवन में न शक्ति का आगमन होता है और न प्रगतिशीलता का समावेश। हममें सत्य-निष्ठा का गुण तो हो पर इसे कर्मों में मूर्तिमान् करने का साहस न हो तो कर्म तो जीवन-कला के प्रतिकूल होते ही हैं, वह गुण भी मिथ्या हो जाता है।

सत्कर्मों में हमारी आस्था तो हो पर पुण्य-परमार्थ की सक्रियता से दूर ही रहें तो जीवन-कला के क्षेत्र में यह एक आत्म-प्रवंचना ही होगी। इसी प्रकार हमारा स्वभाव भी इन दोनों के अनुरूप ही होना चाहिए। हममें दानशीलता का गुण भी हो और अवसरानुसार सक्रिय भी होता हो, किंतु उसके साथ यदि अहंकार भी जुड़ा है तो यह उस गुण-कर्म का स्वाभाविक विरोध होगा, जो जीवन-कला के अनुरूप नहीं है। हम सदाशयी, परमार्थी और सेवाभावी तो हैं और कर्मों में अपनी इन भावनाओं को मूर्तिमान् भी करते हैं, किंतु यदि स्वभाव से क्रोधी, कठोर अथवा निर्बल हैं तो इन सद्‌गुणों और सत्कर्मों का कोई मूल्य नहीं रह जाता। किसी को यदि परोपकार द्वारा सुखी करते हैं और किसी को अपने क्रोध का लक्ष्य बनाते हैं तो एक ओर का पुण्य दूसरे ओर के पाप से ऋण होकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शून्य रह जायेगा। गुण, कर्म, स्वभाव तीनों का सामंजस्य एवं अनुरूपता ही वह विशेषता है, जो जीवन जीने की कला में सहायक होती है।

जीवनयापन की वह विधि ही जीवन जीने की कला है, जिसके द्वारा हम स्वयं अधिकाधिक सुखी, शांत और संतुष्ट रह सकें, साथ ही दूसरों को भी उसी प्रकार रहने में सहयोगी बना सकें और यही वह प्रारंभिक अध्यात्म है, जिसके द्वारा जीवन निर्माण होता है और आत्मा की सूक्ष्म अध्यात्म साधना का पथ प्रशस्त होता है। हम सबको इसी सरल एवं साध्य अध्यात्म को लेकर क्रम से आगे बढ़ना चाहिए। सहसा आदि से अंत पर कूद जाने का प्रयत्न करना एक ऐसी असफलता को आमंत्रित करना है, जिससे न तो ठीक से जीवन जिया जा सकता है और न उच्चस्तरीय साधना को सामान्य बनाया जा सकता है।

पुराकालीन ऋषि-मुनियों ने भी उच्चस्तरीय अध्यात्म में छलाँग नहीं लगाई। उन्होंने भी अभ्यास द्वारा पहले अपने बाह्य जीवन को ही परिष्कृत किया और तब क्रम से उस आत्मिक जीवन में उच्च-साधना के लिए पहुँचे थे। वह नियम था कि पहले बाह्य जीवन में व्यावहारिक अध्यात्म का समावेश करके उसे सुख-शांतिमय बनाया जाए। इस प्रसंग में जो भी पुण्य-परमार्थ अथवा पूजा-उपासना अपेक्षित हो उसे करते रहा जाये। लौकिक जीवन को सुविकसित एवं सुसंस्कृत बना लेने के बाद ही आत्मिक अथवा अलौकिक जीवन में प्रवेश किया जाए—उल्लंघन करने वाले कभी सफलता के अधिकारी नहीं बन सकते। लौकिक जीवन की निकृष्टता आत्मिक जीवन के मार्ग में पर्वत के समान अवरोध सिद्ध होती है।

अध्यात्म मानव-जीवन के चरमोत्कर्ष की आधारशिला है, मानवता का मेरुदंड है। इसके अभाव में असुख, अशांति एवं असंतोष की ज्वालायें मनुष्य को घेरे रहती हैं। मनुष्य जाति की अगणित समस्याओं को हल करने और सफल जीवन जीने के लिए अध्यात्म से बढ़कर कोई उपाय नहीं है। पूर्वकाल में, जीवन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख-समृद्धियों के बहुतायत के कारण जिस युग को सतयुग के नाम से याद किया जाता है, उसमें और कोई विशेषता नहीं थी—यदि विशेषता थी तो यही कि उस युग के मनुष्यों का जीवन अध्यात्म की प्रेरणा से ही अनुप्राणित रहता था। आज उस तत्त्व की उपेक्षा होने से जीवन में चारों ओर अभाव, अशांति और असंतोष व्याप्त हो गया है और इन्हीं अभिशापों के कारण ही आज का युग कलियुग के कलंकित नाम से पुकारा जाता है।

अपने युग का यह कलंक आध्यात्मिक जीवन पद्धति अपनाकर जब मिटाया जा सकता है तो क्यों न मिटाया जाना चाहिये और अवश्य मिटाया जाना चाहिये। अपने युग को लांछित अथवा यशस्वी बनाना उस युग के मनुष्यों पर ही निर्भर है, तब क्यों न हम सब आध्यात्मिक पद्धति का समावेश कर अपने युग को भी उतना ही सम्मानित एवं सुस्मरणीय बना दें, जितना कि सतयुग के मनुष्यों ने अपने आचरण द्वारा अपने युग को बनाया था।

हमारा दृष्टिकोण अध्यात्मवादी बने

यं लब्ध्वा च परं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिन्स्थिता न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।।

'योगी परमेश्वर को प्राप्ति रूप लाभ से अधिक कुछ नहीं मानता। आत्मा को प्राप्त करने से दुःख चलायमान नहीं करते।

कितना ही धन कमा लिया जाए, कितनी ही विद्या प्राप्त कर ली जाय, कितनी ही शक्ति संचय कर ली जाए तब भी संसार के दुःखों से सर्वथा मुक्ति नहीं पायी जा सकती। धन अभावों एवं आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। विद्या, बौद्धिक विकास कर सकती है और शक्ति से किन्हीं दूसरों को वश में किया जा सकता है। किंतु इस प्रकार की कोई सफलता दुःखों से मुक्ति नहीं दिला सकती। धनवानों को दुःख होता है, विद्वान् शोक मनाते देखे जाते हैं और शक्तिमानों को पराजित होते देखा गया है।

धन हो और विद्या न हो तो जड़ता से मिलकर धन विनाश का हेतु बन जाता है। विद्या हो पर स्वास्थ्य न हो तो विद्या का कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समुचित उपयोग संभव नहीं। दिन-रात स्वास्थ्य की चिंता लगी रहेगी। थोड़ा काम किया नहीं कि कभी सिर दर्द है तो कभी अजीर्ण हो गया। कभी सर्दी है तो कभी ज्वर घेर रहा है। इस प्रकार न जाने कितनी बाधायें और व्याधायें लगी रहती हैं। केवल विद्या के बल पर उनसे छुटकारा नहीं मिल पाता। इस प्रकार शक्ति तो हो पर धन और विद्या न हो तब भी पग-पग पर संकट खड़े रहते हैं। धन के अभाव में शक्ति निष्क्रिय रह जाती है और यदि उसके बल पर धन संचय भी कर लिया जाये तो विद्या के अभाव में उसका कोई समुचित उपयोग नहीं किया जा सकता। विद्यारहित शक्ति भयानक होती है। मनुष्य को आततायी, अन्यायी और अत्याचारी बना देती है। ऐसी अवस्था में संकटों का पारावार नहीं रहता। धन, विद्या और शक्ति तीनों वस्तुयें संसार में किसी को कदाचित् ही मिलती हैं।

यदि एक बार यह तीनों वस्तुयें किसी को मिल भी जाएँ तो हानि-लाभ, वियोग-विछोह, ईर्ष्या-द्वेष आदि के न जाने कितने कारण मनुष्य को दुःखी और उद्विग्न करते रहते हैं। ऐसा नहीं हो पाता कि धन, विद्या और शक्ति को पाकर भी मनुष्य सदा सुखी, संतुष्ट एवं शांत बना रहे। संसार की कोई भी ऐसी उपलब्धि नहीं, जिसके मिल जाने से मनुष्य दुःख-क्लेशों की ओर से सर्वथा निश्चिंत हो जाये।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य आनंद की प्राप्ति ही है। उसी को पाने के लिए सारे प्रयत्न किये जाते हैं। भौतिक विभूतियों की सहायता से वह मिल नहीं पाता। मनुष्य दुःखी तथा उद्विग्न बना रहता है। तब कौन-सा उपाय हो सकता है, जिसके आधार पर इस असफलता को सफलता में बदला जा सके ? उसका एकमात्र उपाय यदि कोई है तो वह है 'अध्यात्म'। अध्यात्म की महिमा अपार है। उसके द्वारा प्राप्त होने वाले अहेतुक सुख की तुलना संसार की किसी भी विभूति से मिलने वाले क्षणिक सुख से नहीं की जा सकती। मानव-जीवन की सर्वोत्कृष्ट विभूति वही है। उसकी सहायता से मनुष्य देवताओं की भाँति सदा आनंदित रह सकता है। देवत्व प्राप्त हो जाने पर दुःख की संभावना ही समाप्त हो जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म भवरोगों की अमोघ औषधि मानी गई है। दुःखों के निवारण के लिए भौतिक प्रयत्नों के साथ-साथ यदि अध्यात्म की भी साधना की जाती रहे तो निश्चित ही भवरोगों से सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है। आध्यात्मिक औषधि का महत्त्व जानने वाले प्राचीन ऋषि-मुनियों ने भौतिक विभूतियों को त्याग कर भी सुखी और उपयोगी जीवनयापन कर इसकी अमोघता को सिद्ध कर दिखलाया है। आज भी इसमें वही विशेषता मौजूद है। पर खेद है, आज हमारी प्रमाद, भ्रम, अज्ञान, आलस्य एवं अनास्था आदि दोषों ने हमारी दृष्टि और अध्यात्म के महत्त्व के बीच परदा डाल दिया है। हम अध्यात्म के सारे महत्त्व को भूले जा रहे हैं। भौतिक उपलब्धि में संलग्न रहने और अध्यात्म साधना की सर्वथा उपेक्षा करने से ही आज मनुष्य जाति इतनी उन्नति और प्रगति के बाद भी दुःखी और दीन बनी हुई है।

बाह्य ज्ञान, भौतिक विभूतियाँ और जड़ विज्ञान, इनका कितना ही विकास क्यों न हो जाये, मनुष्य के जीवन-लक्ष्य आनंद को प्राप्त नहीं करा सकते। उसके लिए तो अध्यात्म तत्त्व को धारण करना होगा। बाह्य विकास और भौतिक उन्नति मनुष्य को कुछ सामयिक सुविधा का सुख भले ही प्रदान कर सकें, पर इससे श्रेयपूर्ण स्थायी सुख की उपलब्धि संभव नहीं। वह तो अध्यात्म से मिल सकता है। भौतिक विभूतियाँ मात्र इंद्रिय सुख की संभावना उपस्थित कर सकती हैं। इनके द्वारा वह अखंड आनंद संभव नहीं, जो अध्यात्म के आधार पर इंद्रिय निग्रह द्वारा प्राप्त होता है। संसार में चारों ओर जो दुःखों का जाल फैला हुआ है, उससे तभी मुक्ति मिल सकती है, जब सर्वथा सांसारिक-लिप्साओं को कम कर अध्यात्म के श्रेय-पथ का प्रतिपादन किया जाए। सांसारिक-कर्तव्यों के साथ-साथ आत्म-साधना में भी लगा जाए।

आज मनुष्य जाति जीवन का जितना समय भौतिक प्रगति में लगा रही है, यदि उसका एक अंश भी आत्म-क्षेत्र को उन्नत एवं उर्वर बनाने में लगा सके तो कोई कारण नहीं कि वह अपने जीवन-लक्ष्य आनंद को न पा पाये। इसी एकमात्र भौतिक दृष्टिकोण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण ही तो वह अध्यात्म के शुभ परिणामों से वंचित बनी हुई है। आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से रहित जड़-ज्ञान से उत्पन्न होने वाले दु:खदायी परिणामों को भोग रही है। मनुष्य ने जितनी प्रगति भौतिक क्षेत्र में की है, उससे कहीं अधिक संभावना आध्यात्मिक क्षेत्र में भरी पड़ी है। किंतु उसको पाने के लिए भी अपनी चेतना और शक्ति को उसी प्रकार आत्म-विकास में लगाना होगा, जिस प्रकार भौतिक प्रगति में लगाई जा रही है। एक बार आत्मिक आनंद को पा लेने पर संसार के सारे वैभव और भोग-विलास तुच्छ लगने लगेंगे।

मनुष्य का जीवन-लक्ष्य नश्वर भोगों को प्राप्त करना नहीं है। वह तो संसार में अमृतत्त्व प्राप्त करने के लिए अवतरित हुआ है। संसार में यदि कुछ अमृत है, अविनाशी और अक्षर है तो वह आत्मा ही है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य ही अध्यात्म मार्ग द्वारा आत्मा और आत्मा द्वारा परमात्मा को प्राप्त करना है। इस श्रेय को विस्मृत कर जो व्यक्ति केवल सांसारिक भोगों द्वारा शरीर की ही उपासना में लगे रहते हैं, वे अपनी बड़ी भारी हानि करते हैं। ऐसे अबोध लोगों को ही शास्त्रों में अज्ञानी एवं प्रमादी कहा गया है।

हमारी दु:खपूर्ण परिस्थितियों का उत्तरदायित्व हमारे एकमात्र भौतिकवादी दृष्टिकोण पर है। यदि हम अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन कर उसे थोड़ा भी आध्यात्मिक बना सकें तो बहुत अंशों तक हमारी ये दु:खद स्थिति बदल सकती है। आत्मा की उपेक्षा करते रहने पर भौतिक्र संपदायें कभी भी हमारी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकतीं। शाश्वत सुख की प्राप्ति अथवा जीवन लक्ष्य की सिद्धि एक ही मार्ग में संभव है और वह मार्ग है आध्यात्मिक जीवन पद्धति। इस पुण्य पथ का अवलंब लिए बिना निस्तार होना कठिन है।

अध्यात्म मानव-जीवन का बहुत बड़ा आधार है, उसकी महानतम संपदा है। मनुष्य के भौतिक एवं आत्मिक चिर उत्कर्ष के लिए इसका ग्रहण नितांत आवश्यक है। मनुष्य जीवन की अगणित समस्याओं को हल करने और सुख-शांतिपूर्वक जीने के लिए इससे बढ़कर अन्य कोई उपाय नहीं है। इसकी उपेक्षा करने के कारण ही मनुष्य जाति सब कुछ पाकर भी दीन-हीन बनी आत्मिक दरिद्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का जीवनयापन कर रही है। इस भयानक पतन का एक ही कारण है और वह है आत्मा की उपेक्षा करके अनाध्यात्मिक जीवन बिताना।

शरीर को भोग का साधन मानना एक अकल्याणकारी दृष्टिकोण है, अनाध्यात्मिक भाव है। इसी के कारण ही तो आज हम सब पतन के गर्त में गिरे हुए शोक-संतापों और दुःख-क्लेशों में फँसे हुए हैं। शरीर, आध्यात्मिक साधना का एक महान् माध्यम है। इसी की सहायता से आत्मा का ज्ञान और परमात्मा का साक्षात्कार होता है। इसे संसार के अपवित्र भोगों में लिप्त कर डालना अकल्याणकर प्रमाद है, जिसे कभी भी न करना चाहिये। शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम तथा अध्यात्म साधना द्वारा श्रेय-पथ पर बढ़ना चाहिये। अनात्म भाव के कारण ही शरीर साध्य बना हुआ है, अन्यथा यह एक चमत्कारी साधन है, जिसका सदुपयोग करके इसी जीवन में आत्मा को पाया और परमात्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है। शरीर को अपनी संपत्ति मानकर भोग-विलासों में लगाये रहना अहंकार है। वस्तुतः शरीर आत्मा की संपत्ति है, उसका ही उपादान है, अस्तु इसे ऐसे साधनों में ही लगाया जाना चाहिए, जिससे भव-बंधन में आबद्ध आत्मा मुक्त हो और जीवन को शाश्वत सुख का लाभ प्राप्त हो।

भव-रोगों में फँसे मनुष्यों की इस पतितावस्था से उद्धार का एक ही मार्ग है और वह है अध्यात्मवाद। भौतिकवाद के उन्माद ने आज मानव जाति को उन्मत्त बना रखा है। वह कल्याण के ज्ञान से सर्वथा रिक्त होती जा रही है। आज लोगों की मनोभूमियाँ इस सीमा तक दूषित हो गई हैं कि अमंगल में मंगल दीखने लगा है। मानसिक विकारों, आवेगों, प्रलोभनों और पाप पर नियंत्रण कर सकना उनके लिए कठिन हो गया है। तनिक-सा प्रलोभन सामने आते ही पाप करने को उद्यत हो जाना, जरा-सा भय उपस्थित होते ही कर्तव्य-पथ का त्याग कर देना साधारण बात बन गई है।

चित्त की अस्थिरता और जीवन की निरुद्देश्यता ने लोगों को विक्षिप्त बना रखा है। लोग न करने योग्य व्यवहार करते और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके परिणामस्वरूप शोक-संतापों में घिरते चले जा रहे हैं। उपेक्षणीय प्रतिकूलतायें, कठिनाइयाँ तथा असफलतायें भी उनको तुरंत क्षोभ, क्रोध, आशंका, निराशा और निरुत्साह के वशीभूत बना देती हैं। स्वार्थ, ईर्ष्या, कामुकता, निष्ठुरता, असहिष्णुता और विषय वासनाओं ने लोगों का मनुष्य जीवन निकृष्ट और गर्हित बना रखा है। ऐसी भयानक मनोभूमि और ऐसे पापपूर्ण व्यवहार के रहते हुए कैसे आशा की जा सकती है कि मनुष्य अपने जीवन लक्ष्य परमानंद को प्राप्त कर सकता है।

इन सब विकारों और विपरीतताओं का एकमात्र कारण है—अध्यात्मवाद की उपेक्षा। यदि संसार के साथ आत्मा का भी ध्यान रखा जाये, उसके विकास और मुक्ति का प्रयत्न करते रहा जाये तो शीघ्र ही इन सारे भव-रोगों से मुक्त होकर मनुष्य आनंद की ओर अग्रसर हो चले। आत्म-लाभ ही सर्वश्रेष्ठ लाभ माना गया है, उसी को प्राप्त करना श्रेय है और उसी को पाने के लिए प्रयत्न भी किया जाना चाहिए।

आर्ष अध्यात्म का उज्ज्वल स्वरूप

मानव-जीवन को उत्कृष्टता की-पूर्णता की-लक्ष्य प्राप्ति की अंतिम मंजिल तक पहुँचाने का एकमात्र उपाय अध्यात्म ही है। इससे लोक और परलोक की सार्थकता सुनिश्चित होती है। परलोक में स्वर्ग और मुक्ति का लाभ उसे ही मिलता है, जो अपने अंतःकरण को आध्यात्मिक आदर्शों के अनुरूप ढाल लेने में सफल होता है। आत्म-साक्षात्कार, ईश्वर-दर्शन एवं ब्रह्म प्राप्ति की उपलब्धि का एक ही मार्ग है कि आत्मा पर चढ़े मल-आवरण विक्षेपों को हटाकर उसे शुद्ध स्वरूप में विकसित किया जाए। लौकिक जीवन का प्रत्येक क्षेत्र उसी के लिए मंगलमय बनता है, जिसने अपने गुण, कर्म, स्वभाव एवं दृष्टिकोण को परिष्कृत कर लिया है। श्रेय पथ पर चलने वाले लोग ही महापुरुष बनते हैं और इतिहास में अपना अनुकरणीय आदर्श छोड़ जाते हैं। यश शरीर को अमर बनाने का सौभाग्य ऐसे ही लोगों को मिलता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुदृढ़ स्वास्थ्य, समर्थ मन, स्नेह-सहयोग, क्रिया-कौशल, समुचित धन, सुदृढ़ दांपत्य, सुसंस्कृत संतान, प्रगतिशील विकास-क्रम, श्रद्धा-सम्मान, सुव्यस्थित एवं संतुष्ट जीवन का आधार केवल एक ही है—अध्यात्म। अपने को सुधारने से संसार सुधर जाता है। अपने को ठीक कर लेने से चारों ओर का वातावरण ठीक बनने में देर नहीं लगती। यह एक निश्चित तथ्य है कि जो अपने को सुधार न सका, अपनी गतिविधि को सुव्यवस्थित न कर सका, उसका इहलौकिक और पारलौकिक भविष्य अंधकारमय ही बना रहेगा। जो इस लोक को नहीं संभाल सका, उसका परलोक क्या संभलेगा, जो इस जीवन में नारकीय मनोभूमि लिए बैठा है, उसे परलोक में स्वर्ग मिलेगा, ऐसी आशा करना व्यर्थ है। स्वर्ग की रचना इसी जीवन में करनी पड़ती है, दुष्प्रवृत्तियों के भव-बंधनों से इसी जीवन में मुक्त होना पड़ता है। परलोक में यही सफलताएँ साकार बन जाती हैं। इसलिए मनीषियों ने मनुष्य की सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को ही माना है।

आज सब कुछ औंधा और विकृत हो रहा है। अध्यात्म की भी दुर्गति हो रही है। अनात्मवादी, मानव-जीवन को पतित करने वाली हेय मान्यताएँ अध्यात्म का आवरण ओढ़े बैठी हैं, जो कोई उनके चंगुल में फँस जाता है उसी की दुर्गति होती है। जीवन के क्रमिक विकास का सुनिश्चित मार्ग तथा घर छोड़कर लोग भाग खड़े होते हैं। अस्त-व्यस्त जीवन, नशेबाजी, आलस्य, प्रमाद, विचित्र वेश-विन्यास, संसार को मिथ्या कहने का फैशन यही आज के अध्यात्मवादी महात्माओं का स्वरूप है। जो उनके चँगुल में फँस जाता है, उसे भी यही छूत लगा देते हैं। गृहस्थी का अध्यात्म और विलक्षण है, वे किसी तंत्र-मंत्र की दस-पाँच माला फेरकर लाखों-करोड़ों रुपये मूल्य के वरदान पाने के लिए देवताओं की मनौती मनाते रहते हैं। दर्शन, स्नान, कथा, वार्त्ता जैसे छोटे-छोटे कर्मकांडों द्वारा जन्म भर के किए पापों के दंड से बच निकलने की तरकीब ढूँढते रहते हैं। उनके लिए स्वर्ग-मुक्ति एक बाल-कल्पना मात्र होती है, जो छोटा-सा कर्मकांड कर लेने मात्र में सहज ही मिल जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन भोले लोगों को ऐसे ही प्रलोभन देकर तथाकथित धर्मध्वजी ठगते, खाते रहते हैं।

इस प्रवंचना में आज लाखों व्यक्ति भटक रहे हैं। उन्हें लाभ तो मिलना ही क्या था—धन और समय की बर्बादी ही हो सकती थी, सो होती रहती है। कागज के बने नकली शेर से मनोरंजन मात्र हो सकता है, असली सिंह के गुण उसमें कहाँ होते हैं ? असली अध्यात्म के द्वारा लोक-परलोक का जो मंगलमय प्रतिफल मिल सकता था, वह इस विकृत, औंधे एवं नकली अध्यात्म के द्वारा कैसे संभव हो सकता है ? इस मार्ग पर चलने वालों की असफलता को देखते हुए सर्वसाधारण के मन में उसकी ओर से विरक्ति, उपेक्षा एवं अनास्था पैदा हो रही है। अब धर्म और अध्यात्म की चर्चा को नाक-भौं सिकोड़ते हुए ही सुना जाता है। हर समझदार व्यक्ति अपने बच्चों को उससे दूर रखने का प्रयत्न करता है, ताकि वे भी इस भ्रम-जंजाल में फँसकर अपना भविष्य अंधकारमय न बनाने लगें।

प्राचीन काल में ऐसी बात नहीं थी। लोग अपने छोटे बालकों को ऋषियों के आश्रमों में पढ़ने को इसलिए भर्ती करते थे कि अध्यात्म का पारस स्पर्श करके उन लोहे जैसे बालकों को शोभायमान स्वर्ण बनने का अवसर मिलेगा। आग के संपर्क में जो भी वस्तु आती है गरम हो जाती है। अध्यात्म के संपर्क में आने वाले मनुष्यों का भी तेजस्वी, मनस्वी और यशस्वी होना स्वाभाविक है। जीवन की दिशा ठीक कर देने और उस परिष्कृत दृष्टिकोण से जिंदगी जीने की प्रकाश-प्रेरणा का नाम ही तो अध्यात्म है। जिसे यह कल्पवृक्ष मिल गया उसे किसी बात की कमी नहीं रहती। जिसने इस अमृत को पा लिया उसे किसी अतृप्ति का कष्ट नहीं सहना पड़ता। अध्यात्म का प्रकाश जिसके भी हृदय में प्रकाशवान् हो उठा, उसके चेहरे पर संतोष, उल्लास, आशा एवं श्रेष्ठता की किरणें निश्चित रूप से बिखरी पड़ी होंगी। शोक-संताप उसे छू भी न गये होंगे। उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र सुविकसित बन रहा होगा। वाणी तथा क्रिया में श्रेष्ठता टपक रही होगी और उसका व्यक्तित्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी उत्कृष्टता से दूसरे अनेकों को बल एवं प्रकाश प्रदान कर रहा होगा।

असली अध्यात्म का स्वरूप आज लुप्तप्राय बन चुका है। जिसने अपने जीवन में आध्यात्मिक आदर्शों को उतारा हो ऐसे मनीषी ढूँढ़े नहीं मिलते। धर्म ग्रंथ पढ़ने-सुनने की कथा-वार्ता एवं पूजा-पाठ की वस्तु बन गये हैं, उसमें जिस जीवन-निर्माण का बिखरा हुआ प्रशिक्षण है, उसे आज की स्थिति के अनुरूप किस प्रकार कर्म रूप में परिणत किया जाए ? उसके द्वारा प्राप्त होने वाली सफलताओं को प्रत्यक्ष करके कैसे लोगों को उस महत्ता के लिए प्रभावित एवं आकर्षित किया जाए, इसका कोई विधान सामने नहीं है। प्राचीन काल की भाँति आज भी अध्यात्म को अपनाकर मनुष्य अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को सुविकसित बना सकता है, उसकी कोई प्रत्यक्ष प्रक्रिया कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती। बातूनी प्रतिपादन अब किसी के गले में नहीं उतरते, क्योंकि अध्यात्म के नाम पर अत्युक्तिपूर्ण बातें इतनी अधिक कही जा चुकी हैं कि उन पर विश्वास करने का सहसा किसी को भी साहस नहीं होता।

इस अभाव की पूर्ति की जानी चाहिए। अध्यात्म को अपनाने से लौकिक जीवन कितना सफल और समुन्नत हो सकता है, इसे व्यवहार में प्रत्यक्ष करके दिखाया जाए, तभी इस महान् विज्ञान की उपयोगिता लोग समझ सकेंगे और उसे अपनाने के लिए उत्साहपूर्वक अग्रसर हो सकेंगे।

आर्ष मान्यताओं के अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप क्या है और उसे पूजा-पाठ तक सीमित न रखकर मस्तिष्क की प्रत्येक विचारणा और क्रिया की प्रत्येक हलचल में कैसे ओतप्रोत किया जाए, जिससे मानव-जीवन स्वर्गीय विभूतियों से भरा-पूरा दिखाई देने लगे, यह प्रत्यक्षवाद के माध्यम से सिखाया-समझाया जाना चाहिए। इसके बिना वह अनास्था मिट न सकेगी, जिसके कारण लोग इस महान् तत्त्वज्ञान को निरुपयोगी समझकर उससे दूर हटते चले जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस प्रकार हम देशव्यापी अन्य समस्त विकृतियों के परिशोधन और अभावों की पूर्ति के लिए अनेकों प्रयत्न कर रहे हैं, उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि अध्यात्मवाद के वर्तमान विकृत स्वरूप को हटाकर आर्ष अध्यात्मवाद का उज्ज्वल स्वरूप सर्व साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए। निःसंदेह यह कठिन कार्य है, क्योंकि पिछले एक हजार वर्ष के अंधकार युग में विदेशी षड्यंत्र के अंग बनकर लोगों ने अध्यात्म के नाम पर इतना कूड़ा-कचरा जमा कर दिया है, जिसके नीचे हमारा प्राचीन आदर्श और प्रबुद्ध दर्शन एक प्रकार से दब ही गया है। भाग्यवाद, पलायनवाद, निराशावाद, उपेक्षावाद, पराधीनतावाद, अकर्मण्यतावाद, दीनता और जो कुछ बुरे-से-बुरा हो रहा हो, उसे ईश्वर इच्छा मानकर सहन करना यही मुख्यतया अध्यात्मवाद के नाम पर कहा-सुना गया है।

क्षणभंगुरता, पग-पग पर मौत का भय दिखाकर, व्यक्तिगत और सामूहिक कर्तव्यों को माया बताकर, सब कुछ छोड़कर भजन करने की ही शिक्षा दी गई है। सुधार, संघर्ष और सेवा-कार्यों को अहंकार बताया गया है और कहा गया है कि यह कार्य मनुष्य नहीं ईश्वर ही कर सकता है। इस प्रकार के विचारों के पीछे विदेशी शासकों के अत्याचारों को संतोषपूर्वक सहने की मनोभूमि प्रस्तुत करना ही एकमात्र उद्‌देश्य था। भावनाशील व्यक्तियों को उपेक्षावादी-एकांतसेवी बनाकर ही तो जनता को नेतृत्वविहीन किया जा सकता था। जरा-जरा से छोटे-छोटे कर्मकांड करके पापों के फल से बच निकलने का प्रलोभन देकर जातीय जीवन में दुश्चरित्रता का प्रवेश हो सकता है और इसी प्रकार तो कोई जाति सामूहिक रूप से निस्तेज की जा सकती थी। एक ओर तलवार से और दूसरी ओर इस पलायनवादी दर्शन से भारतीय समाज को निरस्त किया गया। तभी तो इतने लंबे समय तक इतने बड़े जनसमूह पर मुट्‌ठी भर लोग इतना नृशंस शासन कर सकने में समर्थ हुए।

तथाकथित धर्माचार्यों को, संत-महंतों को इन्हीं दिनों पौ बारह करने के अवसर मिले। हर एक चतुर साधु-बाबाजी ने अपने नाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के संप्रदाय खड़े किये और अपनी सिद्धि, चमत्कारों की किंवदंतियाँ फैलाई। आश्चर्य यह होता है कि इन सिद्ध-चमत्कारी संतों से किसी ने यह न कहा कि आप इतने सामर्थ्यवान् हैं तो इस अत्याचारी शासन से छुटकारे का प्रबंध तो कर दीजिए। उन दिनों भोली जनता बुरी तरह दिग्भ्रांत होती रही और अगणित प्रकार के अध्यात्मवादी विचारों को अध्यात्म के नाम पर गले उतारती रही। आज भी परंपराओं की दुहाई देकर इसी अंधकार युग की भ्रांतियों को अध्यात्म माना जा रहा है। जुआ, सट्टा बताने वाले, नशेबाज बाबाजी और मुफ्त का माल लूटने के लालची, अंधविश्वासी आज भी अंधे-कोढ़ी की जोड़ी बने बैठे हैं और जहाँ-तहाँ उन्हीं के नाम पर अध्यात्मवाद की कूड़ा-गाड़ी लुढ़क रही है।

यह स्थिति निश्चित रूप से बदली जानी चाहिए। हमें उस प्रबुद्ध अध्यात्म की जानकारी जनसाधारण को करानी चाहिए, जिसके स्पर्श मात्र से लोहे को पारस छूने की प्रतिक्रिया होती है। सच्ची अध्यात्म की मान्यताएँ और भावनायें मनुष्य में यदि थोड़ी-सी भी प्रवेश कर सकें तो वह निश्चित रूप से संयमी, सदाचारी, प्रसन्न, चित्त, निर्भय, उदार और सद्गुणी बनेगा। जिसमें इन गुणों का प्रवेश हो सका वह जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति करेगा और प्रस्तुत कठिनाइयों में से प्रत्येक को अपने पुरुषार्थ द्वारा परास्त करके, निज की तथा समाज की सुख-शांति की संभावना अनेक गुनी बढ़ा सकने में समर्थ होगा। भारतीय व्यक्तित्व का स्तर और अपने समाज का स्तर ऊँचा उठाने के लिए, अध्यात्म की मान्यताओं को गहराई तक जनमानस में उतार देना ही एकमात्र उपाय हो सकता है। इससे पूर्व वर्तमान विकृतियों का परिशोधन कर, आर्ष अध्यात्म का उज्ज्वल स्वरूप निखारकर लोगों के सामने रखना होगा। प्राचीन धर्मशास्त्र में वह सब कुछ मौजूद है, पर आवश्यकता इस बात की है कि उसे सुव्यवस्थित रूप से क्रमबद्ध किया जाए, जिससे सर्व साधारण के लिए उसकी उपयोगिता को समझ सकना संभव हो सके। साथ ही उसका प्रत्यक्ष स्वरूप भी प्रस्तुत करना होगा। आर्ष अध्यात्म के प्रशिक्षण-प्रचार का व्यावहारिक स्वरूप देने वाले रचनात्मक कार्यक्रमों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की व्यवस्था करनी होगी। अध्यात्म तत्त्वज्ञान की सेवा में ऋषियों के सारे जीवन लगते थे, वे जानते थे कि मानव-कल्याण का यही एकमात्र उपाय है। आज यदि हममें से भी कुछ लोग वर्तमान दुरावस्था को सुधारने और आर्ष अध्यात्म को समुज्ज्वल रूप में प्रस्तुत करने के लिए कुछ करने को कटिबद्ध हो सकें तो निश्चय ही देश, धर्म, समाज और संस्कृति की भारी सेवा संभव हो सकेगी।

लौकिक सुखों का एकमात्र आधार

अनेकों गुत्थियों और समस्याओं के साथ मनुष्य का जीवन उलझा हुआ है। उन्हें वह सुलझाना चाहता है और शांतिपूर्वक रहना चाहता है, पर वे सुलझ नहीं पातीं। कारण यह है कि समस्याओं का वास्तविक स्वरूप एवं सुलझाने का सही तरीका मालूम न होने से इस प्रकार के प्रयत्न किए जाते हैं, जो जड़ की उपेक्षा करके पत्तों को सींचने के समान हास्यास्पद सिद्ध होते हैं।

परमात्मा सबका पिता है। उसे अपने सभी पुत्र समान रूप से प्यारे हैं। वह सबका हित और कल्याण चाहता है और सभी के लिए समान स्नेह से सुख-साधन एवं सुविधाएँ प्रदान करता है। किंतु देखा जाता है कि कितने ही व्यक्ति दुःखी और कितने ही सुखी हैं। इस भिन्नता का कारण कोई बाहरी व्यक्ति, परिस्थिति, ग्रह, नक्षत्र या देव-दानव नहीं वरन् वह स्वयं ही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। प्रारब्ध और आकस्मिक हानि-लाभ जो कि दैवी अनुग्रह या कोप समझे जाते हैं, वस्तुतः हमारी अपनी निज की कृति ही हैं। भूतकाल में हमने जो कुछ शुभ-अशुभ कर्म किये हैं, वे ही आज प्रारब्ध बनकर सामने खड़े होते हैं। पूर्व कृत शुभ कर्मों का जब सुखद परिपाक सामने आता है, तब वह दैवी कृपा जैसा लगता है और जब अशुभ कर्मों का दुःखदायी परिणाम सामने आता है तो वह ईश्वरीय कोप या भाग्यहीनता जैसा प्रतीत होता है। वस्तुतः अपनी प्रत्येक भली-बुरी परिस्थिति का उत्तरदायित्व स्वयं अपने ऊपर ही होता है। सुख और दुःख देने की शक्ति बाहर की अन्य किसी सत्ता में नहीं, वह तो व्यक्ति स्वयं ही है, जो अपने लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुभ-अशुभ परिस्थितियों का निर्माण किया करता है। मकड़ी अपना जाला स्वयं ही बुनती है और उसमें स्वयं ही उलझी रहती है। मनुष्य भी अपनी परिस्थितियों का जाला स्वयं बुनता है और वह स्वयं ही उसमें फँसता रहता है।

इस तथ्य को हम जितना ही अधिक हृदयंगम करते हैं, उतना ही यह निश्चय होता जाता है कि अध्यात्म ही इस संसार का सबसे बड़ा, सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्वज्ञान है। यही सबसे बड़ी शिक्षा और यही सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता है। जिस आधार पर हमारे सुख-दु:ख की, उत्थान-पतन की, संतोष-संताप की धुरी घूमती है, उस पर ही सबसे अधिक ध्यान देने को आवश्यकता है। जड़ को सींचने से जब पत्ते हरे होवें तो हर कुम्हलाये हुए पत्ते को अलग-अलग सींचने या उन पर हरा रंग पोतने का श्रम करने से क्या लाभ ? अनेकों प्रकार की गुत्थियाँ और परेशानियाँ हमारे सामने रहती हैं। यदि उनका उलझना और सुलझना हमारी आंतरिक स्थिति पर ही निर्भर है तो बाह्य उपचारों की अपेक्षा अपने आंतरिक स्तर का सुधार करने का ही प्रयत्न क्यों न किया जाए ?

हर कोई सुखी रहना चाहता है। प्रचुर मात्रा में वैभव और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहता है। पर यह भूल जाता है कि इन्हें प्राप्त करने का स्वस्थ आधार पुण्य ही है। अतीत के शुभ कर्म ही कालांतर में ऐश्वर्य और वैभव बनकर सामने आते हैं। किसी समय जिनने शुभ कर्मों पर, पुण्य-परमार्थों पर अधिक श्रम किया था, वे आज उसका प्रतिफल सुख-सामग्री के रूप में उपलब्ध कर रहे हैं। कई व्यक्ति अनीति से भी धन कमाते या बड़े बनते देखे जाते हैं, पर वह दृष्टि-भ्रम ही है।

अनीति का परिणाम तो राजदंड, ईश्वरीय दंड, अपयश और दु:ख ही हो सकता है। इसके विपरीत जिन्हें इससे लाभ मिल रहा है उनके बारे में यह विचित्र संयोग ही बन पड़ा है कि एक ओर वे पाप कर्म करके अपने भविष्य को बिगाड़ने में लगे हुए हैं और दूसरी ओर पूर्व संचित शुभ कर्मों का उदय होने से सुख-सफलता भी मिल रही है। एक ओर पाप कर्मों को करना, दूसरी ओर पूर्वकृत शुभ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मों के सत्परिणामों का उदय होना—यह एक ऐसा विचित्र संयोग है कि मनुष्य भ्रम में पड़ जाता है और समझने लगता है कि पाप कर्मों में से ही यह लाभ कमा लिया गया। यदि वस्तुतः ऐसा ही होता तो सभी दुष्ट कर्म करने वाले फलते-फूलते और सुख-सौभाग्य प्राप्त करते। पापियों में से कुछ थोड़े ही ऐसे होते हैं, जो लाभदायक स्थिति में रहते हैं, अधिकांश तो दुःख-दारिद्र्य में ही पड़े रहते हैं।

यह एक बहुत बड़ा और नितांत भ्रम ही है कि पाप कर्मों द्वारा सुख-साधन जुटाये जा सकते हैं। संयोगवश यदि पूर्वकृत सुकृतों का फल पाप कर्म करने के साथ ही मिलने भी लगे तो भी उन दुष्कृत्यों के कारण मन में इतनी अधिक जलन होती है कि उस लाभ से होने वाली प्रसन्नता उसके सामने बहुत ही तुच्छ सिद्ध होती है। ऐसे लोग कुछ कमाई कर लेने पर भी पश्चात्ताप और संताप की आग में ही जलते रहते हैं।

सुख-संपत्ति का, श्री-समृद्धि का, वैभव-ऐश्वर्य का, एकमात्र आधार पुण्य है। जिन्हें सुख-साधनों की इच्छा हो उन्हें सत्कर्म करने चाहिए। यह सत्कर्म करने की प्रवृत्ति मात्र अध्यात्म विचारधारा से ही उत्पन्न होती है और किसी प्रकार नहीं। इसलिए यह सुनिश्चित तथ्य मान ही लेना होगा कि यदि किसी को वस्तुतः सुखी रहने की आकांक्षा हो, यदि कोई इसका ठोस और वास्तविक आधार प्राप्त करना चाहता हो तो उसे सन्मार्ग ही अपनाना होगा। सद्भावों को ही धारण करना होगा, सत्कर्मों को ही करना होगा और यह तभी संभव है, जब मनःक्षेत्र में अध्यात्म विचारधारा की सुदृढ़ स्थापना हो। विचारों से ही क्रिया उत्पन्न होती है। प्रेरणा से ही प्रवाह बनता है। पुण्यपरमार्थ की दिशा में विचार और प्रेरणा देने का कार्य आध्यात्मिकता पर ही निर्भर है। यही सुख की एकमात्र कुंजी है, जिसने इसे जाना और माना उसका सुख सुरक्षित है, उसके लिए दुःख-दैन्य का कोई कारण शेष नहीं रह जाता।

देखते हैं कि आज सभ्य कहे जाने वाले वर्ग में अध्यात्म के प्रति उपेक्षा ही नहीं, तिरस्कार भी है। जो व्यक्ति अध्यात्म की, लोक-परलोक की, ईश्वर-आत्मा की, भजन-पूजन की बात करता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह मूर्ख समझा जाता है। उसका मखौल बनाया जाता है। इस खेदजनक स्थिति का एकमात्र कारण यही है कि अध्यात्म का शुद्ध स्वरूप आज हमारी आँखों के आगे नहीं है। जिस तत्त्वज्ञान का अवलंबन करके प्राचीन काल में इस देश का प्रत्येक व्यक्ति नररत्न, महामानव, पुरुषार्थी, पराक्रमी, सद्‌गुणी, मनस्वी, दीर्घजीवी, निरोग, संपन्न, सुखी-समृद्ध एवं सभी दिशाओं में सफल होता था। राजा अपने राजकुमारों को, श्रीमंत अपने लाड़लों को, ऋषियों के आश्रमों में जिस अध्यात्म की शिक्षा प्राप्त करने भेजते थे और जिसे सीखकर वे पृथ्वी के देवता बनकर लौटते थे, वह अध्यात्म आज कहाँ है ? यदि अपनी वह प्राचीन काल वाली उपयोगिता आध्यात्मिकता ने आज भी उपस्थित की होती तो निश्चय ही उसका गौरव और सम्मान अक्षुण्ण रहा होता। जिस प्रकार भौतिक विज्ञान का आज कोई तिरस्कार नहीं कर सकता। उसकी उपयोगिता और वास्तविकता के आगे सभी को सिर झुकाने के लिए विवश होना पड़ता है, वैसे ही यदि अध्यात्म विज्ञान भी अपने शुद्ध स्वरूप को कायम रख सका होता तो घर-घर में उस महाविज्ञान का सम्मान होता। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको अध्यात्मवादी होने से गर्व अनुभव करता।

परंतु आज तो स्थिति ही दूसरी है। जैसे हर चीज की नकल चल पड़ी है, असली का स्थान हर क्षेत्र में नकली को मिलता जा रहा है, उसी प्रकार नकली अध्यात्म का भी झंडा चारों ओर फहरा रहा है। निकम्मे, निठल्ले, हरामखोर, आलसी, दुर्गणी, व्यसनी लोग बिना किसी श्रम, पुरुषार्थ, गुण एवं महानता के केवल रामनामी दुपट्टा ओढ़कर संत, महात्मा, सिद्ध, ज्ञानी और गुरु बन जाते हैं। वे कुछ राम नाम लेते हैं। इतनी मात्र विशेषता बनाकर वे जनता से अपने लिए अमीरों जैसा बढ़िया किस्म का निर्वाह, ऐश आराम और पैर पुजाने का सम्मान प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर उनकी शिक्षा को मानने वाले अपने परिवार की, समाज की, धर्म-कर्तव्यों की, जिम्मेदारियों को तिलांजलि देकर संसार को मिथ्या बताने, भाग्य पर निर्भर रहने की विडंबना में पड़ जाते हैं। ऐसे लोग सभी दिशाओं में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असफल आलसी, प्रमादी और आजीविका की दृष्टि से भी पराश्रित होते देखे गये हैं। दुनिया हर चीज का मूल्य उसके प्रत्यक्ष स्वरूप को देखकर आँकती है। अस्सी लाख 'अध्यात्मवादियों' की यूनीफार्म-धारी रजिस्टर्ड सेना तथा घर-बाजारों में रहने वाली अंध भक्तों की उससे भी बड़ी सेना के गुण, कार्य और महत्त्व को देखकर हर विचारशील को बड़ी निराशा होती है। हर समझदार आदमी अपने को तथा बच्चों को उससे छूत की बीमारी की तरह बचाने की कोशिश करता है, ताकि उसी प्रकार का घटिया जीवन उनके पल्ले भी न बँध जाए।

आज के नकली अध्यात्म का तिरस्कार होना उचित ही है। भजन भी अध्यात्म का अंग है, पर केवल मात्र भजन तक ही सीमित नहीं है। उसका वास्तविक उद्देश्य है आत्मा का सर्वांगीण विकास। ईश्वर का भजन इसमें एक बड़ा आधार है। पर आत्मसुधार, आत्म निर्माण, आत्मविकास के सुव्यवस्थित आत्म विज्ञान को अनावश्यक तुच्छ एवं उपेक्षणीय मानकर केवल मात्र भजन करते रहने से भी कुछ विशेष लाभ संभव नहीं है। ऐसे अगणित व्यक्ति देखे जाते हैं, जो भजन सारे दिन करते हैं, पूजा-पाठ में बहुत मन लगाते है, पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद-मत्सर की दृष्टि से वे सामान्य श्रेणी के लोगों से भी गये बीते हैं। इसका कारण यही है कि उनकी साधना एकांगी रही, भजन को ही उन्होंने सब कुछ माना और आत्म-निरीक्षण, आत्म-चिंतन, आत्म-शोधन, आत्म परिष्कार, आत्म दर्शन एवं आत्म कल्याण के महान् कार्य को हाथ में ही नहीं लिया। ऐसी अव्यवस्थित साधना के परिणामों से वैसी ही आशा की जा सकती है, जैसी कि आज दृष्टिगोचर हो रही है।

अध्यात्म वस्तुतः एक महान् विज्ञान है। इसे जीवन विद्या या संजीवनी विद्या कह सकते हैं। जीवन जैसे महान् कार्य का सही उपयोग करना इसी ज्ञान के आधार पर संभव होता है। किसी बड़ी जागीर, मिल, फैक्टरी, फार्म संस्था, उद्योग या विशालकाय मशीन को चलाने, सुधारने और लाभदायक स्थिति में रखने के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यदि अनाड़ी हाथों में ऐसे बड़े काम सौंप दिये जाएँ तो अनर्थ की ही संभावना रहेगी। मानव जीवन ऐसी ही एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। चौरासी लाख योनियों के बाद प्राप्त हुआ, सृष्टि का सर्वोपरि उपहार, यह सुर-दुर्लभ मनुष्य शरीर है। इसको ठीक प्रकार से जीने की जो एक सर्वांगपूर्ण विद्या है, उसे ही अध्यात्म कहते हैं, जिसने अध्यात्म का शुद्ध स्वरूप जान लिया और उसे अपना लिया उसके लिए यह मानव शरीर ऋद्धि-सिद्धियों का भंडार है। सुख-शांति का रत्न कोष है। आनंद और उल्लास का खजाना है। ऐश्वर्य और वैभव का कल्पवृक्ष है। अध्यात्मयुक्त जीवन ही वह जीवन है जिसे प्राप्त कर मनुष्य अपने आप को देवता की स्थिति में पहुँचा हुआ अनुभव करता है।

लौकिक जीवन में जितने भी सुख-साधन एवं प्रसन्नतादायक अवसर हैं, उनका मूल अध्यात्म ही है; यदि इस विचारधारा का प्रभाव मन पर न हो तो पुण्य कर्म किस प्रकार बन पड़ेंगे ? और उनके बिना सुख-साधनों से परिपूर्ण प्रारब्ध कैसे बनेगा ? स्त्री-पुत्रों का, स्वजनों-परिजनों का, सज्जन और सद्भाव संपन्न होना एक बहुत बड़ा सुख है। पर यह सुख उसे ही मिलता है, जिसने अपने स्वभाव और चरित्र को आदर्श बनाकर अपने निकटवर्ती लोगों को प्रभावित कर लिया है। दूसरों को सज्जन बनाने के लिए अपना सज्जन होना आवश्यक है।

क्रोधी बाप के बेटे अवज्ञाकारी हो सकते हैं। बालक के स्वभाव का बहुत कुछ निर्माण उसके जन्म से पूर्व हो जाता है। माता-पिता के रज वीर्य से बच्चे का शरीर बनता है और उनके स्वभाव एवं चरित्र से उसका मन विनिर्मित होता है। अच्छी संतान पैदा करने के इच्छुक माता-पिता को इसके लिए वर्षों पूर्व आत्म निर्माण की साधना करनी पडती है। अपना चेहरा कुरूप हो तो फोटो भी कुरूप ही खिंचेगा। माता-पिता का स्वभाव अव्यवस्थित हो तो उनके बालक कैसे सज्जन और सद्भावी होंगे ? बच्चों को पौष्टिक भोजन कराकर, उन्हें स्वस्थ और कपड़े, जेवर आदि से सजाकर सुंदर बनाया जा सकता है, पर उनके स्वभाव में श्रेष्ठता तो तभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयेगी जब माता-पिता अपनी श्रेष्ठता का प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उन पर डालें।

यह कार्य आध्यात्मिक विचारधारा से ओत-प्रोत दंपत्ति ही कर सकते हैं। इसलिए उत्कृष्ट प्रकार की संतान प्राप्त करना भी उन्हीं के लिए संभव होता है। कभी-कभी सज्जनों के घर में भी कुसंस्कारी बालक जन्मने के अपवाद होते तो हैं, पर मोटा नियम यही है कि जैसे भावना प्रवाह में बालक पलता है वैसे ही संस्कार उसके बनते हैं और धीरे-धीरे वह उसी ढाँचों में ढल जाता है। उपदेशों से ही बालक नहीं ढलते हैं, बल्कि श्रेष्ठ ढालने का ढाँचा एकमात्र अध्यात्म ही है।

यही बात परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर लागू होती है। पति-पत्नी में से एक भी उत्कृष्ट स्वभाव का हो तो दूसरे की अपूर्णता को बहुत हद तक दूर करके, सभी को बहुत अंशों में अपने अनुकूल बना सकता है। व्यवहार की सज्जनता से परिवार के अन्य सदस्य भी अपने अनुकूल बन जाते हैं। मित्रों और संबंधित व्यक्तियों पर भी यह बात बहुत हद तक लागू होती है।

संबंधित व्यक्ति अपने अनुकूल स्वभाव और आचरण रखें, अपने प्रति सद्भाव रखें तो उनके सान्निध्य में रहने से स्वर्ग जैसा सुख मिल सकता है। जिसके निकटवर्ती परिजन विरोधी स्वभाव रखते हैं, उसके लिए प्रत्यक्ष नरक ही है। भौतिक जीवन के इस स्वर्ग को नरक में और नरक को स्वर्ग में बदल देना हमारे अपने दृष्टिकोण एवं स्वभाव की उत्कृष्टता एवं निकृष्टता पर बहुत कुछ निर्भर है। अध्यात्म की ओर अभिमुख होकर यदि कोई मनुष्य अपने परिजनों को स्नेही एवं सहयोगी बना लेता है तो क्या यह कुछ लाभ है ? धनी होना उतना सुखकर नहीं, जितना स्नेही परिवार प्राप्त करना। वह दोनों ही सुख प्रदान करने की अनंत क्षमता अध्यात्म विद्या में सन्निहित है। ऐसी महान् विद्या की उपेक्षा करना निश्चित रूप से कोई समझदारी की बात नहीं है।

बहुत आमदनी होने पर तो कोई भी सुख-साधन इकट्ठे कर सकता है, पर अध्यात्मवादी के लिए कम आमदनी में भी धनियों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपेक्षा अधिक सुखपूर्वक जीवनयापन करना संभव है। आमदनी की मर्यादा में ही अपना बजट चलाना, फिजूलखर्चियों को त्याग देना, मितव्ययिता और विवेकपूर्वक एक-एक पाई का खर्च करना, शौकीनी और विलासिता से घृणा करते हुए सादगी को अपनाना, खर्च में दूसरों की होड़ न करके अपनी ही परिस्थितियों में संतोष रखना आदि अनेक सद्‌गुण आध्यात्मिकता की ही देन है, जो गरीबी में भी अमीरी का आनंद उपलब्ध करा सकते हैं। इन गुणों के होने पर गरीबी-गरीबी नहीं लगती और इनके अभाव में अमीरी भी रूखी, फीकी, असंतोषजनक एवं अपर्याप्त लगती है।

स्वास्थ्य की समस्या का संबंध लोग पौष्टिक आहार से जोड़ते हैं। सोचते हैं कि बढ़िया खाना मिले तो तंदुरुस्ती बढ़े। पर वास्तविकता यह है कि मानसिक स्थिति पर ही आरोग्य निर्भर रहता है। हंसमुख, चिंतारहित, सरल स्वभाव, निष्कपट, सदाचारी व्यक्ति आमतौर से स्वस्थ रहते हैं, क्योंकि उनका अंतःकरण उस आग में नहीं जलता रहता, जो स्वास्थ्य को चौपट करने में सबसे बड़ा कारण सिद्ध होती है। असंयम भी स्वास्थ्य की बर्बादी का एक महत्त्वपूर्ण कारण है जिह्वा का चटोरापन, अंटशंट चीजें अनावश्यक मात्रा में पेट में ठूसते रहने के फलस्वरूप आँतें खराब होती हैं, रक्त दूषित होता है और नाना प्रकार की बीमारियाँ जड़ जमाती हैं। ब्रह्मचर्य संबंधी असंयम शरीर को खोखला कर देता है और युवावस्था में ही बुढ़ापा लाकर अल्पायु में मरने के लिए विवश करता है। इससे शरीर का हर अंग क्षीण और दुर्बल होने लगता है और बीमारियाँ घेरती हैं।

लौकिक जीवन में आरोग्य, धन, स्नेह-सौजन्य यह तीन ही सबसे बड़ी विभूतियाँ मानी गई हैं, इन्हीं से मनुष्य अपने को सुखी अनुभव करता है। यह तीनों ही विभूतियाँ अध्यात्म के छोटे से उपहार हैं, जिन्हें सच्चे अध्यात्मवाद का कोई भी उपासक निश्चित रूप से प्राप्त कर सकता है। आंतरिक जीवन की वह सुख-समृद्धि तो इन लाभों के अतिरिक्त ही है, जिन्हें प्राप्त करने वाला अपने को सब प्रकार से धन्य और कृतकृत्य अनुभव करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म ही है सब कुछ

सृष्टि में अनेकों प्रकार के आनंददायक पदार्थ हैं, पर वे जड़ होने के कारण स्वयं किसी को किसी प्रकार का सुख-दुःख नहीं दे सकते। आत्मा की चेतना ही उन पदार्थों के साथ जब घुलती है, तब पदार्थ में रस उत्पन्न होता है और तभी वे सुखदायक लगने लगते हैं। यदि आत्मा की अनुभूति उनके प्रतिकूल हुई तो वे दुःखदायक बन जाते हैं। इस संसार में पदार्थ कोई भी ऐसा नहीं है, जो अपने आप किसी को सुख या दुःख दे सके।

संसार में अनेकों सुंदर दृश्य पदार्थ मौजूद हैं, पर यदि अपनी आँखें जाती रहीं, दिखाई न पड़े तो सृष्टि के सभी पदार्थ अदृश्य हो जायेंगे, सर्वत्र अंधकार ही छाया दिखेगा। दृश्य पदार्थों की सारी सुंदरता नष्ट हो जायेगी। संसार में बहुत-बहुत मधुर शब्दों की ध्वनि होती है। पक्षियों का कलरव, मेघ-गर्जन, मधुर-भाषण, प्रेमालाप, बालकों की तोतली बोली, गायन, वाद्य, प्रवचन आदि बहुत कुछ सुनने योग्य इस संसार में मौजूद है, पर यह सब है तभी तक जब तक अपने कानों में चैतन्यत्व जाग्रत् है। यदि कानों की सजीवता जाती रहे तो यह सारी शब्द-धारा समाप्त हो जायेगी, तब सर्वत्र नीरवता का साम्राज्य ही दीखेगा।

जिह्वा में कोई रोग हो जाये, मुँह में छाले भर जाएँ या स्वाद अनुभूति की इंद्रिय में कोई विकार आ जाए, तो फिर संसार के सुस्वादु पदार्थों में क्या विशेषता रह जायेगी ? उत्तम से उत्तम भोजन भी मिट्टी जैसे स्वादहीन लगेंगे। नपुंसकता या कोई और मूत्रेंद्रिय का रोग हो जाये तो काम सेवन की सारी सुविधायें रहते हुए भी उस संबंध में कोई आनंद शेष न रहेगा। पेट की पाचन-क्रिया काम न करे तो पौष्टिक पदार्थों का सेवन भी भला शरीर का क्या पोषण कर सकेगा ? यदि मस्तिष्क की सजीवता कुंठित हो जाए, मूढ़ता, स्मरण शक्ति का लोप, उन्माद आदि कोई रोग घेर ले तो फिर ज्ञान-संपादन के अगणित साधन होते हुए भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना क्या लाभ होगा ? तब विद्यालयों, ग्रंथों, शिक्षकों एवं अन्यान्य ज्ञान-वर्धक सुविधाओं से भी क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ?

आत्मा की सूक्ष्म चेतना सारे शरीर का नियंत्रण और संचालन करती है। उस व्यवस्था में रत्ती भर भी अंतर आ जाये तो यह सुंदर, सुगठित, स्वस्थ और सूक्ष्म लगने वाला शरीर भी भार रूप हो जाता है। साधारण-सा रोग उठ खड़ा होने पर पीड़ा और परेशानी का ठिकाना नहीं रहता। फिर कोढ़, क्षय, उपदंश, हैजा, प्लेग जैसा कोई संक्रामक-रोग हो जाए, तब तो दूसरे लोगों का सहयोग भी कठिनता से मिलता है। लोग छूत से बचने के लिए दूर-दूर रहते हैं और स्वजन-संबंधी भी परिचर्या से कतराते हैं। इस प्रकार का कोई विकार खड़ा होने पर पहले जो लोग अपने ऊपर जान देते थे, वे दूर रहने और अपना पिंड छुड़ाने का प्रयत्न करते हैं।

अपनी निज की विशेषताओं के कारण जो लोग प्रिय-पात्र थे, वे ही उन विशेषताओं के समाप्त हो जाने पर उपेक्षा करने लगते हैं। शत्रु बन जाते हैं। जिस वेश्या पर यौवनकाल में प्रेमीजन चील-कौओं की तरह मंडराते रहते थे, वृद्धा होने पर उसके पास कोई दुःख-दर्द की भी सुधि लेने नहीं आता। माता से जब तक बालक दूध तथा जीवन धारण करने की सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए उस पर निर्भर रहता है, तब तक उससे अत्यधिक प्रेम करता है। माता जरा-सी देर के लिए भी बच्चे को छोड़कर कहीं चली जाए तो वह रोने लगता है। उसी की गोदी में चिपके रहने की इच्छा करता है। पर जब वही माता बूढ़ी हो जाती है, जवान बच्चे के लिए कुछ लाभदायक नहीं रहती तब बेटे का व्यवहार बदल जाता है। वह उपेक्षा ही नहीं करता बल्कि तिरस्कृत करने लगता है।

यह परिस्थितियाँ बताती हैं कि आत्मा की सजीवता, सूक्ष्मता और सुदृढ़ स्थिति ही एकमात्र वह तथ्य है, जिसके कारण पदार्थों और व्यक्तियों का सहयोग, सुख और स्नेह प्राप्त होता है। इसमें कमी आने पर व्यवहार ही बदल जाता है। अपने-पराये हो जाते हैं, मित्र शत्रु में बदल जाते हैं। अपने पास धन बहुत हो, पर उसकी रखवाली के लायक शक्ति शेष न रहे तो वह धन ही प्राणों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग्राहक बन जाता है। स्वजन-संबंधी भी मरने की प्रतीक्षा देखते हैं और चोर-डाकुओं का लालच बढ़ जाता है। वे किसी बलवान् और सुरक्षासंपन्न के ऊपर आक्रमण करने की अपेक्षा दुर्बलों को ही अपना शिकार बनाते हैं। अशक्त व्यक्ति के लिए धन उसकी जान का ग्राहक है। रूपवती स्त्री भी उसके लिए विपत्ति ही है। कारोबार, व्यापार आदि में अनेक प्रतिद्वंद्वी खड़े हो जाते हैं। अपनी मनमानी करने में जिसको भी वह कमजोर व्यक्ति कुछ बाधक लगता है, वही उसे काँटा समझकर रास्ते में से हटाने की कोशिश करता है। दुर्बल काया पर अगणित रोगों का आक्रमण होता है। बीमारियाँ उसे अपना घर बना लेती हैं। मरने पर तो इस देह को जल्दी से जल्दी घर से निकाल बाहर करने और उसे नष्ट करने की व्यवस्था करनी पड़ती है।

यह बातें अचरज की नहीं, स्वाभाविक हैं। रोज ही आँखों के सामने इस प्रकार की घटनायें घटित होती रहती हैं। संस्कृत में एक उक्ति है, जिसका अर्थ है, "दैव भी दुर्बल के लिए घातक सिद्ध होता है।" जितना बल है, जीवन है, प्राण है—उसके उतने ही सहायक और प्रशंसक हैं। जब इनमें कभी आरंभ हुई कि अपने, बिराने बनने लगते हैं और मित्र शत्रु का रूप धारण करने लगते हैं। दुर्बलता को देखकर अकिंचन जीव भी आक्रमण करने और आधिपत्य जमाने की चेष्टा करते हैं। रणक्षेत्र में घायल और अर्धमृत हुए सैनिकों की आँखें कौए निकाल ले जाते हैं और सियार उनका पेट चीरकर आँतें खींचते-फिरता है। यदि वह सैनिक इस दशा में न होता, स्वस्थ और जीवित होता तो इन कौए और सियारों की हिम्मत पास आने की भी न पड़ती वरन् उससे डरकर अपने प्राण बचाने के लिए भागते-फिरते। जीवित मनुष्य जिन चींटियों को पैरों से कुचलता रहता है। मृत होने पर वे ही चींटियाँ उस शरीर को नोंच-नोंचकर खाने लगती हैं। गुलाब-सा सुंदर शरीर वृद्ध या रोगी होने पर कुरूप एवं घृणास्पद बन जाता है।

यह सब बातें बताती हैं कि जब तक जीवन तत्त्व की प्रचुरता है, तभी तक इस संसार के पदार्थ उपयोगी अनुकूल एवं सहायक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्ध होते हैं। जब प्राण घटा तभी स्थिति बदलने लगती है और शक्ति के क्षीण होते ही सब कुछ प्रतिकूल हो जाता है। जो अग्नि मनुष्य की जीवन भर सेवा-सहायता करती रही, भोजन पकाने, सर्दी मिटाने, प्रकाश देने आदि कितने ही प्रयोजनों में जीवन संयोगिनी की तरह सहायक रही, वह अग्नि शरीर के मृतक हो जाने पर उसे जला डालने के लिए चिता की ज्वालाओं के रूप में धू-धू करती है। नौकर के बूढ़े होते ही नौकरी से हटा दिया जाता है, बूढ़ा बैल कसाई के यहाँ अपनी गर्दन कटाने को विवश होता है, रूप और यौवन के लोभी भौंरे जवानी ढलते ही पुष्प पर मंडराना छोड़ देते हैं। निर्धन का कौन मित्र बनता है ? दुर्बल की कौन प्रशंसा करता है ? अशक्त को किसका आश्रय मिलता है ?

जितना ही गंभीरतापूर्वक सोचा जाए, उतना ही यह तथ्य स्पष्ट होता है कि अपनी आंतरिक जीवन-शक्ति ही विभिन्न पदार्थों के ऊपर प्रभाव डालकर उन्हें चमकीला बनाती है, अन्यथा वे सब स्वभावतः कुरूप हैं। कोयला काला, कुरूप और निस्तेज है, पर जब अग्नि के संपर्क में आता है, वह भी तेज और उष्णता से भरपूर अग्नि जैसा दीखने लगता है। आत्मा ही अग्नि है। वह जिस पदार्थ के साथ जितने अंशों में घुली-मिली रहती है, वह उतना ही प्रिय-पात्र एवं हितकारी बन जाता है। आत्मा का संबंध जितना ही शिथिल होता जायेगा, वह उतना ही व्यर्थ, अप्रिय एवं अनुपयोगी लगने लगेगा।

जिस मकान, जायदाद, कोठी, मोटर, धन, जेवर, घोड़ा-गाय के प्रति अपनी ममता है, मोह है, स्वामित्व की अनुभूति है, वह बहुत ही प्रिय लगते हैं। उनकी सुरक्षा एवं सुंदरता के लिए निरंतर ध्यान रहता है। उन पर गर्व भी होता है। पर यदि यह वस्तुएँ बिक जायें, पराई हो जायें तो उनकी ओर से उपेक्षा हो जाती है। किसी दूसरे के अधिकार में जाने के बाद वे भले ही आँखों के सामने बनी रहें, जहाँ पहले थीं भले ही वहीं रहती रहें, पर उनके प्रति कुछ भी आकर्षण न रहेगा। ऐसा क्यों हुआ ? यदि वस्तुओं से प्रेम रहा होता तो पराई होने पर भी पहले की भाँति प्रिय लगती रही होतीं। इस प्रेम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उपेक्षा में केवल आत्म भाव का ही अंतर होता है। आत्मा अपने आपको प्यार करती है। जिस चीज में आत्मा का प्रकाश झलकता है अपनापन अनुभव होता है—केवल वही प्रिय लगती है।

पड़ौसी के सुंदर बच्चे भी अपने लिए कोई मूल्य नहीं रखते, पर अपने कुरूप बालक भी प्राणप्रिय लगते हैं। पड़ौसी के बच्चे बीमार पड़े या मर जाएँ तो भी अपने को कुछ कष्ट नहीं होता, पर यदि अपने बालक को थोड़ा भी कष्ट हो तो भारी चिंता हो जाती है और उसे निरोग बनाने के लिए भारी दौड़ धूप एवं बहुत धन खर्च करने में भी संकोच नहीं होता। अपने परिवार के प्रति जो ममता रहती है, वह पड़ौसियों के प्रति, अजनबियों के प्रति कहाँ दृष्टिगोचर होती है ? अपने गुणहीन स्वजन भी बिराने गुणवान् व्यक्तियों से अधिक महत्त्वपूर्ण एवं मूल्यवान् लगते हैं। क्या पदार्थ, क्या व्यक्ति सभी का प्रिय-अप्रिय है, लगना उनकी विशेषताओं पर नहीं है, अपनी ममता और आत्मीयता पर निर्भर है। जिसकी जैसी अभिरुचि है उसे वैसे ही दृश्य, पदार्थ या व्यक्ति पसंद आते हैं। संसार में सभी कुछ होता रहता है, सभी कुछ मौजूद है, पर अपने को अच्छा वही लगेगा, जिसमें अपनी अभिरुचि होगी। सुखानुभूति का अभिरुचि से, पसंदगी से संबंध है। एक आदमी को दूध पसंद है तो दूसरे को शराब प्रिय लगती है। यहाँ दूध और शराब के गुण-दोषों का प्रश्न नहीं, प्रश्न केवल अभिरुचि का है, जिसके कारण बुरी वस्तुएँ भी अच्छी लगने लगती हैं और अच्छी चीज बुरी प्रतीत होती हैं।

इस संसार में वस्तुतः कोई भी वस्तु न तो आकर्षक है और न सुंदर, यहाँ सब कुछ जड़ व पंचतत्त्वों का परायण है, जो सर्वथा निर्जीव, निष्ठुर और निस्सार है। प्रिय केवल आत्मा है। आत्मा की आभा ही अपना विस्तार जहाँ-जहाँ करती है, वहीं प्रियता मधुरता, सुंदरता, सरसता का अनुभव होता है। आत्मा जितना बलवान् है उसी अनुपात से दूसरे पदार्थ या प्राणी अपने लिए उपयोगी एवं सहायक रहते हैं। यह तथ्य सत्य से नितांत परिपूर्ण है। मोटे रूप से इसे हर कोई जानता भी है, किंतु कैसा आश्चर्य है कि जानते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी हम सब अनजान बने हुए हैं। आत्मा के महत्त्व को भुलाये बैठे हैं और पदार्थों के पीछे पागल बने फिरते हैं।

वस्तुओं की, व्यक्तियों की, साधनों की परिस्थितियाँ अपने सुख-दुःख का कारण मानी जाती हैं। उन्हें बदलने या सुधारने के लिए प्रयत्न किया जाता है। पर क्या कभी यह भी सोचा है कि अपनी आंतरिक स्थिति में हेर-फेर किये बिना, क्या बाह्य परिवर्तन हमारे लिए अभीष्ट परिणाम उपस्थित कर सकेंगे ?

इस कुरूप संसार में सुंदरता कहाँ ? यदि सौंदर्य का अजस्त्र दर्शन करना हो तो अपनी अंतरात्मा में सौंदर्यानुभूति का विकास करना होगा, इस परिवर्तन के साथ ही हर वस्तु सुंदर दीखने लगेगी। इस निर्जीव, निष्प्राण, निष्ठुर दुनिया में प्रेम कहाँ ? यदि प्रेम की प्यास है तो अपनी आत्मा में भरे हुए प्रेम के अमृत को चारों ओर बिखेरना पड़ेगा। उसके छींटे जहाँ कहीं भी पड़ेंगे वहाँ सब कुछ प्रेमास्पद ही दीखने लगेगा। इस दुखरूप जड़ जगत् में भोगने योग्य क्या है ? सब कुछ स्वाद रहित है। स्वाद तो अपनी इंद्रियों में बसी हुई रसना में है। रसना नष्ट हो जाने पर यहाँ स्वादिष्ट रह ही क्या जायेगा ? यदि स्वाद की लालसा हो तो अपनी शुद्ध रसना को जाग्रत् करें, हर पदार्थ रसमय लगने लगेगा।

हम निर्धन क्यों रहें ? अपने सीमित धन को ही अपना मानने की अपेक्षा सारी संपदा को अपने माँ-बाप (परमात्मा) की ही जायदाद क्यों न मानें ? हम मित्रों का, पुत्रों का, स्वजनों का अभाव क्यों अनुभव करें ? इस सारी वसुधा को ही कुटुंब क्यों न मानें ? हम असहाय एवं दुर्बल क्यों रहें ? अपनी आत्मा में भरे हुए अनंत बल को ही विस्तृत एवं विकसित क्यों न करें ? यह विकास जितना ही अग्रगामी होगा, उतने ही अनुपात में संसार हमारे लिए सहायक एवं उपयोगी प्रतीत होने लगेगा।

अपने अंदर बहुत कुछ है। बहुत कुछ ही नहीं, सब कुछ भी है। बाहर तो केवल भीतर की छाया मात्र है। इस अंदर के बहुत कुछ को ढूँढ़ना, सुधारना, बनाना और बढ़ाना यही अध्यात्म का महत्त्व है। जो कुछ इस संसार में सुख, सौंदर्य, सहयोग, प्रिय, मधुर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाभ, संतोष, आनंद एवं उल्लास दिखाई देता है, वह सब अपने भीतरी तत्त्व का ही छाया दर्शन है। छाया के पीछे न भाग कर हम उद्‌गम का आश्रय ग्रहण करें, यही अध्यात्म है, यही अध्यात्म का संदेश है।

आध्यात्मिक जीवन इस तरह जियें

इस जीवन के बाद मनुष्य का एक और भी जीवन है, जो कि इस जीवन से लाखों-करोड़ों गुना लंबा है। कितने वर्षों, युगों और कल्पों तक वह जीवन चलता है, इसका अनुमान संभव नहीं है। वह एक प्रकार से अपनी अपरिमित अवधि के कारण अनंत और अमर ही कहा जा सकता है। उसे पारलौकिक जीवन कहा गया है।

पारलौकिक जीवन के विश्वास में संदेह की गुंजायश अब नहीं रह गई। आज का विज्ञान भी मनुष्य की रहस्यों को खोजता हुआ, कुछ ऐसे निष्कर्ष पर पहुँच रहा है, जिसमें पारलौकिक जीवन के प्रमाण मिले हैं। किंतु भारतीय ऋषि-मुनियों ने तो अपनी साधना, अपने ज्ञान और अपनी तपस्या के आधार पर इसका बहुत पहले पता लगाकर घोषणा कर दी थी और सारा भारतीय जीवन उसको ही लक्ष्य मानकर, उसको ही दृष्टि में रखकर निर्धारित किया गया है। पारलौकिक जीवन को अदृष्टिगोचर रखकर लौकिक जीवन नहीं जिया जा सकता और जो ऐसा करते हैं, अनियोजित तथा अबूझ जीवन जीते हैं, वे धोखा खाते हैं और अपने उस अनंतावधि जीवन के लिए काँटे बो लेते हैं।

लौकिक जीवन पारलौकिक जीवन की तैयारी का अवसर है। इसको ही यथार्थ अथवा अंतिम जीवन मान लेना भारी भूल है। मनुष्य यहाँ इस जीवन में जो कुछ पाप-पुण्य, दुःख-सुख, भलाई-बुराई, स्वार्थ-परमार्थ संचय करता है, वही उसके साथ जाकर उस पारलौकिक जीवन में फलित तथा प्रस्फुटित होता और उसी के अनुरूप जीवन अनंतकाल तक सुख-दुःख अथवा स्वर्ग-नरक भोग करता है। वर्तमान जीवन अनागत जीवन की तैयारी का एक ही अवसर है। इस तथ्य को कभी न भूलना चाहिए और उसको सुखद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा संतोषप्रद बनाने के लिए, यहीं अभी से तैयारी कर लेनी चाहिए।

जीव का जागतिक जीवन अविश्वसनीय तथा नश्वर है। इसे नष्ट तो होना ही है, पर साथ ही यह भी पता नहीं कि यह सौ वर्ष तक जायेगा या इसी क्षण अथवा अगले क्षण छूट जायेगा। इस नश्वरता और क्षणिकता के प्रमाण बनकर न जाने कितने ही अकस्मात् मरने वाले आँखों और कानों के सामने से गुजरते रहते हैं। सोते हुए, खाते हुए, पीते हुए, हँसते हुए, बोलते हुए, खेलते और काम करते हुए, न जाने कितने जीव नित्य ही इहलीला समाप्त कर अपने दीर्घकालीन पारलौकिक जीवन में प्रवेश करने और यहाँ का लेखा-जोखा भोगने के लिए चल देते हैं। बेटा बैठा रहता है, पत्नी खड़ी रहती हैं, संबंधी देखते रहते हैं, संपत्ति और संचय पड़ा रहता है, पर आवाज लगते ही पंछी पूरी-अधूरी योजनायें, कार्यक्रम, बातचीत और व्यवहार-बर्ताव सब कुछ छोड़कर उड़ जाता है।

अस्तु, इस जीवन का कुछ पता नहीं कि यह किस समय अपनी गति को मति में बदल दे। इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि इसकी क्षणभंगुरता को स्वीकार कर तुरंत इसी क्षण में अपने पारलौकिक जीवन की तैयारी में संलग्न हो जाएँ। जो बिना संबल, संचय किये अनंत प्रवास में चला जायेगा, उसे अनंत कष्ट होंगे, यह निश्चय है। वहाँ यहाँ जैसी स्वाधीनता और सुविधा नहीं है, जो यहाँ से न भी ले जाएँ, वहाँ बना लेंगे, संचय कर लेंगे। वहाँ तो यहाँ साथ लिए पाथेय के बल पर ही अवधि यापन करनी होगी। वहाँ न सत्कर्म का अवसर मिलेगा और न अपकर्म का। वहाँ तो केवल यहीं के कर्मों के अनुसार आपको आपका संचय दे दिया जायेगा, जिसके आधार पर फिर चाहे आपको आनंद भोगना पड़े और चाहे यातनायें।

यहाँ का संचय किया हुआ वह संबल क्या है, जो वहाँ काम आना है ? वह संबल है—पुण्य-परमार्थ, निर्मोह और निर्लिप्तता। पुण्य-परमार्थ का अर्जन सत्कर्मों और उसके साथ लगी हुई सद्भावना से होता है। यदि सत्कर्म के साथ सद्भावना का संयोग नहीं है तो उस सत्कर्म का पुण्य परास्त हो जायेगा। एक मनुष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी दुःखी की सहायता करता है, पर भावना यह रखता है कि ऐसा करने से वह मुझे अमीर और उदार समझेगा, मेरा आभारी होगा और यथासंभव मेरी पूजा-प्रतिष्ठा करेगा, समाज में जो देखेगा, सुनेगा, वह मुझे सम्मान देगा, मेरा आदर करेगा, जिससे समाज में मेरा स्थान बनेगा। बस, उसका सत्कर्म दूषित हो गया, उसका पुण्य ऋणित हो गया, ऐसा सत्कर्म पारलौकिक जीवन में संबल बनकर काम न आ सकेगा।

यह पुण्य बनकर संबल तब बनेगा, जब सहायता करने के पीछे कोई भाव ही नहीं रहे और यदि रहे तो यह भाव रहे कि अमुक व्यक्ति हमारी तरह ही मनुष्य है। हमारा भाई है। उसकी आवश्यकता, उसकी तकलीफ और उसका कष्ट, हमारा कष्ट है। हमारी सहायता पाना इसका नैसर्गिक अधिकार है और सहायता करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। मेरे पास जो कुछ है, वह सब प्राणी मात्र की धरोहर है, जो सबको उचित प्रकार से मिलनी ही है। मेरा इस पर कोई आभार नहीं, बल्कि इसका ही आभार मुझ पर है, जो मेरी सेवा, मेरी सहायता स्वीकार करने की कृपा कर रहा है। इस प्रकार अहंकार रहित सत्कर्म ही पारलौकिक जीवन के संबल बना करते हैं।

किंतु यह निरहंकार भावना कैसे प्राप्त हो ? इसके लिए भी उपाय करना होगा और वह उपाय है—उपासना अथवा ईश्वर की प्रतीति। संपूर्ण आत्म-समर्पण के साथ परमात्मा की उपासना करते-करते जब व्यक्ति के हृदय में उसका प्रकाश आ विराजेगा, तब उसे सारा जड़-चेतनमय संसार परमात्म रूप ही दीखने और अनुभव होने लगेगा। उसका 'स्व' सार्वभौम हो जायेगा। ऐसी स्थिति में उसे किसी से पृथकता का अनुभव ही न होगा। स्वयं सहायक-सहायतार्थी, सहायता और परिणाम सबका सब ईश्वर रूप ही दिखाई देगा। ऐसी दशा में उसे न तो यह पता चलेगा कि वह किसी की सहायता कर रहा है या कोई उससे सहायता पा रहा है।

पारलौकिक जीवन की तैयारी में निर्मोह, निर्लिप्तता अथवा अनासक्ति की साधना भी आवश्यक है। इस असार संसार से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माया-मोह लेकर जाने वाले उस पार के अपार जीवन में बड़ी सघन यातना के भागीदार बनते हैं। वे माया-मोह के कारण रो-रोकर प्राण छोड़ते और तड़प-तड़प कर संसार से विदा होते हैं, वे वहाँ भी अपनी उस अंतिम स्थिति के अनुसार रो-रो और तड़प-तड़प कर जीवन बितायेंगे। मनुष्य की अंतिमांतिम स्थिति इस बात का स्पष्ट विज्ञापन है कि उसे उस पारलौकिक जीवन में किसका भागी बनना होगा ? यदि वह निर्लिप्तावस्था में हँसता-खेलता हुआ गया, तब तो समझना चाहिए कि वहाँ हँसता-खेलता ही रहेगा और यदि रोता-सिसकता हुआ विदा हुआ तो वहाँ भी रोता-सिसकता रहेगा। इसमें दो संभावनायें नहीं हो सकतीं।

इस जीवन के दुःखद अंत का सबसे बड़ा और अमोघ कारण आसक्ति के कारण संबंधियों के बिछुड़ने पर वियोगजन्य दुःख का घेरा पड़ना है। आसक्ति के कारण ही थोड़ी-सी असफलता, निराशा की घटाएँ घिर आती हैं। आसक्ति के कारण ही जरा-सी उपेक्षा प्रतिहिंसा की आग जला देती है और आसक्ति के कारण ही धन-वैभव के लिए पाप-कर्मों में संलग्न हो जाते हैं। अस्तु आसक्ति ही को सारे दुःखों का मूल कारण मानना और उससे छूटने का उपाय करना चाहिए।

आसक्ति बड़ा भयंकर रोग है, फिर चाहे वह पुत्र-पत्नी के प्रति हो, धन-दौलत के प्रति हो, सुहृद-सहचरों के प्रति हो, देह अथवा अभिरुचियों के प्रति हो। इस रोग से बचकर ही मनुष्य एक निरामय एवं निर्भय जिंदगी जी सकता है और निश्शंक अंत अपना सकता है।

जिस भय के कारण लोग कायर-कुचाली और कापुरुष बन जाते हैं, उसकी जननी आसक्ति ही है। देहासक्ति के कारण ही लोग इस भय से उसके रंजन-मंजन में लगे रहते हैं कि कहीं यह बूढ़ी न हो जाए, कहीं इसकी शक्ति न चली जाए, कहीं भोग वासना के अयोग्य न हो जाये। इसी भय के कारण ही उसे विविध-पदार्थों और पट-परिधानों की पूजा-पगार चढ़ाते रहते हैं। वे पता नहीं, यह क्यों नहीं सोच पाते कि यह नश्वर मिट्टी एक दिन मिट ही जानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। इस पर कितना ही चंदन-वंदन क्यों न चढ़ाया जाए, कितनी ही मनौती और मिन्नतें क्यों न की जाएँ, समय पाकर यह बूढ़ी तथा कुरूप ही हो जायेगी। आवश्यकता से अधिक शरीर को मान्यता देने का कारण यह देहासक्ति ही है।

इस निःसार देहासक्ति के कारण मनुष्य न तो दृढ़तापूर्वक साधना कर पाता है और न नियम-संयम का निर्वाह। अधिक साधने अथवा बाग खींचने से कहीं यह निर्बल न हो जाये—अधिक संयम, नियमों से उसको कष्ट होगा, परमार्थ पथ पर डाल देने से इसके भोग-विलास के अधिकार छिन जायेंगे आदि-आदि न जाने कितनी कल्पनायें मनुष्य को देहाराधक बना देती हैं।

इस देहासक्ति से मनुष्य की बड़ी गहरी हानि होती है। देह को प्रधानता मिलते ही आत्मा पीछे रह जाती है। आत्मा के गौण होते ही अज्ञान का घना अंधकार घेर लेता है और तब उस अंधकार में इस मानव जीव की जो-जो दुर्दशा होती है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उसे भय, संशय, संदेह तथा आशंकाओं की डायनें हर समय सताया करती हैं। एषणायें और तृष्णायें उसे एक क्षण भी विश्राम नहीं लेने देतीं। आस्तिकता, आस्था और अनागत भविष्य के सारे दीप बुझ जाते हैं और मनुष्य एक अंधेरा अंत पाकर, अनंत अंधकार में जाकर युग-कल्पों के लिए डूब जाता है।

शरीर और कुछ नहीं एक साधन मात्र है, आत्मा के उद्धार का साधन। इसकी खोज-खबर रखनी तो चाहिये, पर उसी सीमा तक जहाँ तक यह साधन रूप में आत्मोद्धार में सहायक हो सके। इसे स्वस्थ तथा सशक्त बनाये रखने के लिए जो भी जरूरी हो करिये पर इसकी इंद्रिय-लिप्सा की जिज्ञासा का कभी भी रंजन न करिये, विषय-भोग और आराम, विश्राम जिन्हें यह माँगा करता है, इसके लिए घातक तथा अनावश्यक है। इनकी सुविधा पाकर यह शरीर आलसी, प्रमादी और ढीठ बन जाता है और तब हर उस साधना में आनाकानी करने लगता है, जो आत्मा के उद्धार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक होती हैं। अस्तु देहाभिमान अथवा आसक्ति से सदा सावधान रहकर दूर रहना चाहिए।

देहासक्ति छूटते ही बाकी सारी आसक्तियाँ आपसे आप छूट जाती हैं। इसका पोषण करते हुए, इसको ठीक वैसे ही भूले रहिये, जैसे जीव इसका विसर्जन हो जाने के बाद भूल जाता है। ममता-मोह और माया के सारे संबंध देह तक ही हैं और जिस प्रकार इसके छूट जाने से संबंध भी टूट जाते हैं, ठीक उसी प्रकार इसका विस्मरण किये रहने में सारी आसक्तियाँ छूट जायेंगी और तब अंतिम समय में उनकी अनुभूति भी साथ लगी हुई न जायेगी। जीव निर्लिप्त और निर्मोहपूर्वक जाकर अनंत जीवन को ग्रहण कर लेगा।

मनुष्य का जीवन ही अंतिम नहीं है, इसके बाद एक दीर्घकालीन जीवन भी है, जिसके यापन में आवश्यक पुण्य का संबल इस जीवन में संचय करने के लिए अनासक्त भाव से कर्म करते हुए जीवन चलाइये और बाद में माया-मोह तथा आसक्ति से निर्बंध होकर संसार से यात्रा कीजिये। तभी वहाँ जाकर दीर्घकालीन सुख, संतोष की प्राप्ति होगी।

लोक का ही नहीं, परलोक का भी ध्यान रहे

यह संसार दो रूपों में विभक्त है, दृश्य और अदृश्य। दृश्य स्थूल नेत्रों से दिखाई देने वाला संपूर्ण भौतिक जगत् है। अदृश्य तत्त्व परमात्मा है, जो प्राण-रूप में सर्वत्र व्याप्त होकर विविध खेल की रचना करता है। परमात्मा सब कालों में एक-सी स्थिति में रहता है, किंतु प्रकृति परिवर्तनशील है, उसका स्वरूप बदलता रहता है; इसलिए उसे मिथ्या कहा है। सुखोपभोग की स्थूल वासना और आसक्ति की दृष्टि से उसे मिथ्या, असार या मनोमात्र कहना अनुचित नहीं है। इस संसार के विषयों में ही मनुष्य जब भटक जाता है, तब ऐसा प्रतीत होता है कि यह संसार भ्रम है, धोखा है, मृग-मरीचिका है। इनसे अलिप्त रहने में ही कल्याण है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्त्रकार ने भी कहा है—

लोक एवं विषयानुरंजन दुःखगर्भमपि मन्यते सुखम्।
आमिष बडिशगर्भमप्यहो मोहतो ग्रसति यद्वदण्डजः।।

अर्थात्—मछली जिस प्रकार मांस को देखती है, उसके नीचे छिपे हुए काँटे को नहीं। वैसे ही संसार विषयों के आकर्षण को ही देखता है, विषयों के परिणामस्वरूप अवश्यंभावी दुःख की ओर वह दृष्टिपात भी नहीं करता। जगत् का मिथ्यात्व इसी दृष्टि से है, क्योंकि यहाँ मनुष्य सुख की मृगतृष्णा में भटक जाता है और पाप करने लगता है, जिससे वह अपने जीवन लक्ष्य से पतित होकर जन्म-जन्मांतरों तक यहाँ के दुःख और कष्ट के भोग भोगता रहता है।

श्री गौडपादाचार्य ने लिखा है—

आदाबन्ते च यन्नास्ति वर्तमानेऽपि तत्तथा।
वितथैः सदृशाः संतोऽवितथा इव लक्षिता।।
स्वप्नमापे यथा दृष्टे गन्धर्व नगरं यथा।
तथा विश्व मिदं दृष्टं बबान्तेषु विचक्षणैः।।

अर्थात्—जो वस्तु उत्पति से पूर्व न रही हो, नाश हो जाने पर भी न रहती हो, किंतु बीच में सत्य प्रतीत होती हो उसको सत्य नहीं मानना चाहिए। जिस तरह स्वप्न में गंधर्व नगरी के से सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं, किंतु जाग जाने पर कुछ भी शेष नहीं रहता, संसार भी उसी तरह दृश्य मात्र है। आज इसे जिस रूप में देखते हैं—मृत्यु के अनंतर वह किसी दूसरे ही रूप में दिखाई देगा।

मनुष्य का अज्ञान जितना बढ़ता जाता है, उतना वह अपने शरीर को अधिक महत्त्व देता चला जाता है, इसी को नहलाने-धुलाने, खिलाने-पिलाने, सजाने आदि में ही सारा जीवन बर्बाद कर देता है। उसको प्रतीति होती है कि वह शरीर है, किंतु चूँकि जीवन धारण के पूर्व उसकी स्थिति शरीर नहीं थी—मृत्यु के अनंतर भी शरीर शेष नहीं रहता, केवल जीवन के क्षणों में ही वह सत्य जैसा प्रतीत होता है; इसलिए धर्माचार्यों ने बार-बार समझाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कि यह संसार और यहाँ की वस्तुयें छल हैं, प्रपंच हैं। इनमें धोखा नहीं खाना चाहिए। साधनों को निस्सार समझकर उनके पीछे भागने की अपेक्षा अपने मानव जीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

सती मदालसा ने अपने बच्चों को बड़ा मार्मिक उपदेश दिया है—

शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरञ्जनोऽसि
संसार माया परिवर्जितोऽसि।
संसार स्वप्नं त्याग मोह निद्रां
मदालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्॥

"हे पुत्र, तू मेरे वचन को सुन—तुम स्वरूप से शुद्ध, बुद्ध मुक्त हो। इस मायामय संसार के साथ गठबंधन से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। यह दिखाई देने वाला संसार स्वप्नमात्र है, इसलिए मोह रूपी निद्रा का परित्याग कर अपने शाश्वत स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न करो।" वास्तव में यह उपदेश हममें से प्रत्येक के लिए सारपूर्ण है, हम जब तक अपने आपको नहीं पहचानते तब तक इस मनुष्य शरीर का कुछ उपयोग नहीं है। इसलिए उचित है कि विषय-विकारों का परित्याग कर पारलौकिक जीवन की शोध की ओर उन्मुख हों।

परिवर्तन हमारे देखने में न आते हों ऐसा तो नहीं है, किंतु दुःख है कि उन पर विचार नहीं किया जाता। शरीर की तीन अवस्थायें जन्म, वृद्ध और मरण के अनेकानेक दृश्य प्रत्येक को देखने को मिलते हैं। यह भी सभी जानते हैं कि मृत्यु के मुख से कोई बचता नहीं, फिर भी पारलौकिक जीवन की ओर हममें से बहुत थोड़े ही उन्मुख होते हैं। अधिकांश लोग काम, क्रोध, मोह और शोक के पीछे अंत तक भटकते रहते हैं, परिणामस्वरूप जीवात्मा को मृत्यु के अनंतर यहाँ भटकते रहना पड़ता है। उससे बड़ी अशांति व असंतोष होता है, पर तब तक मानव जीवन का अलभ्य अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ से निकल गया होता है। अतः केवल पश्चात्ताप ही शेष रहता है।

इस संसार की हवा में एक बड़ा विषैला नशा है। सौंदर्य की चमक-दमक में कुछ अजीब-सा आकर्षण है, इससे मनुष्य धोखा खा जाता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी के जिस तरह से सर्प होने का भ्रम होता है, उसी तरह यहाँ के प्रत्येक पदार्थ में एक प्रकार का मोहक भ्रम भरा पड़ा है, इसी से लोग उन्हीं में भटकते रहते हैं। आकर्षण का एक रूप समाप्त होता है, दूसरा नया उससे भी आकर्षक रूप सामने आ जाता है। न पहले से तृप्ति होती है, न दूसरे से तृष्णा ही समाप्त होती है। बावला इंसान इसी रूप-छल की भूल-भुलैया में गोते मारता रहता है। उसे अपने मूल-रूप की ओर ध्यान देने का अवसर भी नहीं मिल पाता। यह स्थिति बड़ी ही दुःखद है।

वेदांत दर्शन का मत है कि आँख से दिखाई देने वाले दृश्य, नाक से सूँघे जाने वाली गंध, जीभ से चखा जाने वाला स्वाद—यह सभी मिथ्या है, परिवर्तनशील है। फूल देखने में बड़ा सुंदर लगता है किंतु मुरझा जाने पर वही कूड़ा-करकटसा लगता है। तब उसकी सुगंध भी लुप्त हो जाती है। इसी तरह वृक्ष-वनस्पति, नदी-पहाड़, पशु-पक्षी सभी बदलते रहते हैं, एक रूप में स्थिर रहने वाली कोई भी वस्तु दिखाई नहीं देती। सूर्य-चंद्रमा तक की विभिन्न कलायें प्रदर्शित होती हैं। इस परिवर्तनशील जगत् में सर्वत्र अस्थिरता और चंचलता ही है। जीवात्मा जब तक अपने परम-पद को नहीं प्राप्त कर लेता, तब तक उसे स्थायी प्रसन्नता, शाश्वत सुख और चिरस्थायी शांति नहीं मिलती। इसलिए प्रतिभासिक सत्ता को साधन मात्र समझकर अपने पारलौकिक हित-चिंतन में लगे रहना चाहिए।

जहाँ माया-मोह के विचार सहज न छूट रहे हों, वहाँ यह सोचना चाहिए कि इस मकान, जमीन, बाग-बगीचे आदि पर अब तक कितने 'दाखिल-खारिज' हो चुके हैं, पर इन्हें कोई स्थायी तौर पर प्राप्त नहीं कर सका तो हमें ही यह वस्तुयें कब तक साथ दे सकेंगी ? सांसारिक खेल-मात्र में इन सभी वस्तुओं की उपादेयता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, इन्हें इसी रूप में ही देखना भी चाहिए और अपने चरम-कल्याण में तत्परतापूर्वक स्थिर रहना चाहिए।

इस संसार की यदि कुछ सार्थकता है तो वह परमात्मा का विराट् रूप होने से है। शास्त्रकार का कथन है—'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' इदं सर्व खलु ब्रह्म—यह जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सारा जगत् ब्रह्म रूप है। परमात्मा हमारी सेवा और पुण्यार्जन का आधार है, अतः इस संसार को भी इसी रूप में ही देखना चाहिए। इसे परमात्मा का स्वरूप समझकर सत्कर्मों द्वारा यदि कुछ प्रेरणा और प्रकाश ग्रहण कर सकें तो यह संसार ही हमारी जीवन मुक्ति में सहायक हो सकता है।

"संसार माया है"—यह कहने का तात्पर्य मनुष्य को उसके जीवन लक्ष्य की याद दिलाते रहना है। ऐसा न हो कि प्राणी सांसारिक भोग-वासनाओं में ही भटकता रहे और पारलौकिक सुख को भूल जाए, इस दृष्टि से इस संसार को स्वप्नवत् बताना उचित ही है।

सृष्टि का दूसरा स्वरूप ईश्वरमय है। वह हमारे कर्तव्यपालन के लिए है। माया-माया कहकर यदि कर्मों का परित्याग कर दिया जाए तो सारी सृष्टि व्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न हो सकती है। जीवात्मा जिन सुखों के भोग के लिए यहाँ आयी—कर्तव्यपालन के अभाव में वह भी तो पूरे नहीं होते। अतः इस संसार को परमात्मा का ही प्रतिरूप समझकर निष्काम भावना से अपने कर्तव्य-कर्मों का पालन करते रहना चाहिए। इस तरह मनुष्य इहलोक के सुख और पारलौकिक शांति सुगमता से उपलब्ध कर सकता है।

अध्यात्म और उसकी महान् उपलब्धि

प्राचीन काल में मनुष्य को अगणित सुख-सुविधायें प्राप्त थीं, उसकी शक्ति-सामर्थ्य प्रत्येक दिशा में बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। इस सुयोग का कारण और कुछ नहीं, केवल एक ही था—जीवन का अध्यात्म प्रेरणा से अनुप्राणित एवं प्रेरित होना। उस समय सब लोग अपनी भावनायें और क्रियाएँ अध्यात्म मान्यताओं एवं मर्यादाओं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुसार ढालते थे, फलस्वरूप उन्हें बाह्य जीवन में किसी प्रकार की असुविधा न रहती थी। जहाँ चंदन का वृक्ष होगा वहाँ सुगंध रहेगी ही, जहाँ अध्यात्म को आश्रय मिलेगा वहाँ शक्ति, समृद्धि और सुख-शांति की परिपूर्णता ही रहनी चाहिए।

अध्यात्म भारत की महानतम संपत्ति है। उसे मानवता का मेरुदंड कहा जा सकता है। मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक चिरस्थायी उत्कर्ष का एकमात्र आधार यही है। मनुष्य जाति की अगणित समस्याओं को हल करने और सुख-शांतिपूर्वक जीने के लिए अध्यात्म ही एकमात्र उपाय है। इस जीवन तत्त्व की उपेक्षा करने से पतन और विनाश का ही मार्ग प्रशस्त होता है। दु:ख और दारिद्र, शोक और संताप इसी उपेक्षा के कारण उत्पन्न होते हैं। मनुष्य के भविष्य को अंधकारमय बनाने वाला निमित्त इस उपेक्षा से बढ़कर और कोई नहीं हो सकता।

अध्यात्म मानव-जीवन के श्रेष्ठतम सदुपयोग की एक वैज्ञानिक पद्धति है। उसे जीवन जीने की विद्या भी कहा जा सकता है। छोटे-छोटे कार्यों की भी कोई प्रणाली एवं पद्धति होती है। उसी ढंग से चलने पर सफलता मिलती है। अस्त-व्यस्त ढंग से कार्य किया जाए तो लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। मानव-जीवन इस संसार का सर्वोत्कृष्ट वरदान है। भगवान् के पास जो कुछ विभूतियाँ हैं, वे सभी उसने मनुष्य शरीर में बीज रूप में भर दी है। ऐसे बहुमूल्य संयंत्र का सुसंचालन एवं सदुपयोग यदि ज्ञात न हो तो उसे एक दुर्भाग्य ही कहा जायेगा।

कृषि, रसायन, शिल्प, चिकित्सा, व्यापार, संगीत आदि सामान्य कार्यों के लिए उनकी निर्धारित पद्धति को अपनाना पड़ता है। राज्य व्यवस्था संविधान एवं कानून पद्धति के अनुसार चलती हैं। उन व्यवस्थाओं के प्रति अज्ञानता एवं उपेक्षा रखने वाले व्यक्ति मनमानी करते हुए चलने लगें तो उन्हें असफलता एवं निराशा का ही मुँह देखना पड़ेगा। मानव-जीवन तो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं मूल्यवान् प्रक्रिया है, उसका विज्ञान एवं विधान जाने बिना या जानकर उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर चले बिना वह आनंद एवं श्रेय नहीं मिल सकता, जो मनुष्य जीवन जीने वाले को मिलना ही चाहिए।

मानव-जीवन के दो पहलू हैं—एक आत्मा, दूसरा शरीर। एक आंतरिक, दूसरा बाह्य। दोनों में एक से एक बढ़कर विभूतियाँ एवं समृद्धियाँ भरी पड़ी हैं। आत्मिक क्षेत्र में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार चारों ही क्रमशः एक से एक बढ़कर शक्ति-संस्थान है। पाँच कोश एवं छह चक्र, अपने गर्भ में अगणित ऋद्धि-सिद्धियाँ छिपाये बैठे हैं। मस्तिष्क के मध्य भाग ब्रह्मरंध्र में अवस्थित शत-दल-कमल, हृदय-संस्थान का सूर्यचक्र, नाभिदेश में प्रतिष्ठित ब्रह्मग्रंथि, मूलाधारवासिनी महासर्पिणी कुंडलिनी का जो विवेचन योग शास्त्रों में मिलता है, उससे स्पष्ट है कि विश्व की अत्यंत महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ बीज के रूप में इन छोटे केंद्रों में भरी पड़ी हैं। योगाभ्यास द्वारा इन्हें जाग्रत् करके साधना मार्ग के पथिक अपने को अलौकिक सामर्थ्यों से सुसंपन्न सिद्ध पुरुषों की श्रेणी में पहुँचा देते हैं। ऋषि-मुनियों ने अध्यात्म विद्या के गूढ़ रहस्यों का अवगाहन कर प्रकृति की उन विस्मयकारी शक्तियों पर आधिपत्य प्राप्त कर लिया था, जो भौतिक विद्या के वैज्ञानिकों के लिए अभी भी रहस्यमय बनी हुई है।

खेदपूर्वक यह स्वीकार करना होगा कि हमारे आलस्य और प्रमाद ने योग की उन उच्चस्तरीय विद्याओं को गँवा दिया। वैज्ञानिक शोध जैसी निष्ठा में संलग्न होने वाले साधक आज कहाँ हैं ? योगी का वेश बनाकर पूजा और आजीविका कमाने वाले रंगे सियार बहुत मिलेंगे, पर सूक्ष्म प्रदेशों को जाग्रत् और परिमार्जित करने के लिए कठोर तपश्चर्या का साहस करने वाले निष्ठावान् पुरुषार्थी नहीं के बराबर दिखाई पड़ते हैं। जो हैं उन्हें बहुत कुछ मिलता भी है। जिनके आशीर्वाद प्राप्त करके मनुष्य अपना जीवन धन्य और सफल बना सकें, ऐसे ऋषिकल्प सत्पुरुष अभी भी मौजूद हैं।

प्राचीनकाल में ऋषि-मुनियों के संरक्षण में सारा विश्व ही स्वर्गीय सुख-शांति का उपभोग कर रहा था। आत्मबल की महत्ता का उच्चस्तरीय प्रकरण रहस्यमय है। कठिन और कष्टसाध्य भी है। उस मार्ग पर कम ही लोग चल पाते हैं, फिर भी यह तथ्य सुनिश्चित ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहेगा कि आत्मा के सूक्ष्म-संस्थानों की साधना, रहस्यमयी एवं चमत्कारी प्रतिफल उत्पन्न करती है। उसका अवलंबन लेकर मनुष्य अपना जीवनलक्ष्य प्राप्त करने के अतिरिक्त संसार की भी इतनी बड़ी सेवा कर सकता है, जितनी बड़ी से बड़ी भौतिक क्षमता संपन्न व्यक्तियों की सम्मिलित शक्तियों के द्वारा भी संभव नहीं।

उच्चस्तरीय सूक्ष्म-साधना का फल आकर्षक, चमत्कारी एवं आश्चर्यजनक तो अवश्य है, पर उसकी साधना भी उसी अनुपात से समयसाध्य और कष्टसाध्य है। बाल-बुद्धि के लोग यह आशा किया करते हैं कि कुछ ही दिन छोटा-मोटा कर्मकांड करके उस स्थिति की सफलता प्राप्त कर लेंगे। बरगद का पेड़ बड़ा समृद्धिशाली और चिरस्थायी माना गया है, पर उसके उगने-बढ़ने और फलने-फूलने की स्थिति तक पहुँचने में देर लगती है। उतावली में हथेली पर सरसों जमाने की बालक्रीड़ा उपहासास्पद ही सिद्ध होती है। योगाभ्यास की साधन विधियाँ भले ही बहुत कठिन न हों, पर उनके फलित होने लायक साधक की पूर्व भूमिका तो शुद्ध होनी ही चाहिए। यदि साधक का बाह्य जीवन दूषित, कलुषित, निकृष्ट एवं अस्त-व्यस्त रहा होगा तो उसे लौकिक समृद्धि, सफलता एवं सुख-शांति भी प्राप्त न हो सकेगी, ऐसी दशा में आत्मबल एवं उच्च विभूतियों की उपलब्धि की आशा तो की ही कैसे जा सकती है ?

नियम यह है कि पहले बाह्य जीवन में अध्यात्म तत्त्वज्ञान का समावेश करके उसे सुख-शांतिमय बनाया जाए। इस प्रकरण में जितनी उपासना अभीष्ट है, उतनी करते रहा जाए पर अधिक जोर बाह्य जीवन को सुसंगत बनाने के लिए ही दिया जाए। लौकिक-जीवन को सुविकसित एवं सुसंस्कृत बना लेना भी एक आध्यात्मिक साधना ही है। उसका प्रतिफल भी लौकिक सफलताओं एवं सुसंबद्धताओं के रूप में ही उलब्ध होता है। इस सफलता के बाद उच्चस्तरीय आध्यात्मिक साधना सरल हो जाती है और उनकी सफलता में भी कठिनाई नहीं आती। जो साधक जप-तप तो बहुत करते हैं किंतु लौकिक जीवन निकृष्ट बनाये रहते हैं उनको प्रायः निराश ही रहना पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कई व्यक्ति अपनी पात्रता बढ़ाने पर ध्यान न देकर समर्थ शक्तियों के उपहार स्वरूप विविध-विधि वरदान प्राप्त करने के फेर में पड़े रहते हैं। देवताओं की पूजा वे इसी उद्देश्य से करते हैं कि कम समय, कम श्रम, कम खर्च करके बड़ा लाभ प्राप्त कर लें। लाटरी लगाने वालों एवं जुआ खेलने वालों का भी यही उद्देश्य रहता है। ऐसे लोग थोड़ा खर्च करके बिना श्रम एवं क्षमता के ही विपुल धनराशि प्राप्त करने के सपने देखते हैं। इनमें से किसी बिरले की ही कामनापूर्ण होती है, अधिकांश तो निराश ही रहते हैं। देवताओं का वरदान वस्तुतः इतना सस्ता नहीं है जितना लोगों ने समझ रखा है। वे 'दर्शन' करने मात्र से प्रसन्न हो जायेंगे या अक्षत, पुष्प जैसी छोटी चीजें पाकर अपना अनुग्रह हमारे ऊपर उड़ेल देंगे, ऐसा सोचना उचित नहीं। पूजा का भी अपना महत्त्व है, उसका भी लाभ होता है। पर मूल तथ्य पात्रता है। अनधिकारी की, कुपात्र की प्रार्थना भी सफल नहीं होती। देवता या भगवान् को प्रसन्न करने का, उनका अनुग्रह उपलब्ध करने का सुनिश्चित मार्ग अपनी पात्रता बढ़ाना ही हो सकता है।

किन्हीं सिद्ध पुरुषों का समर्थ आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भी यह आवश्यक है कि वे अपना तप या पुण्य दान देकर हमारी सहायता करें, पर उसके लिए हम उपयुक्त अधिकारी भी सिद्ध तो हों। आशीर्वाद वाणी की क्रीड़ा नहीं है। उसके पीछे पुण्य या तप का अनुदान लगाया गया हो तो ही उसका कुछ प्रतिफल दृष्टिगोचर हो सकता है। इस सृष्टि में कोई वस्तु मुफ्त नहीं मिलती। हर वस्तु का मूल्य निर्धारित है। उसे चुकाने पर ही कुछ प्राप्त कर सकना संभव हो सकता है। सुख और समृद्धि की प्राप्ति पुण्य फल की मात्रा पर निर्भर रहती है। दुःख हमारी त्रुटियों और विकृतियों के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं। सुख प्राप्त करने और दुःख निवारण के लिए पुण्य एवं तप की अभीष्ट मात्रा चाहिए। वस्तु तो कीमत देने से ही मिलेगी। अपने पास वह कीमत न हो तो दूसरा भी अपनी जेब से उसकी पूर्ति कर सकता है। मूल्य हर हालत में चुकाना पड़ेगा। आशीर्वाद के साथ कोई सिद्ध पुरुष अपना तप भी देने को तैयार हो जाएँ, तो ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह आशा की जा सकती है कि उसमें कोई लाभ होगा। अन्यथा वाणी से निकले हुये केवल शब्द-भले ही वह आशीर्वाद की भाषा में कहे गये हों—किसी के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते।

जब सामान्य बुद्धि के लोग पात्र-कुपात्र का ध्यान रखते हैं, अधिकारी-अनधिकारी के भेद को समझते हैं और उसी के अनुसार निष्ठुरता एवं उदारता बरतते हैं, तो देवता और सिद्ध पुरुषों को इतना नासमझ क्यों माना जाए कि वे पात्रता की परख किये बिना, अंधाधुंध प्रार्थनाओं की पूर्ति, दर्शन-पूजन जैसे बहकावे में आकर करने लगेंगे ? स्कूलों में छात्रवृत्ति उन्हें मिलती है, जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं। उन्हीं खिलाड़ियों को पुरस्कार मिलता है, जो अपने को अधिक पुरुषार्थी सिद्ध करते हैं। ऊँचे पदों पर उनकी नियुक्ति होती है, जो अन्य साथी-प्रत्याशियों की अपेक्षा अपनी विशेषता सिद्ध करते हैं। देवता और सिद्ध पुरुष वरदान तो देते हैं, कृतार्थ तो करते हैं, पर इससे पहले लेने वाले की पात्रता परख लेते हैं। दान का यदि दुरुपयोग होने लगे तो उसका पाप दाता पर पड़ता है, इस तथ्य को वे उच्च शक्तियाँ भी जानती हैं, इसलिए प्रार्थना करने वाले की, वरदान या आशीर्वाद माँगने वाली की पात्रता को ही वे सबसे पहले परखती हैं। अनधिकारी के प्रति उनका रुख भी निष्ठुरतापूर्ण ही बना रहता है। यह उक्ति प्रसिद्ध है कि—"ईश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।" इस छोटे से वाक्य में ईश्वर की नीति और कार्यपद्धति का मर्म बिल्कुल ही स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कर दिया गया है।

ईश्वर की इस सुव्यवस्थित सृष्टि का कण-कण नियम-बंधनों में बँधा हुआ है। इतना बड़ा शासन तंत्र बिना नियत व्यवस्था के चल भी नहीं सकता। सूर्य और चंद्रमा नियत समय पर उदय होते हैं, पृथ्वी नियत मार्ग पर नियत चाल से चलती है। ऋतुयें समय पर आती हैं। बीज अपने नियम और क्रम से उगते और बढ़ते हैं। जन्म, वृद्धि और मृत्यु के चक्र में हर पदार्थ जकड़ा हुआ है। यहाँ अव्यवस्था के लिए तनिक भी गुंजायश नहीं। ईश्वर भी अपना काम तभी कर पा रहा है, जब उसने अपने आपको नियम और व्यवस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के अंतर्गत बाँध लिया है। प्राणियों को उनके शुभ-अशुभ कर्मों के आधार पर उन्नति या अवनति के प्रतिफल प्रदान करता है। यदि वह इसमें अव्यवस्था उत्पन्न करे तो सृष्टि का सारा क्रम ही बिगड़ जाए। प्रार्थना करने मात्र से मनमाने उपहार देने लगे तो फिर प्रयत्न और पुरुषार्थ करने के लिए किसी को क्या आकर्षण रह जाएगा ? फिर कर्मफल का तथ्य तो एक उपहास की बात बन जाएगा। कोई न्यायाधीश वस्तुस्थिति पर ध्यान दिये बिना प्रार्थियों की अर्जी-मर्जी के अनुरूप फैसले करने लगे, सुविधायें देने लगे तो उसे पागल ही कहा जाएगा। ईश्वर ऐसा पागल नहीं है। देवता या सिद्ध पुरुषों को भी इतना नासमझ नहीं माना जाना चाहिए कि हर किसी की उचित-अनुचित सहायता के लिए धर दौड़ें और पात्रता, अधिकार एवं कर्मफल के सुनिश्चित तथ्यों को मटियामेट करके अव्यवस्था फैला देने के दोषी बनें।

गुरुजन कृपा अवश्य करते हैं और उनके आशीर्वाद से लोगों का भला भी अवश्य होता है, पर वह कृपा विशुद्ध रूप से प्रार्थी की पात्रता पर निर्भर रहती है। देवता वरदान देते हैं। ऐसे असंख्य उपाख्यान पुराणों में मिलते हैं, पर यह स्मरण रखना चाहिए कि वे वरदान भी अंधाधुंध नहीं, किसी आधार पर मिलते हैं। असुरों ने बड़े-बड़े आश्चर्यजनक वरदान पाये थे, पर उनका मूल्य उन्होंने घोर तपश्चर्या के रूप में चुकाया भी था। हमारी तरह यदि वे भी दर्शन करके या चंदन-अक्षत चढ़ाकर थोड़ी-सी पूजा-पत्री से बड़ी-बड़ी आशायें लगाये बैठे रहते तो उन्हें भी हमारी तरह निराशा के अतिरिक्त और क्या हाथ लग सकता था ?

दैवी अनुग्रह हमारी पात्रता के आधार पर ही उपलब्ध हो सकता है; अतएव उसके लिए बहुत चिंता या बहुत खोजबीन करने की अपेक्षा, अपनी आंतरिक उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। सत्पात्रों की उचित सहायता एवं मार्गदर्शन करने के लिए ईश्वरीय नियम अपने आप काम करता रहता है और उसकी पूर्ति अनायास ही होती रहती है। गुरु ढूँढ़ने नहीं पड़ते, अधिकारी को वे अनायास ही मिल जाते हैं। पुष्प खिलते ही बिना निमंत्रण के भौंरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके आगे गुंजार करने स्वतः ही जा पहुँचते हैं। जहाँ पर जितना गहरा गड्ढा होता है, वहाँ उतना जल भर जाता है। कम गहरा गड्ढा, बड़े सरोवर के बराबर जल कैसे प्राप्त कर सकेगा ? बादलों पर 'कम देने' का दोष भले ही वह लगाया करे, पर वस्तुस्थिति यही है कि गड्ढे के उथलेपन ने ही उसे प्रचुर जलराशि संग्रह करने के लाभ से वंचित रखा। बादलों को सरोवर और गड्ढे में से किसी के साथ पक्षपात नहीं था, उन्होंने समान वर्षा की, पर लाभ उन्हें अपनी पात्रता के अनुरूप ही मिल सका। ईश्वर, देवता या सिद्ध पुरुषों से विविध-विधि वरदानों की कामना एवं प्रार्थना करने के साथ-साथ हमें अपनी पात्रता भी देखनी चाहिए और उसे बढ़ाने के लिए प्रयत्न भी करना चाहिए।

अध्यात्म की महिमा का पारावार नहीं, उसके द्वारा प्राप्त हो सकने वाले लाभों की गणना नहीं हो सकती। मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट विभूति वही है। अंतःप्रदेश में सन्निहित रहस्यमयी शक्तियों के जागरण से मनुष्य की परिणति देवता में हो सकती है। पर उस मार्ग पर चलने वाले को इतना तो ध्यान रखना ही चाहिए कि उपासना विधानों की तरह व्यावहारिक जीवन को उत्कृष्ट एवं परिष्कृत बनाना भी आवश्यक है। इसके बिना कठोर साधना निरर्थक सिद्ध होती है।

आध्यात्मिक लक्ष्य और उसकी प्राप्ति

हमारा बाह्य जीवन अनेक भागों में विभक्त होता है, पर उसकी जड़ एक ही जगह रहती है। सारे शरीर में रक्त भ्रमण करता है, पर उसका उद्गम हृदयस्थल ही होता है। आहार से पोषण सारी देह के सब अंगों का होता है। पर इस आहार का पाचन संस्थान पेट ही खराब हो जाए तो देह के किसी अंग को पोषण न मिलेगा। हृदय रुग्ण हो जाए तो रक्त-संचार की व्यवस्था बिगड़ेगी और उसका प्रभाव सारे शरीर पर पड़ेगा। इसी प्रकार मानसिक स्तर में श्रेष्ठता या निकृष्टता की प्रधानता हो जाने पर तदनुसार जीवन के समस्त भागों पर प्रभाव पड़ता है। उत्कृष्टता एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निकृष्टता की परिस्थितियाँ सामने उपस्थित होती हैं। अतएव इस तथ्य को हमें समझ ही लेना चाहिए कि बाह्य परिस्थितियों में सुधार या परिवर्तन करने की इच्छा रखने वाले को अपना आंतरिक स्तर सुधारने के लिए सबसे पहले कदम उठाना चाहिए।

आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक विभागों में बँटा हुआ जीवन अनेकों प्रकार की विभिन्न समस्याओं से आच्छादित रहता है। अगणित प्रश्न सामने उपस्थित रहते हैं और बहुत-सी उलझनें सुलझाने के लिए चिंता बनी रहती है। इसके लिए तरह-तरह के उपाय भी किये जाते हैं। कठिनाइयों को हल करने और सुविधाओं को उत्पन्न करने, असफलताओं से बचने और सफलताओं से लाभान्वित होने के लिए कौन क्या नहीं करता ? अपनी-अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार हर कोई विपन्नताओं को हटाकर संपन्नता के लिए चेष्टा करता है। पर ये चेष्टाएँ सफल तभी होती हैं जब आंतरिक स्तर में आवश्यक अनुकूलताएँ मौजूद हों। गुण, कर्म, स्वभाव के प्रतिकूल रहने पर अभीष्ट मनोरथ प्रायः नहीं ही सफल होते।

जीवन के किसी भी क्षेत्र पर दृष्टिपात करें तो असफलताओं का एकमात्र कारण व्यक्ति की आंतरिक दुर्बलतायें ही दिखाई देती हैं। आध्यात्मिक प्रगति के लिए अनेक लोग देर तक पूजा-पाठ करते रहते हैं, उनका विश्वास होता है कि अमुक कर्मकांड या विधान को अमुक समय तक अपनाये रहने पर अमुक प्रकार की आध्यात्मिक सफलता मिल जायेगी। पर उन्हें यह याद नहीं रहता कि इसके साथ ही एक भारी शर्त लगी हुई है—अंतःकरण की अनुकूलता। यदि यह शर्त पूरी न हुई तो पूजा का कष्टसाध्य एवं चिरसेवित साधन विधान भी अभीष्ट प्रतिफल उत्पन्न कर सकेगा।

आध्यात्मिक साधन विधानों के सुविस्तृत प्रतिफल और आकर्षक विधान धर्मशास्त्रों में लिखे हुए मिलते हैं। प्राचीन काल के ऐसे अगणित उदाहरण मिलते हैं, जिनमें उन साधनाओं को अपनाकर साधकों ने आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त किये हैं। अब भी ऐसे अगणित व्यक्ति मौजूद हैं, जिनकी साधना ने उन्हें उच्च स्थिति तक पहुँचाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। इन उदाहरणों को देखते हुए विश्वास करना ही पड़ता है कि साधनाओं का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है और उनके सहारे प्रगति की मंजिल तेजी से पूरी की जा सकती है। इतना होने पर भी जब ऐसे उदाहरण सामने आते हैं कि अमुक व्यक्ति लंबे समय से अमुक साधना करते रहने पर भी कुछ प्रगति न कर सका, वरन् पहले की अपेक्षा और भी हीन स्थिति को पहुँच गया तो उसका कारण तलाश करते हुए भारी असमंजस उत्पन्न होता है। किसी को भारी लाभ, किसी की उल्टी अवनति, इस परस्पर विरोधी परिणाम को हेतु सोचते नहीं बनता, सूझ नहीं पड़ता।

वस्तु स्थिति यह है कि एक व्यक्ति उच्च भावना स्तर के साथ, शुद्ध चरित्र के साथ, श्रद्धा और विश्वास के साथ, एकाग्रता और निष्ठा के साथ साधनाक्रम में संलग्न होता है। उसे अपने लक्ष्य की वास्तविकता पर पूर्ण विश्वास है। साधना की महत्ता और शक्ति के प्रति अटूट श्रद्धा धारण किये हुए है। इष्ट की प्राप्ति के लिए प्राणपण से लगा हुआ है। जो नियम-संयम आवश्यक है उन्हें बिना संकोच के पालन करता है। सत्प्रयत्नों की तुलना में प्रस्तुत कठिनाइयों को तुच्छ समझता है। अहिर्निश गंतव्य पथ का ही ध्यान रखता है और अथक प्रयत्न के साथ, धैर्य और साहस के साथ कदम बढ़ाता चलता है। फल कब मिलेगा, यह सोचता भी नहीं; वरन् साधना को ही इतनी प्रिय बना लेता है कि वह स्वयं एक वरदान प्रतीत होती है। भावना की उत्कृष्टता से प्राप्त होने वाली प्रसन्नता एवं आत्म तृप्ति को ही वह एक महत्त्वपूर्ण सिद्धि मान लेता है। इस मनोभूमि के साधक के लिए सिद्धि सुनिश्चित है। उसके प्रयत्न असफल हो ही नहीं सकते। इसी मनोभूमि के व्यक्तियों ने आध्यात्मिक जीवन का आनंद लिया है और अपने सत्प्रयत्नों का समुचित लाभ पाया है।

इसके विपरीत दूसरी उथली मनोभूमि के साधक जप, भजन, पाठ, व्रत, उपवास करते भी हैं, पर वह सब होता आधे मन से है। इन प्रयत्नों का सत्परिणाम मिलेगा भी या नहीं, इस संबंध में मन में सदा शंका और अविश्वास बना रहता है। न नियमितता रहती है और न निष्ठा। जब जो जितना बन पड़ा किया, न हो सका तो छोड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया। जिन नियमों, संयमों का पालन आत्मबल की वृद्धि के लिए आवश्यक है, उनके बारे में मन नाना प्रकार के कुतर्क करता रहता है। इस झंझट की क्या जरूरत ? यह अडंगा बेकार का है। इन विधिविधानों से क्या लाभ ? आदि। कर्तव्यों को न करने-कराने से बेचारी साधना पद्धति को ही लँगड़ी, लूली, कानी, नकटी बना लेते हैं। उस पर भी मन नहीं जमता। श्रद्धा और विश्वास के अभाव में बेगार की तरह ही इस भार को उतारा जाता है। दस दिन होने भी नहीं पाते कि पर्वत के समान कामनाओं की पूर्ति का वरदान और अष्ट सिद्धि, नव निधि की ललक बेचैनी का रूप धारण कर लेती है। अभी यह नहीं मिला, अभी वह नहीं मिला, अभी कुंडलिनी जाग्रत् नहीं हुई, अभी भगवान् के दर्शन भी नहीं हो पाये। इतने दिन तो गये अब कब तक सबर करें ? आदि बातें सोचने लगते हैं । असंतोष बढ़ता है और साथ ही अविश्वास भी। उपेक्षा आरंभ होती है और उसका अंत साधना के परित्याग के रूप में देखा जाता है।

जिनका दैनिक जीवन पाप, द्वेष, दुराचार, दुष्टता, अनीति में डूबा रहता है, कुविचारों से जिनका मन और कुकर्मों से जिनका शरीर निरंतर दूषित बना रहता है, उनका अंतःकरण भी गंदा रहेगा और उस गंदगी में दिव्य-तत्त्वों का अवतरण कैसे संभव हो सकेगा ? साधना में शक्ति तब आती है, जब श्रद्धा और विश्वास, संयम और सदाचार का पुट भी समुचित मात्रा में लगता चले। दैनिक जीवन की पवित्रता ही इस बात की कसौटी है कि किसी व्यक्ति ने अत्यधिक तत्त्वज्ञान को हृदयंगम किया है या नहीं। यह निष्ठा जिसके भीतर उतरेगी, उसके गुण, कर्म, स्वभाव में श्रेष्ठता एवं सज्जनता की मात्रा अन्य व्यक्तियों की तुलना में बढ़ी-चढ़ी ही होगी। ऐसा पवित्र और आदर्श जीवन बिताने वाले के लिए आत्मिक प्रगति नितांत सरल है। ईश्वर का दर्शन आत्म-साक्षात्कार उसके लिए जरा भी कठिन नहीं है।

इतिहास, पुराणों में ऐसी अगणित कथाएँ आती हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि सदाचारी, श्रेष्ठ आचरणों वाले और उत्कृष्ट भावनासंपन्न साधारण श्रेणी के, साधारण साधना करने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तियों को योगी, यती, तपस्वी और ब्रह्मज्ञानी लोगों की भाँति ही ईश्वर अनुकंपा एवं अनुभूति का अनुभव हुआ है। कारण स्पष्ट है कि योग-साधना का उद्देश्य केवल इतना ही है कि आंतरिक दुष्प्रवृत्तियों का शमन और संयम किया जाए। चित्तवृत्तियों के निरोध को ही महर्षि पातंजलि ने 'योग' कहकर पुकारा है। यह कार्य व्यवहार के जीवन में सत्यनिष्ठा और परमार्थ बुद्धि को स्थान देने से भी संभव हो सकता है।

शबरी, सूर, मीरा, कबीर, रैदास, केवट, गोपियाँ, नरसी, धन्ना आदि के ऐसे असंख्यों चरित्र मौजूद हैं, जिन पर विचार करने से प्रतीत होता है कि भावपूर्ण उत्कृष्ट अंतःकरण का निर्माण योगाभ्यास के अतिरिक्त व्यावहारिक जीवन को शुद्ध रखने से भी संभव हो सकता है। उच्च अंतरात्मा द्वारा की हुई स्वल्प एवं अविधिपूर्वक की गई साधना भी भारी सत्परिणाम प्रस्तुत कर सकती है। वाल्मीकि की मनोभूमि जब पलटी तो शुद्ध राम नाम ले सकने में असमर्थ होने पर 'मरा-मरा' कहते हुए, उलटा नाम जपते हुए भी ऋषित्व को प्राप्त कर सके। कसाई, गणिका, अजामिल, अंगुलिमाल, अंबपाली आदि अनेक चरित्र ऐसे मौजूद हैं, जिनमें अंतःकरण के परिवर्तन होते ही स्वल्प-साधना से भी उच्च स्थिति की उपलब्धि का प्रमाण मिलता है।

देर तक कठोर शारीरिक तपश्चर्याएँ करने पर भी, बहुत पूजा उपासना करते रहने पर भी जब आत्मिक प्रगति नहीं दिख पड़ती तो उसका एकमात्र कारण यही होता है कि अंतःकरण के विकास का प्रयत्न नहीं किया गया, केवल पूजा तक ही साधना को एकांगी एवं सीमित रखा गया। साधना को औषधि कहा जाए तो सदाचार को पथ्य मानना पड़ेगा। परहेज बिगाड़ते रहने वाला, कुपथ्य करने वाला रोगी, अच्छी औषधि खाते रहने पर भी कुछ लाभ प्राप्त न कर सकेगा। पर यदि पथ्यपूर्वक रहा जाए तो मामूली औषधि से भी रोग दूर हो सकता है। भजन के साथ परमार्थप्रियता भी आवश्यक है। भावनाओं की उत्कृष्ट स्थिति और चरित्र में आदर्शवाद की प्रक्रिया यदि परिपूर्ण रहे तो फिर साधना के असफल होने का कोई कारण नहीं हो सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्ग किसी स्थान का नाम नहीं, भावना की उत्कृष्ट भूमिका को ही स्वर्ग कहते हैं। ऊँची भावनाएँ जिस अंतःकरण में प्रवेश पा चुकी हैं; उसके लिए हर पदार्थ, हर प्राणी, हर अवसर, स्वर्गीय आनंद की अनुभूति प्रस्तुत करेगा। मुक्ति का अर्थ है—वासनाओं और तृष्णाओं के बंधनों से छुटकारा पाना और पशुता से दूर होना। स्वार्थ और संकीर्णता को जिसने ठुकरा दिया, वह जीवनमुक्त हो गया। मुक्ति का आनंद शरीर रहते हुए भी प्राप्त किया जा सकता है, सद्गति के रूप में वह मरने के बाद भी प्राप्त होता है। जीव को जो बंधन बाँधे हुए हैं, वह काम-क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर के ही तो हैं। उन्हें तोड़ते हुए मनोभूमि को उदार, विशाल, पवित्र एवं उत्कृष्ट बना लेना, मुक्ति साधन है। जिस किसी को भी मुक्ति मिली है, उसे आत्म शोधन भी करना पड़ा है।

ईश्वर सर्वव्यापी है। विश्व के कण-कण में वह समाया हुआ है। उसे देखने या प्राप्त करने के लिए कहीं दूर देश में जाना नहीं पड़ता। जो मलीनताएँ जीव और ईश्वर के बीच में दीवार बनकर खड़ी हो जाती हैं, यदि उन्हें गिरा दिया जाए तो अत्यंत निकट निवास करने वाले परमात्मा का दर्शन तत्काल हो सकता है। विवेक की आँखों से हम उसे हर वस्तु में श्रेष्ठता, जीवन एवं सौंदर्य रूप में निहार सकते हैं। सत्, चित्, आनंद स्वरूप परमात्मा, सत्य, शिव और सुंदर अनुभूतियों में सहज ही हमें परिलक्षित हो सकता है। इसके लिए हमें अपना ही अज्ञान हटाना और अपना ही ज्ञान जाग्रत् करना है। मलीनताओं के हटते ही अपना इष्टदेव अपने चारों ओर थिरकता हुआ, परमानंद की नित्य अनुभूतियों के साथ हमारे सामने आ उपस्थित होता है। उसे बाहर ढूँढ़ने जाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति किसी के लिए भी कठिन नहीं है। अपना भीतर सुधार करने पर वे सब साधन सहज ही जुट जाते हैं, जिनके आधार पर स्वर्गानुभूति, जीवन मुक्ति, शांति, सद्गति, सिद्धि एवं ईश्वर प्राप्ति की विभूतियाँ उपलब्ध हो सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-शोधन अध्यात्म का श्रीगणेश

कहावत है कि अपनी अकल और दूसरों की संपत्ति, चतुर को चौगुनी और मूरख को सौ गुनी दिखाई पड़ती रहती है। संसार में व्याप्त इस भ्रम को महामाया का मोहक जाल ही कहना चाहिए कि हर व्यक्ति अपने को पूर्ण निर्दोष और पूर्ण बुद्धिमान् मानता है। न तो उसे अपनी त्रुटियाँ सूझ पड़ती हैं और न अपनी समझ में दोष दिखाई पड़ता है। इस एक दुर्बलता ने मानव-जाति की प्रगति में इतनी बाधा पहुँचाई है, जितनी संसार की समस्त अड़चनों ने मिलकर भी न पहुँचाई होगी।

अपनी निर्दोषिता के बारे में फैले हुए व्यापक भ्रम को देखते हुए मानव जाति की मूर्खता की जितनी भर्त्सना की जाए उतनी ही कम है। सृष्टि के सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान् माना जाने वाला मनुष्य जब यह सोचता है कि—"दोष तो दूसरों में ही हैं, उन्हीं की निंदा करनी है, उन्हें ही सुधारना चाहिए। हम स्वयं तो पूर्ण निर्दोष हैं, हमें सुधरने की कोई जरूरत नहीं।" तब यह कहना पड़ता है कि उसकी तथाकथित बुद्धिमत्ता अवास्तविक है। चौरासी लाख योनियों में अनेकों दोष और कुसंस्कार जीव पर चढ़े रहते हैं, मनुष्य योनि में उसे यह अवसर मिलता है कि उन पिछली त्रुटियों और गंदगियों का परिष्कार कर सके, अपने को शुद्ध बनाने का प्रयत्न करे। इस शरीर का सबसे बड़ा उद्‌देश्य यह है कि उन मल-विक्षेप और आवरणों को ढूँढ़-ढूँढ़कर देखे, जो पिछले जन्मों की दुरावस्था में उसके गले बँधे चले आये हैं। इस ढूँढ़-खोज के पश्चात् इस बात का प्रबल प्रयत्न करे कि इन कुसंस्कारों को किस प्रकार हटाकर अपने को अधिक स्वच्छ-निर्मल एवं प्रगतिशील बनायें।

प्रगति की स्वाभाविक गति में सबसे बड़ा व्यवधान यह है कि मार्ग को रोकने वाली सबसे बड़ी बाधा का स्वरूप वह समझ नहीं पाता और न उसको हटाने का प्रयत्न करता है। पेट में दर्द है और सिर पर दवा मली जाए तो कष्ट कैसे दूर होगा ? अपने दोष-दुर्गुणों के कारण जीवन क्रम अस्त-व्यस्त बना रहता है, पर उसका कसूर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरों के मत्थे मढ़ते रहा जाए तो इससे झूठा आत्म-संतोष भले ही कर लिया जाए, समस्या का हल कहाँ संभव हो सकेगा ? कहते हैं कि भगवान् ने अक्ल की डेढ़ मात्रा पैदा की है, जिसमें से एक तो हर मनुष्य अपने में मानता है और शेष आधी में संसार का काम चलता है। इस दृष्टि दोष के कारण अपनी गलतियों का सुधार कर सकना तो दूर उलटे जब कोई उस ओर इशारा भी करता है तो हमें अपना अपमान दिखाई पड़ता है। दोष दिखाने वाले को अपना शुभचिंतक मानकर उसका आभार मानने की अपेक्षा मनुष्य जब उलटे उस पर क्रुद्ध होता है, शत्रुता मानता है और अपना अपमान अनुभव करता है तो यह कहना चाहिए कि उसने सच्ची प्रगति की ओर चलने का अभी एक पैर उठाना भी नहीं सीखा।

स्कूली शिक्षा के मूल्य पर कई व्यक्तियों को ऊँची नौकरी मिल जाती है। पूँजी होने पर ब्याज-भाड़े से या किसी ढर्रे के व्यापार को अपनाये रहने से धन कमाते रहना भी सरल हो जाता है। शरीर और मस्तिष्क की अच्छा बनावट होने से सुंदरता, चतुरता एवं कला-कौशल में निपुणता मिल जाती है। संयोग एवं परिस्थितियाँ भी किसी को सम्मानास्पद स्थिति पर ले जाकर बिठा देती हैं। इन माध्यमों से कितने ही लोग बड़े बन जाते हैं और सफलता का गर्व-गौरव अनुभव करते रहते हैं। पर यह सारे आधार बाहरी दिखावा मात्र है। संयोगवश या दुर्भाग्य से किसी कारण यह परिस्थितियाँ बदल जाएँ और सम्मान-सौभाग्य छिन जाए तो ऐसे व्यक्ति सर्वदा निस्तेज और दीन-हीन दिखाई पड़ते हैं। अपने निज के सद्‌गुण न होने के कारण परिस्थितियों के आधार पर बड़े बने रहने वाले व्यक्तियों को ही राजा से रंक और अमीर से भिखारी होते देखा जाता है। जिसमें अपने गुण होंगे वह गई-गुजरी परिस्थिति में से भी अपने लिए रास्ता निकालेगा और नरक में जायेगा तो वहाँ भी जमादार बनकर रहेगा।

सरकारी ऊँचे पदों पर काम करने वाले व्यक्ति जब सेवा-निवृत्त होते हैं तो उनमें से कितने ही मौत के दिन पूरे करते हुए शेष जीवन नीरस, निस्तेज और निकम्मा ही व्यतीत करते हैं। पद ने इन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो गौरव दिया था वह पद छिनते ही चला गया। व्यक्तिगत सद्गुणों के अभाव में अब वे एक निकम्मे-निरर्थक मनुष्य की तरह ही बने हुए रहते हैं, जिनकी कहीं कोई पूछ नहीं। किंतु यदि उनमें वैयक्तिक सद्गुण रहे होते हैं तो सेवानिवृत्त होकर अपनी स्वतंत्र प्रतिभा के आधार पर जहाँ भी रहते हैं वहीं नवीन चेतना उत्पन्न करते हैं।

प्राचीनकाल में वानप्रस्थी और संन्यासी लोग गृह-त्याग देने के पश्चात् भी समाज की असाधारण सेवा करते थे, पर आज लाखों साधू महात्मा समाज के लिए भारभूत होकर निरर्थक जीवन बिताते हैं। इसका एकमात्र कारण इतना ही होता है कि उनमें अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं हुआ होता। गुण-कर्म-स्वभाव की दृष्टि से वे पिछड़े हुए या अविकसित होते हैं। ऐसी दशा में जब तक वे गृहस्थ या उद्योग के किसी ढर्रे में फिट थे, तब तक कुछ काम कर भी सकते थे। पर वे साधन न रहने पर एकाकी-विरक्त जीवन में उन्हें शून्यता के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता।

प्रगति की जड़ व्यक्तित्व को विकसित करने वाले सद्गुणों की मात्रा पर निर्भर रहती है। वह जितनी ही अधिक होगी उतना ही व्यक्ति सुदृढ़ या उपयोगी हो सकेगा। ऐसे व्यक्ति जहाँ भी, जिस परिस्थिति में भी रहते हैं, वहीं अपनी उपयोगिता और आवश्यकता देखते हैं। हर स्थिति में उनका स्वागत और सम्मान होता है। अंधे, अपाहिज और दरिद्रों में भी कितने लोग ऐसे होते हैं, जिनकी समीपता को लोग अपना सौभाग्य समझते हैं। इसके विपरीत कितने ही साधनसंपन्न लोगों से वे भी मन ही मन घोर घृणा करते हैं, जो उनसे निरंतर लाभ उठाते रहते हैं। सद्गुण तो वह जादू है, जिसकी प्रशंसा शत्रु को भी करनी पड़ती है।

किसने, कितनी उन्नति की, इसकी सच्ची कसौटी यह है कि उस मनुष्य के दृष्टिकोण और स्वभाव का कितना परिष्कार हुआ ? किसी बाह्य स्थिति को देखते हुए उसकी उन्नति-अवनति का अंदाज नहीं किया जा सकता। कितने ही बेवकूफ और बदतमीज आदमी परिस्थितियों के कारण शहंशाह बने होते हैं, कितने ही लुच्चे-लफंगे षड्यंत्रों के बल पर सम्मान के स्थानों पर अधिकार जमाये बैठे होते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। कई ऐसे लोग जिन्हें लोग धर्म का क, ख, ग, घ सीखना बाकी है, धर्मगुरु के पद पर पुजते देखे जाते हैं। यह संसार विडंबनाओं से भरा है। कितने ही व्यक्ति अनुचित रीति से सफलता प्राप्त करते हैं और अयोग्यताओं से भरे रहते हुए भी सुयोग्यों पर हुकूमत चलाते हैं। इस विडंबना के रहते हुए भी व्यक्तित्व के विकास का, सुसंस्कारिता और श्रेष्ठता का मूल्य किसी भी प्रकार कम नहीं होता। वह जहाँ कहीं भी होगा—अपना प्रकाश फैला रहा होगा, अपनी मनोरम सुगंध फैला रहा होगा। गई-गुजरी परिस्थितियों में भी उसने अपने उत्कृष्ट दृष्टिकोण के कारण उस छोटे से क्षेत्र में नये स्वर्ग की रचना कर रखी होगी। मानवीय स्वभाव की श्रेष्ठता गुलाब के फूल की तरह महकती है, उसे मनुष्य ही नहीं, भौंरे, तितली और छोटे-छोटे नासमझ कीड़े तक पसंद कर रहे होते हैं।

बाहरी उन्नति की जितनी चिंता की जाती है, उतनी ही भीतरी, उन्नति के बारे में की जाए तो मनुष्य दुहरा लाभ उठा सकता है। आध्यात्मिक दृष्टि से तो वह ऊँचा उठेगा ही, लौकिक सम्मान एवं भौतिक सफलताओं की दृष्टि से भी वह किसी से पीछे न रहेगा। किंतु यदि आंतरिक स्थिति को गया बीता रखा गया और बाहरी उन्नति के लिए ही निरंतर दौड़-धूप होती रही तो कुछ साधन-सामग्री भले ही इकट्ठी कर ली जाए, पर उसमें भी उसे शांति न मिलेगी। कई धनी-मानी और बड़े कारोबारी व्यक्ति सामान्य स्तर के लोगों की अपेक्षा भी अधिक चिंतित और दुःखी देखे जाते हैं। कारण यही है कि कार्य विस्तार के साथ उनकी उलझनें तो बढ़ती हैं, पर उन्हें सुलझाने का उचित दृष्टिकोण न होने से उन्हें अधिक उद्विग्न रहना पड़ता है। ऐसे लोग आमतौर से निरंतर उद्विग्न रहते, कुढ़ते और झुँझलाते देखे जाते हैं। संपन्नता का सुख भी केवल उन्हें मिलता है, जिन्होंने अपना आंतरिक परिष्कार कर लिया होता है। धन का सदुपयोग करके तथा पद एवं मान द्वारा उपलब्ध प्रभाव को परमार्थ में लगाकर, ऐसे ही लोग ईश्वर-प्रदत्त सुविधाओं का समुचित लाभ उठाया करते हैं। दूसरे लोग तो सर्प की तरह चौकीदारी करते हुए निरंतर उद्विग्न रहने का उलटा भार वहन करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंतरिक परिष्कार की ओर समुचित ध्यान देना, यही बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रथम चरण है। अध्यात्म का पहला शिक्षण यही है कि मनुष्य अपने स्वरूप को समझे। यह सोचे कि—मैं कौन हूँ ? और क्या बना हुआ हूँ ? आत्म-चिंतन ही साधना का प्रथम सोपान कहा जाता है। यह चिंतन ईश्वर—जीव-प्रकृति की उच्च भूमिका से आरंभ नहीं किया जा सकता। कदम तो क्रमशः ही उठाये जाते हैं। नीचे की सीढ़ियों को पार करते हुए ही ऊपर को चढ़ा जा सकता है। शिवोऽहम्, शिवोऽहम् की ध्वनि करने से पूर्व, अपने को सच्चिदानंद ब्रह्म मानने से पूर्व हमें साधारण जीवन पर विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी और यह देखना पड़ेगा कि ईश्वर का पुत्र—जीव आज कितने दोष-दुर्गुणों से ग्रसित होकर पामरता का उद्विग्न जीवन-यापन कर रहा है। माया के बंधनों ने उसे कितनी बुरी तरह जकड़ रखा है और षड्रिपु पग-पग पर कैसा त्रास दे रहे हैं ? माया का अर्थ है—वह अज्ञान जिससे ग्रस्त होकर मनुष्य अपने को निर्दोष और सारी परिस्थितियों के लिए दूसरों को उत्तरदायी मानता है। भव-बंधनों से मुक्ति का अर्थ है—कुविचारों-कुसंस्कारों और कुकर्म से छुटकारा पाना। अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद इस संसार में और कोई नहीं हो सकता। इसका मूल्य जीवन की असफलता का पश्चात्ताप करते हुए ही चुकाना पड़ता है।

अध्यात्म मार्ग पर पहला कदम बढ़ाते हुए साधक को सबसे पहले आत्म चिंतन की साधना करनी पड़ती है। ब्रह्मचर्य, तप, त्याग, सत्य, अहिंसा आदि उच्चतम आध्यात्मिक तत्त्वों को अपनाने से पहले उसे छोटी-छोटी त्रुटियों को सँभालना होता है। परीक्षार्थी पहले सरल प्रश्नों को हाथ में लेते हैं और कठिन प्रश्नों को अंत के लिए छोड़ रखते हैं। लड़कियाँ गृहस्थ की शिक्षा गुड़ियों के खेल से आरंभ करती हैं। युद्ध में शस्त्र चलाने की निपुणता पहले साधारण खेल के रूप में उसका अभ्यास करके ही की जाती है। सबसे पहले एम० ए० की परीक्षा देने की योजना बनाना गलत है। पहले बाल कक्षा, फिर मिडिल, मैट्रिक, इंटर, बी० ए० पास करते हुए एम० ए० का प्रमाण-पत्र लेने की योजना ही क्रमबद्ध मानी जाती है। सुधार के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए सबसे पहले सत्य, ब्रह्मचर्य या त्याग को ही हाथ में लेना अनावश्यक है। आरंभ छोटे-छोटे दोष-दुर्गुणों से करना चाहिए। उन्हें ढूँढ़ना और हटाना चाहिए। इस क्रम से आगे बढ़ने वाले को जो छोटी-छोटी सफलताएँ मिलती हैं, उनसे उसका साहस बढ़ता चलता है। उस सुधार के जो प्रत्यक्ष लाभ मिलते हैं, उन्हें देखते हुए बड़े कदम उठाने का साहस भी होता है और उन्हें पूरा करने का मनोबल भी संचित हो चुका होता है।

जो असंयम, आलस्य, आवेश, अनियमितता और अव्यवस्था की साधारण कमजोरियों को जीत नहीं सका, वह षड्‌रिपुओं के असुरता के आक्रमणों का मुकाबला क्या करेगा ? संत, ऋषि और देवता बनने से पहले हमें मनुष्य बनना चाहिए। जिसने मनुष्यता की शिक्षा पूरी नहीं की, वह महात्मा क्या बनेगा ?

जप-तप आवश्यक है। आत्मकल्याण के लिए उनकी भी आवश्यकता है। पर यह ध्यान रखना चाहिए कि गुण, कर्म, स्वभाव में आवश्यक सुधार किये बिना न आत्मा की प्रगति हो सकती है, न परमात्मा की प्राप्ति। इसलिए आत्मकल्याण के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को आत्मचिंतन की साधना भी आरंभ करनी चाहिये और उसका श्रीगणेश तप-त्याग जैसे उच्च आदर्शों से नहीं, गुण-कर्म-स्वभाव का मानवोचित परिष्कार करते हुए व्यक्तित्व को सुविकसित करने में संलग्न होकर करना चाहिए।

आत्मोत्कर्ष—अध्यात्म की मूल प्रेरणा

ब्रह्म विद्या की अंतरात्मा पुकार-पुकार कर कहती है—उठो, जागो और उन्नति के लिए आगे बढ़ो। प्रकृति का हर एक परमाणु आगे बढ़ने के लिए हलचल कर रहा है। सूर्य को देखिए, चंद्रमा को देखिये, नक्षत्रों को देखिए सभी तो चल रहे हैं, यात्रा का क्रम जारी रख रहे हैं। एक क्षण के लिए भी विश्राम करने की उन्हें फुर्सत नहीं। नदियाँ दौड़ रही हैं, वायु बह रही है, पौधे ऊपर उठ रहे हैं, वृक्ष नवीन फल उपजा रहे हैं, जो पदार्थ स्थिर मालूम पड़ते हैं, वे भी अदृश्य रूप से चल रहे हैं। भूमि में रहने वाले रासायनिक पदार्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चुपके-चुपके एक जगह से दूसरी जगह को चलते हैं, शरीर के जीवन घटक (सेल्स) नित नया रूप धारण करते हैं, अन्न से आटा, आटे से रोटी बनी, रोटी का मल, मल का खाद, खाद से वनस्पति। इस प्रकार उन परमाणुओं की यात्रा जारी रहती है। प्रकृति के परमाणुओं का अन्वेषण करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि प्रत्येक विद्युत् घटक (इलेक्ट्रॉन) प्रति सेकंड सैकड़ों मील की चाल से अपनी धुरी पर घूमता हुआ आगे बढ़ रहा है। इस विश्व का एक-एक कण आगे बढ़ रहा है।

हम अपनी "जीवन की गूढ़-गुत्थियों पर तात्त्विक प्रकाश" पुस्तक में सविस्तार यह बता चुके हैं कि जीव आगे बढ़ रहा है। प्रत्येक जन्म में वह आगे ही बढ़ता जाता है। उन्नति क्रम पर निरंतर आगे बढ़ने की उसकी भूख ईश्वर-प्रदत्त है। उन्नति से संतुष्ट होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, मनुष्य को अपनी संपूर्ण अपूर्णताएँ हटाकर उतना उन्नत बनना है, जितना उसका पिता—ईश्वर है। जब तक जीवनमुक्त, ब्रह्मस्थित नहीं हो जाता तब तक यात्रा में विराम कैसा ? मंजिल में रुकना कैसा ? मामूली-सी उन्नति कर जाने पर लोग कहने लगते हैं, अब इतना मिल गया—संतोष करना चाहिए। अधिक के लिए हाय, हाय क्यों करें ? जो कुछ उपलब्ध हो गया है उतना ही बहुत है। यह अनात्मवादी विचारधारा है, ईश्वरीय इच्छा के विरुद्ध है, प्रकृति के नियमों के विपरीत है। भोजन करके मनुष्य संतुष्ट हो जाता है, उसकी भूख बुझ जाती है, फिर उससे एक लड्डू और खाने को कहा जाए तो न खा सकेगा। इसमें यह प्रकट होता है कि इस दशा में प्राकृतिक नियम और अधिक खाने का विरोध करते हैं। परंतु उन्नति में कोई संतुष्ट नहीं होता, हर व्यक्ति यही चाहता रहता है कि मैं और आगे बढ़ूँ और उन्नति करूँ।

नाक से जो हवा हम खींचते हैं, वह शरीर में अंदर जाती है, उसका ऑक्सीजन तत्त्व रक्त को लालिमा प्रदान करता है। तदुपरांत वह वायु निष्प्रयोजन हो जाती है, उसे शरीर निकालकर बाहर फेंक देता है। जब साँस खींची गई थी तब वही वायु बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयोगी थी, पर वह उपयोग पूरा होते ही उस वायु की उपयोगिता भी नष्ट हो गई। अब नई वायु चाहिए। नया साँस लेना पड़ेगा। यदि पुराने साँस पर ही सतुष्ट रहा जाए और यह सोचा जाए कि हमारे लिए तो इतनी ही वायु पर्याप्त है, ज्यादा लेकर क्या करेंगे तो यह विचार हानिकारक सिद्ध होगा, जीवन की प्रगति रुक जायेगी। ठीक यही बात उन्नति के संबंध में लागू होती है। आपने जो शक्ति पहले संपादित की थी, उसने एक हद तक आत्मा को बल दिया, ऊँचा उठाया, अब उसकी शक्ति समाप्त हो गई। एक बार भोजन किया था, उसकी उपयोगिता पूरी हो गई, वह पच गया तो नया भोजन चाहिए। एक बार साँस ली थी, वह अपना काम कर चुकी तो नई साँस चाहिए। एक समय जो उन्नति की थी, उससे उस समय उत्थान मिला। अब आगे और शक्ति प्राप्त करने के लिए और ऊँचा चढ़ने के लिए, नवीन प्रोत्साहन के लिए नई उन्नति चाहिए। एक गैलन पेट्रोल लेकर मोटर दस मील चल आई, अब उसे और आगे चलाना है तो पेट्रोल दीजिये, वरना वह जहाँ की तहाँ पड़ी रह जायेगी, आगे चलने का काम बंद हो जायेगा।

बराबर आगे बढ़ते रहने के लिए, बराबर नई शक्ति प्राप्त करते रहना आवश्यक है। आपकी उन्नति का क्रम कभी भी रुकना न चाहिए। संतोष का तात्पर्य दूसरा है, जिसे 'दार्शनिक भूलभुलैया' पुस्तक में आप पढ़ेंगे। यहाँ तो आपको इतना ही जान लेना पर्याप्त है कि आगे बढ़ने से कभी भी रुकना नहीं है। निरंतर कदम आगे बढ़ाये चलना है और महानता को बूँद-बूँद इकट्ठी करके अपनी लघुता का खाली घड़ा पूर्ण करना है। उस कर्महीन मनुष्य का अनुकरण करने से काम न चलेगा, जो पेट भरते ही हाथ-पैर फैलाकर सो जाता है और जब भूख बेचैन करती है तब करवट बदलता और कुड़कुड़ाता है। छोटी चींटी को देखिये—वह भविष्य की चिंता करती है, आगे के लिए अपने बिल में दाने जमा करती है, जिससे जीवन संघर्ष में अधिक दृढ़तापूर्वक खड़ी रहे; दस दिन पानी बरसने के कारण बिल से बाहर निकलने का अवसर न मिले तो भी जीवित रह सके। छोटी मधुमक्खी भविष्य की चिंता के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज का कार्यक्रम निर्धारित करती है। आज की जरूरत पूरी करके चुप बैठे रहना उचित नहीं, इस जन्म और अगले जन्म में आपको लगातार उन्नति पथ पर चलना है तो यह अत्यंत आवश्यक है, कि यात्रा में बल देते रहने योग्य भोजन की व्यवस्था का ध्यान रखा जाए। इस समय आप जितना बल संचय कर रहे हैं वह आगे चलकर बहुत लाभदायक सिद्ध होगा, उसकी क्षमता से भविष्य का यात्रा-क्रम अधिक तेजी और सरलता से चलता रहेगा।

योग साधना के फलस्वरूप सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, अष्ट-सिद्धि, नवनिधि के लिए लालायित होकर अनेक साधक कठोर साधनाएँ करते हैं, विजयी बनने के लिए मृत्यु की छाया में रणक्षेत्र की ओर कदम बढ़ाते हैं, स्वर्ग लाभ के लिए दुर्गम वन-पर्वतों की यात्रा करते हैं, धनी बनने के लिए एड़ी से चोटी तक पसीना बहाते हैं, बलवान् बनने के लिए थकाकर चूर-चूर करने वाले व्यायाम में प्रवृत्त होते हैं, विद्वान् बनने के लिए रात-रात भर जागकर अध्ययन करते हैं। यह उदाहरण बताते हैं कि उन्नत बनने की आवश्यकता को हमारी अंतःचेतना विशेष महत्त्व देती है और उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए हम बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने को, कठिन से कठिन प्रयत्न करने को तत्पर हो जाते हैं। नकली आवश्यकता और असली आवश्यकता की पहचान यह है कि नकल के लिए, संदिग्ध बात के लिए त्याग करने की तत्परता नहीं होती, असली आवश्यकता के लिए मनुष्य कष्ट सहने और कुर्बानी करने को तैयार रहता है। एक आदमी सिनेमा का शौकीन है, उससे कहा जाए कि एक सिनेमा देखने के बदले में तुम्हें अपनी उँगली कटवानी पड़ेगी तो वह ऐसा सिनेमा देखने से मना कर देगा, क्योंकि खेल देखने की आवश्यकता नकली है, उसके लिए इतना बड़ा कष्ट सहन नहीं किया जा सकता। परंतु यदि स्त्री, पुत्र आदि कोई प्रियजन अग्निकांड में फँस गये हों तो उन्हें बचाने के लिए जलती हुई अग्नि-शिखाओं में कूदा जा सकता है, फिर चाहे भले ही उसमें झुलसकर अपना भी शरीर चला जाए। सिनेमा का खेल देखने की आवश्यकता और प्रियजनों की जीवन रक्षा करने की आवश्यकता में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कौन असली है, कौन नकली, उसकी पहचान उसके लिए त्याग करने की मात्रा के अनुसार ही जानी जा सकती है। हम देखते हैं कि उन्नति करने की लालसा मानव स्वभाव में इतनी तीव्र है कि उसके लिए कष्ट सहता है और जोखिम उठाता है। यह भूख असली है। असली आवश्यकता में इतना आकर्षण होता है कि उसके लिए तीव्र शक्ति से प्रयत्न करने को बाध्य होना पड़ता है। मौज में पड़े रहना किसी को बुरा नहीं लगता, पर उन्नति की ईश्वरदत्त आकांक्षा इतनी तीव्र है कि उसके लिए मौज छोड़कर कष्ट सहने को तत्पर हो जाते हैं।

संतोष रखने का तात्पर्य यह है कि जब प्रयत्न करते हुए भी किसी कारणवश सफलता न मिले या अल्प मात्रा में मिले तो उस समय मानसिक विक्षेप के ऊपर काबू रखा जाए, निराशा और दुःख से बचने के लिए ईश्वरेच्छा समझकर संतोष किया जाए। उन्नति करना एक ईश्वरीय आज्ञा है, जिसका पालन करना हर विवेकशील व्यक्ति को अपना कर्तव्य समझना चाहिए। यह संसार कर्मभूमि है, कर्तव्य करने के लिए आप अवतीर्ण हुए हैं, अपने इच्छित उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करके विजयी और वैभवशाली बनने की इच्छा कीजिये और उस इच्छा को पूर्ण करने में उत्साह के साथ प्रवृत्त हो जाइए।

पिता अपने उस बच्चे को अधिक प्यार करता है, जो अधिक उद्योगी होता है। कमाऊ पूत का घर में स्वागत-सत्कार किया जाता है। पिता को उसकी कमाई नहीं चाहिए, पर उन्नति देखकर उसे संतोष होता है। एक लड़का कलेक्टर हो जाए और दूसरा भीख माँगे तो पिता जगह-जगह अपने उस लड़के की प्रशंसा करेगा, जो कलेक्टर हो गया है। भले ही उस उच्च पद का भौतिक लाभ उस लड़के को ही मिलता है तो भी पिता इसमें गर्व करता है कि मेरी एक रचना प्रशंसा के योग्य सिद्ध हुई। भिखारी लड़के के बारे में पिता मन ही मन खिन्न रहता है, उसके कार्यों से स्वयं भी लज्जित होता है, किसी से उसके बारे में चर्चा नहीं करता और अपरिचितों में यह प्रकट नहीं करता कि यह मेरा ही लड़का है। निरुद्योगी संतान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर भला कौन अभिभावक गर्व कर सकते हैं ? किन्हें उस पर प्यार हो सकता है ?

जब बालक खेल में जीतकर आता है, परीक्षा में उत्तीर्ण होकर आता है, प्रतियोगिता में पुरस्कार लेकर आता है तो पिता के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखाएँ दौड़ जाती हैं। वह बच्चे को उठाकर छाती से लगा लेता है। दूसरा मरियल लड़का जो घर बैठा-बैठा मक्खी मारा करता है, उतना प्यारा नहीं हो सकता, भले ही वह सारे दिन पिता के पैर दबाया करे या पंखा झला करे। अपने ऊपर पंखा झला जाने की अपेक्षा पिता यह पसंद करता है कि बालक चाहे उसके कुछ भी काम न आने पर स्वयं उन्नति करे, आगे बढ़े, विजय प्राप्त करे। ईश्वर भी हमसे ऐसी ही आशा करता है, वह आपको पराक्रमी, पुरुषार्थी, उन्नतिशील, विजयी, महान्, वैभवयुक्त, विद्वान्, गुणवान् देखकर बहुत प्रसन्न होता है और अनायास ही उठाकर छाती से लगा लेता है। उसे इस बात की इच्छा नहीं कि आप तिलक लगाते हैं या नहीं, पूजा-पत्री करते हैं या नहीं, भोग-आरती करते हैं या नहीं, क्योंकि उस सर्वशक्तिमान् प्रभु का कुछ भी काम इन सबके बिना रुका हुआ नहीं है। वह इन बातों से प्रसन्न नहीं होता, उसकी प्रसन्नता तब प्रस्फुटित होती है, जब अपने पुत्रों को ऊँचा चढ़ते, उन्नति करते देखता है, अपनी रचना की सार्थकता अनुभव करता है।

देखा जाता है कि जो लोग उन्नतिशील स्वभाव के होते हैं उन्हें कहीं न कहीं से आगे बढ़ाने वाली सहायताएँ प्राप्त होती रहती हैं। कभी-कभी तो अचानक ऐसी मदद मिल जाती हैं, जिसकी पहले कुछ भी आशा नहीं थी। छोटे-छोटे आदमी बड़े-बड़े काम कर डालते हैं, उन्हें अनायास ऐसे अवसर मिल जाते हैं, जिससे बहुत बड़ी उन्नति का रास्ता खुल जाता है। साधारण बुद्धि के लोग उन्हें देखकर ऐसा कहा करते हैं कि अमुक व्यक्ति का भाग्योदय हुआ, उसके भाग्य ने अचानक ऐसे कारण उपस्थित कर दिये, जिससे वह तरक्की की ओर बढ़ गया। हम इसे ईश्वर की कृपा कहते हैं। पिता अपने बालकों की आदतों और इच्छाओं को परखता है, जो लड़का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पढ़ने के लिए बेचैन है, उसे स्कूल भेजता है, जो व्यापार चाहता है उसे दुकान खुलवाता है, जो निठल्ला है उसे पशु चराने का काम सौंप देता है। व्यापार में पैसे की जरूरत समझता है तो पिता उसके लिए व्यवस्था करता है, पढ़ने वाले की पढ़ाई का खर्च जुटाता है। पढ़ाई खर्च के लिए अचानक पहुँचा हुआ मनीआर्डर देखकर कोई नादान लड़का यह ख्याल कर सकता है कि यह पैसा अकस्मात् कहीं से आ टूटा है, पर असल में इस व्यवस्थित विश्व में अकस्मात् कुछ नहीं है, सब कार्य व्यवस्थापूर्वक चल रहे हैं। पढ़ने की उत्कट इच्छा रखने वाला बालक पिता का ध्यान बलात् अपनी ओर खींचता है और उसे पढ़ाई में मदद करने के लिए बाध्य करता है। ठलुआ स्वभाव के लड़के को चरवाहा बनाकर पिता निश्चिंत है, पर उद्योगी बालक को तो वह निरालंब नहीं छोड़ सकता।

जो मनुष्य आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा करते हैं, उन्नति के लिए सच्चे हृदय से जाँफिसानी के साथ प्रयत्नशील हैं, उनके प्रशंसनीय उद्योग को देखकर ईश्वर प्रसन्न होता है, अपना सच्चा आज्ञापालक समझता है और उसे प्यार करता है। जिस पर उस परम पिता का विशेष स्नेह है, उसे यदि वह कुछ विशेष सहायता दे देता है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि—"ईश्वर उसकी मदद करता है, जो अपनी मदद आप करता है।" उन्नतिशील स्वभाव के लोगों को उनकी उचित प्रवृत्ति में सहायता करने के लिए, परम पिता परमात्मा ऐसे साधन उपस्थित कर देता है, जिनसे उनकी यात्रा सरल हो जाती है। अचानक, अनिश्चित एवं अज्ञात सहायताओं का मिल जाना इसी प्रकार संभव होता है। बाइबिल का वचन है कि "जो माँगता है उसे दिया जाता है, जो (द्वार) खटखटाता है उसके लिए खोला जाता है।" रामायण कहती है कि—"जिहि कर जिहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु संदेहू।" यह विश्व प्रभु की सर्वांगपूर्ण कृति है, यहाँ किसी वस्तु का अभाव नहीं है। सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, बशर्ते कि पाने की उत्कट लालसा के साथ तीव्र प्रयत्न भी हो। छोटा बच्चा जब घुटनों चलता है तो माता उसे खड़ा होकर चलना सिखाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह मिठाई का टुकड़ा जरा ऊँचा रखकर दिखाती है, ताकि बालक उसे लेने के लिए पैरों के बल खड़ा हो जाए। जब खड़ा होना सीख जाता है तो फल, मिठाई, खिलौना आदि का लालच देकर पैरों के बल चलना सिखाती है। माता बार-बार लालच देती है और बच्चे को प्रोत्साहित करती है, इसमें उसका यह उद्देश्य छिपा रहता है कि बच्चा घुटनों चलना छोड़कर खड़ा होना और पैरों के बल चलना सीखे, उन्नति तय करने की यात्रा को जारी रखे। परमात्मा ने हमें धन, संपत्ति, विद्वता, बल, पदवी आदि के लालच इसलिए उपस्थित किये हैं कि उनको पाने के लिए हम घोर प्रयत्न करें और उस प्रयत्न के साथ-साथ अपनी मनोभूमि को उन्नत-बलवान्-विकसित बनावें।

हम लोग उन छोटे बालकों की भाँति कार्य कर रहे हैं, जो मिठाई के लालच में खड़े होकर चलना सीखने का प्रयत्न करते हैं। भौतिक ऐश्वर्य नाशवान् हैं, थोड़ी देर ठहरते हैं, जल्दी नष्ट हो जाते हैं—यह ठीक है। वे सदा किसी के पास नहीं रहते, यह भी ठीक है, पर इसी कारण उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं छोड़ा जा सकता। मिठाई का टुकड़ा बच्चे की जन्म भर की भूख नहीं बुझा सकता, यह हमेशा रखा भी नहीं रहेगा। यह उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता, यह ठीक है, तो भी यदि बालक उसे लेने का प्रयत्न करता है तो उसे हानि नहीं वरन् लाभ ही है। छोटा टुकड़ा मिला-सही, पर कुछ न कुछ मिला तो, थोड़ी जिह्वा ने मधुरता का आनंद चखा—सही—पर चखा तो, टुकड़े को प्राप्त करने पर थोड़ी देर प्रसन्नता हुई—सही पर—हुई तो। कुछ न कुछ उसने पाया ही, गँवाया तो नहीं। अप्रत्यक्ष रूप से देखा जाए तो टुकड़े की अपेक्षा बहुत मूल्यवान् वस्तु पाई, पैरों की शक्ति बढ़ी, खड़े होने की आदत पड़ी, उन्नति करने का प्रोत्साहन मिला, आत्मविश्वास बढ़ा, मन में मजबूती आई, यह सब क्या कम लाभ हैं ?

यदि यह बालक आजकल के निराशावादियों की तरह कहता—"यह टुकड़ा तो जरा-सा है, झट पेट में चला जायेगा, इसे लेकर क्या करूँगा ? मैं इसे नहीं लेता, इसके लिए खड़ा होने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेहनत नहीं करता।" क्या ऐसे उत्तर से माता प्रसन्न होती ? क्या ऐसे विचार से उसे खुद लाभ होता ! इस तरह का सोचना सब दृष्टियों से उसी के लिए हानिकर सिद्ध होता।

भौतिक संपदा त्याज्य, घृणित या अछूत नहीं है। इंद्रियों के द्वारा जो भोग भोगे जाते हैं, वे पातक नहीं है। पेट में भूख उत्पन्न करके परमात्मा ने मनुष्य को निरंतर काम में लगे रहने का एक चक्र बना दिया है, जिससे उसका निरंतर कार्य करने का, आगे बढ़ने का क्रम बंद न होने पाए। इसी प्रकार इंद्रियजन्य अन्य भूखों की रचना हुई। कामवासना बुरी नहीं है, मानव तत्त्व के गंभीर अन्वेषकों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि साधारण श्रेणी के मनुष्यों के लिए काम सेवन आवश्यक है, इसके अभाव में कुछ शारीरिक और अनेक मानसिक रोग उपज खड़े होते हैं। संसार भर की मृत्यु गणना से स्पष्ट हो गया है कि विवाहितों की अपेक्षा विधवा एवं विधुर अल्पायु होते हैं और अधिक संख्या में मरते हैं। इससे प्रकट है कि प्राकृतिक भूख को दबाने का क्या परिणाम निकलता है। नासिका स्वच्छ वायु पसंद करती है। यदि उसकी भूख को दबाकर बदबूदार स्थान में रहेंगे तो घाटा उठाना पड़ेगा। नेत्र मनोहर दृश्य देखना पसंद करते हैं, यदि उनकी भूख को कुचलकर घृणित, अरुचिकर दृश्य देखेगें तो उसका बुरा फल भोगेंगे। प्राकृतिक भूखों की एक ऐसी कसौटी मनुष्य के पास मौजूद है, जिसकी सहायता से वह आसानी से जान सकता है कि मेरे लिए क्या ईश्वरीय आज्ञा है, क्या नहीं ? कभी मनुष्य मध्यम मार्ग छोड़कर अति की ओर भटक जाता है। यह अति ही पाप है, इसी को रोकने के लिए धर्म शास्त्रों का अंकुश है। अन्यथा स्वाभाविक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में कुछ बुराई नहीं है, छोटे-मोटे आकर्षण जो सामने आते हैं, उन्हें प्राप्त करने की इच्छा से उद्योग करें; तो इसमें हानि कुछ नहीं लाभ शारीरिक भी है और आत्मिक भी।

आप 'उन्नति करना' अपने जीवन का मूल मंत्र बना लीजिए। ज्ञान को अधिक बढ़ाइए, शरीर को स्वस्थ, बलवान् और सुंदर बनाने की दिशा में अधिक प्रगति करते जाइये, प्रतिष्ठावान् होइये,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊँचे पद पर चढ़ने का उद्योग कीजिये, मित्र और स्नेहियों की संख्या बढ़ाइए, पुण्य-संचय करिए, सद्‌गुणों से परिपूर्ण होइये, आत्म-बल बढ़ाइये, बुद्धि को तीव्र करिए, अनुभव बढ़ाइये, विवेक को जाग्रत्‌ होने दीजिये। बढ़ना-आगे बढ़ना-और आगे बढ़ना—यात्री का यही कार्यक्रम होना चाहिए।

अपने को असमर्थ, अशक्त एवं असहाय मत समझिये, ऐसे विचारों का परित्याग कर दीजिये कि साधनों के अभाव में हम किस प्रकार आगे बढ़ सकेंगे ? स्मरण रखिए-शक्ति का स्त्रोत साधनों में नहीं, भावना में है। यदि आपकी आकांक्षाएँ आगे बढ़ने के लिए व्यग्र हो रही हैं, उन्नति करने की तीव्र इच्छाएँ बलवती हो रही हैं तो विश्वास रखिए, साधन आपको प्राप्त होकर रहेंगे। ईश्वर उन लोगों की पीठ पर अपना वरद हस्त रखता है, जो हिम्मत के साथ आगे कदम बढ़ाते हैं। पिता आपकी प्रयत्नशीलता को, बहादुरी की आकांक्षा को पसंद करता है और वह चाहे तामसी ही क्यों न हो, बढ़ने में मदद करता है।

प्रकृति विज्ञान के महापंडित डॉक्टर इ० बी० जेम्स ने अनेक तर्क और प्रमाणों से सिद्ध किया है कि 'योग्यतम का चुनाव' प्रकृति का नियम है। जो बलवान्‌ है उसकी रक्षा के लिए अनेक कमजोरों को वह नष्ट हो जाने देती है। आँधी, ओले, तूफान, कमजोर पेड़ों को उखाड़ फेंकते हैं, किंतु बलवान्‌ वृक्ष जहाँ के तहाँ दृढ़तापूर्वक खड़े रहते हैं। बीमारी, गरीबी, लड़ाई के संघर्ष में कमजोर पिस जाते हैं, किंतु बलवान्‌ उन आघातों को सह जाते हैं। बड़ी मछली की जीवन रक्षा के लिए हजारों छोटी मछलियों को प्राण देने पड़ते हैं, बड़े पेड़ को खुराक देने के लिए छोटे पौधों को भूखा मर जाना पड़ता है, एक पशु का पेट भरने के लिए घास-पात की असंख्य वनस्पति नष्ट हो जाती हैं, सिंह की जीवन रक्षा के लिए अनेक पशु अपने जीवन से हाथ धोते हैं। यह कड़वी सच्चाई अपने निष्ठुर स्वर में घोषणा करती है कि जीवन एक संघर्ष है, इसमें वे ही लोग स्थिर रहेंगे, जो अपने को सब दृष्टियों से बलवान्‌ बनायेंगे। यह वीर भोग्या वसुंधरा निर्बलों के लिए नहीं है, यह तो पराक्रमियों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रीड़ाभूमि है। यहाँ पुरुषार्थियों को विजयमाल पहनाई जाती है और निर्बलों को निष्ठुरतापूर्वक निकाल बाहर किया जाता है।

सावधान होइये, गफलत को त्याग दीजिए, कहीं ऐसा न हो कि आप शक्ति-संपादन की ओर से उपेक्षा करके 'चैन करने' में रस लेने लगें और प्रकृति के निष्ठुर नियम आपको निर्बल पाकर दबोच दें। कहीं ऐसी स्थिति में न पड़ जाएँ कि निर्बलता के दंड स्वरूप असह्य वेदनाओं की चक्की में पिसने को विवश होना पड़े। इसलिए पहले से ही सजग रहिये। आत्मरक्षा के लिए सावधान होइए, जीवन संग्राम में अपने को बर्बाद होने से बचाने के लिए शक्ति का संपादन कीजिये, बलवान् बनिए, सुदृढ़ आधारों पर अपने को खड़ा कीजिए।

अध्यात्मवाद कहता है कि—ईश्वर की आज्ञा का पालन यह है कि आप आगे चलें, ऊँचे उठें। आत्मरक्षा के लिए दृढ़ता चाहिए, विपत्ति से बचने के लिए मजबूती चाहिए, भोग-ऐश्वर्यों का सुख भोगने के लिए शक्ति चाहिए, परमार्थ प्राप्ति के लिए तेज चाहिए। दशों दिशाओं की एक ही पुकार है—आगे बढ़िये, अधिक इकट्ठा कीजिये। हम कहते हैं कि आत्मोन्नति कीजिए ईश्वर को प्राप्त करने की साधनाओं को जारी रखिए, उस महान् पथ को पूरा करने की योग्यताओं को बनाये रखने के लिए सासारिक उन्नतियों को एकत्रित कीजिए; उच्च प्रतिष्ठित, शक्तिशाली और वैभववान् बनने की दिशा में सदैव प्रगति करते रहिए।

आध्यात्मिक आदर्श के मूर्तिमान देवता—भगवान् शिव

भारतीय संस्कृति में देवताओं की विचित्र कल्पनायें की गई हैं। उनकी मुखाकृति, वेष-विन्यास, रहन-सहन, वाहन आदि के ऐसे विचित्र कथानक जोड़कर तैयार किये गये हैं, उन्हें पढ़कर यह अनुमान करना भी कठिन हो जाता है कि वस्तुतः कोई ऐसे देवी-देवता हैं भी अथवा नहीं ? चार मुख के ब्रह्माजी, पंचमुख महादेव, षट्मुख कार्तिकेय, हाथी की सूँड़ वाले श्री गणेश जी, पूँछ वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हनुमान जी—यह सब विचित्र-सी कल्पनायें हैं, जिन पर मनुष्य की सीधी पहुँच नहीं हो पाती। उसे या तो श्रद्धावश देवताओं को सिर झुकाकर चुप रह जाना पड़ता है या तर्कबुद्धि से ऐसी विचित्रताओं का खंडन कर यही मान लेना पड़ता है कि ऐसे देवताओं का वस्तुतः कहीं कोई अस्तित्व नहीं है।

पौराणिक देवी-देवताओं के जो वर्णन मिलते हैं, उन पर गंभीरतापूर्वक विचार करें तो पता चलता है कि इन विचित्रताओं के पीछे बड़ा समुन्नत आध्यात्मिक रहस्य छिपा हुआ है। मानव-जीवन के किन्हीं उच्च आदर्शों और स्थितियों का इस तरह बड़ा ही कलापूर्ण दिग्दर्शन किया है, जिसका अवगाहन करने मात्र से मनुष्य दुस्तर साधनाओं का फल प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

इस प्रकार के आदर्श आदिकाल से मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। मनुष्य उनकी उपासना करता रहा है और जाने-अनजाने भी इन आध्यात्मिक लाभों से लाभान्वित हो रहा है। इन्हें एक प्रकार से व्यावहारिक जीवन की मूर्तिमान् उपलब्धियाँ कहना चाहिए। उसे जीवनक्रम में इतना सरल और सुबोधगम्य बना देने में भारतीय आचार्यों की सूक्ष्म बुद्धि का उपकार ही मानना चाहिए। जिन्होंने बहुत थोड़े में सत्य और जीवन-लक्ष्य की उन्मुक्त अवस्थाओं का ज्ञान उपलब्ध करा दिया है।

शैव और वैष्णव यह दो आदर्श भी उन्हीं में से हैं। शिव और विष्णु दोनों आध्यात्मिक जीवन के किन्हीं उच्च आदर्शों के प्रतीक हैं। इन दोनों में मौलिक अंतर इतना ही है कि शिव आध्यात्मिक जीवन को प्रमुख मानते हैं। उनकी दृष्टि में लौकिक संपत्ति का मूल्य नहीं है, वैराग्य ही सब कुछ है जबकि विष्णु जीवन के लौकिक आनंद का भी परित्याग नहीं करते।

यहाँ हमारा उद्देश्य इन दोनों स्थितियों में तुलना या श्रेष्ठता के आधार ढूँढ़ना नहीं है। शिव के आध्यात्मिक रहस्यों का ज्ञान करना अभीष्ट है, ताकि लोग इस महत्त्व का भलीभाँति अवगाहन कर अपना जीवन लक्ष्य सरलतापूर्वक साध सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिव का आकार लिंग माना जाता है। उसका अर्थ यह है कि यह सृष्टि साकार होते हुए भी उसका आधार आत्मा है। ज्ञान की दृष्टि से उसके भौतिक-सौंदर्य का कोई बड़ा महत्त्व नहीं है। मनुष्य को आत्मा की उपासना करनी चाहिए, उसी का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। सांसारिक रूप-सौंदर्य और विविधता में घसीटकर उस मौलिक सौंदर्य को तिरोहित नहीं करना चाहिए।

शिव के स्वरूप, अलंकार और जीवन संबंधी घटनाओं का और भी विशद् वर्णन मिलता है। ऐसे प्रत्येक प्रसंग में या तो किसी दार्शनिक तत्त्व का विवेचन सन्निहित है अथवा व्यावहारिक आचरण की शिक्षा दी गई है। आइये, इन पर एक-एक करके विचार किया जाए—

(१) शिव का स्वरूप—भगवान् शंकर के स्वरूप में जो विचित्रतायें हैं, वह किसी मनुष्य की देह में संभव नहीं; इसलिए उसकी सत्यता संदिग्ध मानी जाती है। पर हमें यह जानना चाहिए कि यह चित्रण सामान्य नहीं, अलंकार है—जो मनुष्यों में योग-साधनाओं के आधार पर जाग्रत् होते हैं।

(क) माथे पर चंद्रमा—चंद्रमा मन की मुदितावस्था का प्रतीक है अर्थात् योगी का मन सदैव चंद्रमा की भाँति उत्फुल्ल, चंद्रमा की भाँति खिला और निःशंक होता है। चंद्रमा पूर्ण ज्ञान का प्रतीक भी है अर्थात् उसे जीवन की अनेक गहन परिस्थितियों में रहते हुए भी किसी प्रकार का विभ्रम अथवा ऊहापोह नहीं होता। वह प्रत्येक अवस्था में प्रमुदित रहता है, विषमताओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ख) नीलकंठ—पुराणों में ऐसी कथा आती है कि देवों और दानवों को संघर्ष से बचाने के लिए भगवान् शंकर ने विष पी लिया था, तब से इनका कंठ नीला है, अर्थात् इन्होंने विष को कंठ में धारण किया हुआ है। इस कथानक का भी सीधा-साधा संबंध योग की सिद्धि से ही है। योगी पुरुष अपने सूक्ष्म शरीर पर अधिकार पा लेता है, जिससे उसके स्थूल शरीर पर बड़े तीक्ष्ण विषों का भी प्रभाव नहीं होता। उन्हें भी वह सामान्य मानकर ही पचा लेता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह बात इस तरह भी है कि संसार के मान-अपमान, कटुता-क्लेश आदि दुःख-कष्टों का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। उन्हें भी वह साधारण घटनायें मानकर आत्मसात् कर लेता है और संसार का कल्याण करने की अपनी आत्मिक वृत्ति में निश्चल भाव से लगा रहता है। दूसरे व्यक्तियों की तरह लोकोपकार करते समय उसे स्वार्थ आदि का कोई ध्यान नहीं होता। वह निर्विकार भावना के साथ भलाई में जुटा रहता है। खुद विष पीता है पर औरों के लिए अमृत लुटाता रहता है।

(ग) विभूति रमाना—शिव ने सारे शरीर पर भस्म रमा रखी है। योग की पूर्णता पर संयम-सिद्धि होती है। योगी अपने वीर्य को शरीर में रमा लेते हैं, जिससे उनका सौंदर्य फूट पड़ता है। इस सौंदर्य को भस्म के द्वारा अपने आप में रमा लेता है। उसे बाह्य अलंकारों द्वारा सौंदर्य बढ़ाने की आवश्यकता नहीं रहती। अक्षुण्ण संयम ही उसका अलंकार बन गया है, जिससे उसका स्वास्थ्य और शरीर सब कांतियुक्त हो गये हैं।

(घ) तृतीय नेत्र—योग की भाषा में इसे तृतीय नेत्रोन्मीलन या आज्ञा-चक्र का जागरण भी कहते हैं। उसका संबंध गहन आध्यात्मिक जीवन से है। घटना प्रसंग जुड़ा हुआ है कि शिवजी ने एक बार तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को भी जला दिया था। योगी का यह तीसरा नेत्र यथार्थ ही बड़ा महत्त्व रखता है। सामान्य परिस्थितियों में वह विवेक के रूप में जाग्रत् रहता है, पर वह अपने आप में इतना सशक्त और पूर्ण होता है कि कामवासना जैसे गहन प्रकोप भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाते। उन्हें भी जला डालने की क्षमता उसके विवेक में बनी रहती है। इसे वैज्ञानिक बुद्धि का प्रतिनिधि भी कहा जा सकता है। पर सबका तात्पर्य यही है कि तृतीय नेत्र होना साधारण क्षमता से उठाकर विशिष्ट श्रेणी में पहुँचा देना है। भारतीय संस्कृति का यह वैज्ञानिक पहलू कहीं अधिक मूल्यवान् भी है।

भगवान् शिव का वाहन वृषभ है। वृषभ सौम्यता और कर्मठता का प्रतीक माना जाता है। तात्पर्य यह कि शिव का साहचर्य उन्हें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलता है, जो स्वभाव से सरल और सौम्य होते हैं, जिनमें छल-छिद्र आदि विकार नहीं होते। साथ ही जिनमें आलस्य न होकर निरंतर काम करने की दृढ़ता होती है। श्मशान में उनका निवास है अर्थात् वे मृत्यु को कभी भूलते नहीं। भगवान् की शक्ति और नियमों को मृत्यु की तरह अकाट्य मानकर चलने में मनुष्य की आध्यात्मिक वृत्तियाँ जाग्रत् रहती हैं, जिससे वह लौकिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी अपने जीवन-लक्ष्य की ओर निष्काम भाव से चलता रह सकता है। मृत्यु को लोग भूले रहते हैं, इसलिए बुरे कर्म करते हैं। इस महातत्त्व की उपासना का अर्थ अपने आप को बुरे कर्मों से बचाये रखने के लिए प्रकाश बनाए रखना होता है। इस तरह की जीवन-व्यवस्था व्यक्ति को असाधारण बनाती है। वह शक्ति शिव में पाई जाती है, शिव के उपासकों में भी वह वृत्तियाँ घुली हुई होनी चाहिए।

यह प्रसंग भगवान् शिव की आध्यात्मिक शक्तियों पर प्रकाश डालते हैं। इनके साथ कथानक और घटनायें भी जुड़ी हुई हैं, जो जीवन के आदर्शों की व्याख्या करती हैं; इनमें से गंगावतरण की कथा मुख्य है। गंगा जी विष्णुलोक से आती हैं। यह अवतरण महान् आध्यात्मिक शक्ति के रूप में होता है। उसे संभालने का प्रश्न बड़ा विकट था। शिवजी को इसके उपयुक्त समझा गया और भगवती गंगा को उनकी जटाओं में आश्रय मिला। गंगा जी यहाँ ज्ञान की प्रचंड आध्यात्मिक शक्ति के रूप में अवतरित होती हैं। लोक-कल्याण के लिए उसे धरती पर प्रवाहित करने की बात है, ताकि अज्ञान से मरे हुए लोगों को जीवन दान मिल सके, पर उस ज्ञान को धारण करना भी तो कठिन बात थी, जिसे शिव जैसा संकल्प-शक्ति वाला महापुरुष ही धारण कर सकता है। अर्थात् महान् बौद्धिक क्रांतियों का सृजन भी कोई ऐसा व्यक्ति ही कर सकता है, जिसके जीवन में भगवान् शिव के आदर्श समाये हुए हों, वही ब्रह्म-ज्ञान को धारण कर उसे लोक-हितार्थ प्रवाहित कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गृहस्थ होकर भी पूर्ण योगी होना शिवजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। सांसारिक व्यवस्था को चलाकर भी वे योगी रहते हैं, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। वे अपनी धर्मपत्नी को भी मातृशक्ति के रूप में देखते हैं। यह उनकी महानता का दूसरा आदर्श है। यहाँ उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि गृहस्थ रहकर भी आत्म-कल्याण की साधना असंभव नहीं। जीवन में पवित्रता रखकर उसे हँसते-खेलते पूरा किया जा सकता है।

यह सभी आदर्श इस बात की शिक्षा देते हैं कि मनुष्य शिव की तरह पदार्थों और समाज में प्रचलित परंपराओं का आध्यात्मिक मूल्यांकन करना सीख लें तो निःसंदेह उसका शारीरिक और सामाजिक जीवन अधिकाधिक निरापद होता चला जायेगा। संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिव मानव-जीवन की उन सभी आध्यात्मिक विशेषताओं के प्रतीक हैं, जिनके बिना मनुष्य-जीवन पाने का अर्थ हल नहीं होता। मनुष्य का धर्म उसकी विवेक-बुद्धि है, जिसके सहारे वह ज्ञान-विज्ञान की ओर अग्रसर होता है और मनुष्य से देव बनने में समर्थ होता है। इस तरह की सामर्थ्य प्राप्त करके ही आत्म-कल्याण और लोकहित की परंपरा जीवित रखी जा सकती है। यह संदेश हमें आदिकाल से भगवान् शिव देते चले आ रहे हैं। इन आध्यात्मिक रहस्यों की ओर से हमें उपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

आद्यशक्ति की उपासना से जीवन को सुखी बनाइए !

विभिन्न प्रकार की महत्ताओं की जननी की तीन शक्तियाँ ठहराई गई हैं। उन तीनों को जो जिस मात्रा में उपार्जित कर लेता है, वह उतना ही उन्नतिशील कहलाता है। भगवती आद्यशक्ति तीन रूपों में पूजी जाती है—(१) महासरस्वती, (२) महालक्ष्मी, (३) महाकाली। शिव के साथ में शक्ति का संयोग है। भगवान् शंकराचार्य ने यह कहा है कि—शक्ति के बिना शिव का स्पंदन नहीं होता। जीव की उन्नति देह की सहायता से होती है, वैसे ही शिव तत्त्व का स्पंदन शक्ति द्वारा होता है। भक्ति के बिना ईश्वर नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलता, शक्ति के बिना शिव नहीं मिलता—कल्याण का मार्ग प्राप्त नहीं होता। ब्रह्म प्राप्ति में, आत्मिक उन्नति में, भगवती आद्यशक्ति की सहायता आवश्यक है। अशक्त मनुष्य बातूनी छप्पर बाँध सकते हैं, पर वे वस्तुतः प्राप्त कुछ नहीं कर सकते। सांसारिक आनंद से लेकर ब्रह्मानंद तक मातेश्वरी शक्ति का ही प्रसाद है।

भारतीय अध्यात्म शास्त्र में महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली इन तीन महाशक्तियों की उपासना का बड़ा माहात्म्य गाया गया है, इनकी कृपा से अनेकानेक सिद्धि-संपदाएँ प्राप्त होने का फल बताया गया है। सविस्तार इनकी आराधना का वर्णन है। महासरस्वती का अर्थ है—विद्या, बुद्धि, तर्क, विवेचना, जानकारी, चतुराई। महालक्ष्मी का अर्थ है—धन, संपत्ति, जमीन, जायदाद। महाकाली का अर्थ है—शत्रु का दमन करने वाली शक्ति, तलवार, कूटनीति, दलबंदी। इन तीन शक्तियों की महत्ता हमारे आध्यात्मिक आचार्यों ने बहुत प्राचीनकाल में जान ली थी और समझ लिया था कि जिस व्यक्ति को, जिस जाति को, जिस राष्ट्र को जीवित रहना है, किसी दिशा में उन्नति करनी है, उसे इन तीन तत्त्वों का अवलंबन अवश्य ग्रहण करना पड़ेगा। यही कारण है कि त्रिशूलधारिणी भगवती शक्ति की आराधना की जाती है। जो ठीक तरह से उनकी उपासना करते हैं, उन्हें मातेश्वरी का प्रसाद प्राप्त होता है।

हिंदू धर्म वास्तव में कवियों का, चित्रकारों का, कलाकारों का धर्म है। इसमें हर बात को अलंकारिक चित्र रूप में वर्णन किया गया है। देवी-देवताओं के कथा-उपाख्यानों के बड़े-बड़े रोचक वर्णन जो पुराणों में भरे पड़े हैं, मोटी दृष्टि वालों को गपोड़े दिखाई पड़ते हैं। परंतु वास्तव में ऐसी बात नहीं है, हमारी प्राचीन शैली यह रही है कि किसी तथ्य को एक चित्र रूप में चित्रित करके अलंकारिक भाषा में उसका वर्णन किया जाए और उसमें एक महत्त्वपूर्ण रहस्य छिपा दिया जाय। उस उपाख्यान में से, शब्द चित्र में से, उस रहस्य को ढूँढ़ने का प्रयत्न श्रोता लोग करें और बुद्धि पर जोर देकर यह पता लगायें कि इस कलापूर्ण रचना में क्या महत्त्व सन्निहित है, इस पद्धति से शिक्षा देने वाले कलाकार रचयिता को भी मजा आता था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अपनी बुद्धि खर्च करके तथ्य को ढूँढ़ निकालने वाले श्रोता को भी अपनी खोज-सफलता पर हर्ष होता था। हर्षबुद्धि के साथ-साथ इस पद्धति में दी हुई शिक्षा अंतःस्थल में गहरी उतर जाती थी। उसे भुला देना इतना आसान न होता था, जितना कि आजकल की बाजारू शब्दावली को लोग इस कान से सुनकर उस कान से निकाल देते हैं। महाशक्ति के उपरोक्त तीन स्वरूपों को देवियों के सुंदर चित्र की तरह प्रकट करना ऐसा ही कलामय प्रयास है।

आज वस्तुस्थिति को समझाने की योग्यता का स्थान अंधविश्वास ने ग्रहण कर लिया है। अल्प बुद्धि के लोग समझते हैं कि सरस्वती, लक्ष्मी, काली कोई दिव्य स्त्रियाँ हैं, जिनके हाथ-पाँव तो हैं, पर अदृश्य रहती हैं, भक्तों को दर्शन देती है, माला जपने, अनुष्ठान करने, गंध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, चढ़ाने से प्रसन्न हो जाती हैं और भक्त के घर में चुटकी बजाने भर के अंदर एक क्षण में मनमानी संपदाएँ रख जाती हैं। इसी अंधविश्वास के आधार पर जो लोग प्रतिमा की पूजा तक ही अपना कर्तव्य समाप्त हुआ समझते हैं और जंत्र-मंत्र की शक्ति से देवी के प्रसन्न होने पर अनायास सब संपदाएँ घर में भर जाने की आशा करते हैं, उनके शेखचिल्ली के स्वप्न पूरे नहीं हो सकते। वास्तविकता को जानकर उचित मार्ग से प्रयत्न करने पर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। उपरोक्त महाशक्तियों का प्रचंड वरदान आप प्राप्त कर सकते हैं, बशर्ते कि अंधविश्वास की अपेक्षा विवेक द्वारा उन्हें प्राप्त करने और प्रसन्न करने का प्रयत्न करें।

भगवती सरस्वती एक हाथ में वीणा, दूसरे में पुस्तक लिए हुए चित्रित की गई है। पुस्तक का तात्पर्य स्पष्ट है, अच्छे साहित्य का अध्ययन किये बिना विचार शृंखला का परिमार्जित होना कठिन है। संसार के उच्च कोटि के विचारक और तत्त्वदर्शी अपने गंभीर ज्ञान को पुस्तक में जोड़े गये हैं या छोड़ गये हैं। उनके विचारों का अध्ययन करना एक प्रकार से उनकी समीपता प्राप्त करना, सत्संग का लाभ उठाना है। ज्ञान कोष को भरने के लिए अन्य लोगों के अनुभव और अन्वेषण का निरीक्षण आवश्यक है, यह कार्य पुस्तकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सहायता से हो सकता है। ज्ञानी बनने के लिए अध्ययन प्रेमी होना अनिवार्य है। दूसरे हाथ में वीणा का होना प्रकट करता है कि आपके भावना तंतु झंकृत होते रहने चाहिए। विद्या शुष्क पांडित्य के लिए नहीं है, उसका सदुपयोग यह है कि वह अपने सात्त्विक प्रभावों से आपके अंतःकरण के तारों को झंकार दें। अध्ययन, मनन, निदिध्यासन द्वारा आप जिस निष्कर्ष पर पहुँचे, उस पर विश्वास करें, श्रद्धा करें और तदनुसार जीवन को ढालने का प्रयत्न करें। विश्वास और आचरणों में एकता रखें ज्ञान का वास्तविक लाभ उठायें। हंसवाहिनी शारदा की वीणा-पुस्तकप्रियता यह प्रकट करती है कि विद्या चाहने वाले, विद्वान् बनने की इच्छा करने वाले लोगों को चाहिए कि पुस्तकों का अध्ययन करना अपना दैनिक कार्यक्रम बनाएँ, नित्य पढ़ने की आदत डालें, जो ज्ञान प्राप्त करें, उससे अपनी हृदय वीणा को झंकृत करते हुए ज्ञान का श्रद्धा और आचरण के साथ संबंध जोड़ें। यही सरस्वती पूजा का सरल-सा किंतु अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण विधान है, जिसे कलाकार ने चित्र रूप में हमारे सामने उपस्थित किया है।

हंसवाहिनी महासरस्वती का उपासक हंस जैसा नीर-क्षीर विवेकी होना चाहिए। दूध में से पानी को निकाल देने की वृत्ति अपने अंदर धारण करने से सत्-असत् का विवेक होता है। संसार में सब माल बेतरतीब भरा पड़ा है, इस कटपीस की गठरी में अच्छे टुकड़े भी हैं और खराब भी, यह लेने वाले की समझ के ऊपर है कि वह काम लायक बढ़िया चीज पसंद करता है या निकम्मी बेमतलब की उठा लाता है। सभी मजहबों में अच्छे विचार मौजूद हैं, समयानुसार हर प्रकार के तत्त्वों का प्रवेश हुआ है, आज की स्थिति के योग्य जिस धर्म में जो बात प्राप्त होती है, उसे ग्रहण कर लीजिये और जो बातें समय से पीछे की होने के कारण निरुपयोगी हो गई हैं, उन्हें निकाल दीजिए। कुछ घंटे पहले का दूध अब जमकर दही हो गया है। हलवाई इस दही में से जो पानी छाँटता है, उसे निकालकर फेंकता जाता है और जमा हुआ भाग ग्राहकों को बेचता जाता है। कुछ देर पहले जब यही दही दूध की शक्ल में था तब उसमें से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी छाँटकर फेंकने की जरूरत न थी, पर अब समय बदल जाने के कारण स्थिति दूसरी हो गई। पानी मिला दूध तो उस समय बिक सकता था, पर दही के साथ छँटा हुआ पानी नहीं बेचा जा सकता। प्राचीन धर्मग्रंथ, उपदेश, विचार, रीति-रिवाज, अपने समय के लिए बहुत उपयोगी, लाभदायक और आवश्यक थे, पर आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं तो उन्हीं बातों को स्वीकार कीजिए, जो आज की स्थिति में उपयोगी हैं। इस प्रकार यदि आप अपनी वृत्ति को हंस के समान नीर-क्षीर विवेक करने वाली रखेंगे, अंधविश्वास से अपने को सावधानी के साथ बचायेंगे तो बुद्धिमान् बनते जायेंगे, भगवती सरस्वती के कृपापात्र वाहन—हंस का पद प्राप्त करते जायेंगे।

बुद्धि वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि किसी एक ही बात पर दुराग्रह न किया जाए, अपनी ही बात को सबसे ऊँची रखने का हठ न किया जाए, वरन् खुले हृदय से जिज्ञासु की तरह-निष्पक्ष, सत्य शोधक की तरह बुद्धि संगत बात को स्वीकार करने एवं भूल को सुधारने के लिए तैयार रहेंगे तो अपने ज्ञान में दिन-दिन वृद्धि करते जायेंगे। 'हमारी बात ठीक और सबकी झूठी, यह विचार पद्धति जिन्होंने अपना रखी है, वे अपने ज्ञान और विवेक में कभी भी उन्नति न कर सकेंगे।

जो लोग अपना विवेक और अनुभव बढ़ाना चाहते हैं, उन्हें चुनाव करने की और शिक्षा ग्रहण करने की पद्धति को अपनाना चाहिए। किसी वस्तु की उपयोगिता-अनुपयोगिता जानने का तरीका यह है कि उसके समतुल्य अन्य वस्तुएँ विचारार्थ सामने रखिये और उनमें से हर एक के गुण-अवगुणों पर विस्तारपूर्वक विवेचना कीजिए; तब उनमें से जो वस्तु अधिक उपयोगी सिद्ध हो उसे चुन लीजिए। बिना विचारे भावावेश में किसी बात के अंध अनुयायी हो जाना उचित नहीं, इससे मस्तिष्क की तेजस्विता जाग्रत् नहीं होती और न सर्वोत्तम वस्तु के प्राप्त होने की ही संभावना रहती है। जो काम आपको करना है केवल उसके लाभों को ही मत गिनिये, ऐसा करेंगे तो धोखा खायेंगे। लाभ के साथ हानियों को भी सोचना-समझना है, कठिनाइयों पर भी दृष्टिपात करना है। सब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहलुओं पर विचार करने के उपरांत जो निर्णय करते हैं, जो चुनाव करते हैं वह मजबूत होगा और ऐसा होगा जिसके लिये शायद ही पश्चात्ताप करना पड़े।

जो घटनाएँ आपके चारों ओर घट रही हैं, जो घटनाएँ भूतकाल में घट चुकी हैं, उनको उपेक्षा की दृष्टि से मत देखिए वरन् जहाँ तक हो सके हर एक पर पैनी नजर फेंकते चलिए और यह विचार करते चलिए कि किन कारणों से ऐसे अवसर उपस्थित हुए या होते हैं ? उन कारणों का सामयिक परिस्थितियों से कितना सामंजस्य है ? इस गंभीर अवलोकन से आप कुछ निष्कर्ष निकाल सकेंगे, कुछ अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। वह निष्कर्ष और अनुभव धीरे-धीरे इतने दृढ़ हो जायेंगे कि उनके आधार पर भावी जीवन का बहुत कुछ निर्माण हो सकेगा। आप बीती के आधार पर अधिक अनुभव इकट्ठे नहीं हो सकते, अनुभवी और विशेषज्ञ बनना है तो दूसरों पर बीती हुई बातों का विश्लेषण करने पर जो शिक्षा मिलती है, उसे ग्रहण करके अपनी योग्यता में वृद्धि करनी चाहिए।

वस्तुस्थिति को समझने की गलती तथा दोषपूर्ण विचारधारा के कारण अधिकांश दु:खों का आविर्भाव होता है। कोई सगा संबंधी मर जाने पर आप सिर धुन-धुन कर रोते हैं, भोजन त्याग देते हैं, सूख-सूख कर काँटा हो जाते हैं, यह विपत्ति आपकी अपनी उत्पन्न की हुई है। हर प्राणी का मरण निश्चित है—इसी प्रकार आपके संबंधी का भी मरण अनिवार्य था। सूर्य को डूबना ही है, यदि उसे अस्त होता देखकर रोयें-पीटें तो भी वह अपना क्रम न रोकेगा। आप भ्रमवश मान लेते हैं कि सूरज सदा चमकता ही रहेगा और उससे ऐसी आशा करते हैं, जब आशा के अनुकूल फल नहीं निकलता तो रोते-चिल्लाते हैं। इसके शोक में मरने वाला व्यक्ति कारण नहीं हैं, क्योंकि वह तो उसी स्वाभाविक राजपथ से गया, जिससे सभी को जाना पड़ता है। दोष उस दृष्टिकोण का है, जिसने मरणशील प्राणी को अमर समझकर नाना प्रकार की आशायें बाँध रखी थीं। जिसको अपनी आशाओं के महल अधिक टूटते दीखते हैं, वह अपनी असफलता पर अधिक रोता है। जिसका मृत व्यक्ति से जितना अधिक स्वार्थ था,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह उतना ही अधिक दुःखी होता है। जिसने उससे कुछ आशायें नहीं बाँध रखी थीं, कुछ स्वार्थ वहीं जोड़ रखे थे—उसे दुःख क्यों होगा ? रोजाना अनेक मुर्दे निकलते और जलते हम देखते हैं, पर एक बूँद भी आँसू की नहीं निकलती। पर जब अपना स्वार्थ संबंधित मनुष्य मरता है तो रो-रोकर व्याकुल हो जाते हैं।

यदि अध्यात्म ज्ञान की उचित शिक्षा प्राप्त करके अपने हर एक प्रियजन को मृत्यु के मुँह में लटका हुआ समझें और उसके ऊपर आशाओं के महल खड़े न करके कर्तव्यभावना से उसके साथ अपना धर्म निबाहने का दृष्टिकोण रखें तो विश्वास रखिए, उसकी मृत्यु के समय कुछ भी कष्ट न होगा। जिस पर ममत्व नहीं है, वह वस्तु नष्ट हो जाने पर कौन दुःख मनाता है ? यदि भौतिक वस्तुओं पर आपका ममत्व न हो, अपने को उनका मालिक न समझा करें, सेवक-संरक्षक मानें तो प्रियजनों के बिछोह, चोरी, हानि आदि के कारण उत्पन्न होने वाले दुःख-शोकों से सरलतापूर्वक बच सकते हैं। "संसार की हर वस्तु नाशवान् है, उनका किसी भी क्षण नाश हो सकता है, मेरा कर्तव्य यह है कि प्राप्त वस्तुओं के प्रति निर्लिप्त भावना से अपनी जिम्मेदारी पूरी करता रहूँ।" यह ज्ञान यदि दृढ़तापूर्वक हृदय में बैठ जाए तो मानसिक-क्लेशों का अंत हुआ ही समझिए।

शारीरिक स्वास्थ्य की अवनति या बीमारियों की चढ़ाई अपने आप नहीं होती, वरन् उसका कारण भी अपनी भूल है। आहार में असावधानी, प्राकृतिक नियमों की उपेक्षा, शक्तियों का अधिक खर्च, स्वास्थ्य-नाश के यह प्रधान हेतु हैं। जो लोग तंदुरुस्ती पर अधिक ध्यान देते हैं, स्वास्थ्य के नियमों का ठीक तरह पालन करते हैं, वे मजबूत और निरोग बने रहते हैं। योरोप, अमेरिका के निवासियों के शरीर कितने स्वस्थ एवं सुदृढ़ होते हैं। हमारी तरह वे भाग्य का रोना नहीं रोते, वरन् आहार-विहार के नियमों का सख्ती के साथ पालन करते हैं। बुद्धि और विवेक का उपयोग निरोगता के लिए करते हैं, जिससे वे न तो बहुत जल्द बीमार पड़ते हैं, न दुर्बल होते हैं और न अल्पायु में मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। हमारे देश में ही देखिए—उच्च वर्ण वालों की अपेक्षा नीच वर्ण के लोग स्वास्थ्य की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टि से अधिक गिरे हुए होते हैं, इसका कारण ईश्वर की अकृपा नहीं, वरन् अज्ञानता और उपेक्षा है। अपने प्रयत्नों से आप पुनः अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं और लापरवाही पर ही आरूढ़ रहें तो शरीर को इससे भी बुरी हालत में लगा सकते हैं, कुँजी अपने भीतर है, स्वास्थ्य के आप खुद मुख्तार हैं। कोई दूसरा क्या हस्तक्षेप कर सकता है ? वैद्य-डॉक्टर सलाह दे सकते हैं, दवा दे सकते हैं, परंतु निरोगता की चाबी उन बेचारों के पास थोड़े ही है। वह तो अपने अंदर से ढूँढ़ निकालनी पड़ेगी।

धन-उपार्जन, विद्याध्ययन और बुद्धि-वृद्धि यह तीनों संपदाएँ घोर परिश्रम, निरंतर प्रयत्न, सच्ची लगन और साहसपूर्ण उत्साह द्वारा प्राप्त होती हैं। जो लोग आज आपको अमीर दिखाई पड़ते हैं, वे यों ही अनायास नहीं बन गये हैं, उन्होंने जाँफिशानी से मेहनत की है, दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा है। जिन्हें आप विद्वान् देख रहे हैं, उन्होंने वर्षों सर खपाया है, मुद्दतों पुस्तकें रटी हैं, खेल-तमाशों से, यात्रा-विहार से, मनोरंजनों से अपने को बचाकर पढ़ने की धुन में लगे रहते हैं। जिन्हें आप बुद्धिमान् देख रहे हैं उन्होंने बुद्धिमानों की संगतियाँ की हैं, ठोकरें खाई हैं, बुद्धि को घोड़े की तरह चारों ओर दौड़ाया है, समस्याओं को सुलझाने में गंभीर मनन किया है, ज्ञान लाभ के लिए कष्टकर कार्यों को अपनाया है। यदि वे लोग ऐसा न करते तो उनका धनवान्, विद्वान्, बुद्धिमान् बनना संभव न था। उद्योगी पुरुष सिंह लक्ष्मी को पाते हैं और कायर पुरुष दैव-दैव पुकारते रहते हैं। यदि आप संपदाएँ प्राप्त करना चाहते हैं तो वे उपहार की तरह किसी बाहर के आदमी से न मिलेंगी, वरन् अपनी योग्यता और क्रियाशीलता द्वारा उन्हें प्राप्त करना पड़ेगा।

मित्रता, प्रतिष्ठा, प्रशंसा से लदा हुआ जिन्हें आप देखते हैं, जिनके बहुत से मित्र, भक्त, प्रशंसक पाते हैं, उनकी मानसिक दशा का निरीक्षण कीजिए। आप पायेंगे कि उनमें बहुत से ऐसे गुण हैं, जिनके कारण लोगों का मन उनकी ओर आकर्षित होता है, उनमें बहुत-सी ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनसे लोग लाभ उठाते हैं। उन्हें मुफ्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के माल की तरह प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा नहीं मिलती, वरन् उसके अनुरूप अपने आपको बनाने के पश्चात् उसके अधिकारी हुए हैं। गंधरहित पुष्प के पास भौंरो नहीं आते। अपने चारों ओर भ्रमरों को मधुर स्वर के साथ गूँजते-फिरते देखने का सौभाग्य उन्हीं पुष्पों को प्राप्त होता है, जो अपने अंदर मनमोहिनी सुगंध छिपाये बैठे हैं। कमल के फूल पर यदि भौंरों के झुंड मंडराते रहते हैं तो यह भौंरों की कृपा नहीं, कमल की विशेषता है। बिना विशेषता वाला कनेर-पुष्प बेचारा अकेला एक कोने में ही पड़ा रहता है।

हम मानते हैं कि कभी-कभी किसी को अनायास ही बहुत-सी सुविधा-संपदा प्राप्त हो जाती हैं, जिन्हें भाग्य की देन कहा जाता है। यह अपवाद है। रास्ते चलते हुये किन्हीं को रुपये पड़े मिल जाते हैं, यह अपवाद है। इससे यह सिद्धांत निश्चित नहीं किया जा सकता कि हर एक को रास्ते में पड़े पैसे जरूर ही मिलेंगे। अनायास मिलने में भी दो कारण होते हैं या तो पूर्व जन्म का संचित कर्मफल शेष होगा, जो अब प्राप्त हुआ है, या अब कर्ज लिया जा रहा है, जो आगे चुकाना पड़ेगा। मुफ्त का माल तो एक रत्ती भर भी यहाँ नहीं मिल सकता। यदि पुराना संचित मिला है—बैंक में जमा पूँजी निकाल ली है, तो यह भी अपने उद्योग का फल हुआ। फिर बासी रोटी के ऊपर या कर्ज लेकर शान बनाने में गर्व करना व्यर्थ है। इसमें कोई गौरव की बात थोड़े ही है।

भाग्य एक आकस्मिक घटना है, जो अदृश्य कारणों से किन्हीं-किन्हीं के साथ कभी-कभी घटित हो जाती है। ऐसे एक-दो प्रतिशत होने वाले अपवाद निश्चित नियम नहीं बन सकते। सिद्धांत रूप में वही बात स्वीकार की जायेगी, जो निन्यानवे, अठानवे प्रतिशत ठीक उतरती है। आत्मनिर्भरता का सिद्धांत सच्चा है। मनोवांछित सफलता प्राप्त करने की कुँजी अपने अंदर है—यह सिद्धांत सच्चा है, क्योंकि सर्वत्र यही बात फलित होती दृष्टिगोचर हो जाती है कि "जो जिसका पात्र है वह उस वस्तु को प्राप्त करता है।"

आप अपने ऊपर विश्वास कीजिए, अपने ऊपर निर्भर रहिए। अध्यात्मवाद का सिद्धांत है कि अपनी दुःखदायी परिस्थितियों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टालने के लिए और सुखदायक अवसर उत्पन्न करने के लिए अपने भीतर दृष्टि डालिए, जड़ की तलाश कीजिए। सारे प्रसंगों का उत्पादन और परिवर्तन करने वाला केंद्र बिंदु अपने अंदर है, इसलिए दूसरों का आसरा तकने की अपेक्षा अपना निरीक्षण, संशोधन, और संपादन आरंभ कर दीजिए।

अध्यात्म का कलेवर श्रद्धा पर टिका है। पाँव टिकाने के लिए स्थान होने पर भी ठीक तरह खड़ा रहा जा सकता है; जिसका कोई स्थान नहीं, कोई निर्भरता नहीं, कोई उद्देश्य नहीं, ऐसा व्यक्ति अपने लिए और दूसरों के लिए खतरनाक है। भारतीय दंड विधान की धारा १०६ ऐसे लोगों के ऊपर लागू होती है, जो निरुद्देश्य फिरते हैं, कार्यक्रम और आधार के बिना विचरण करते हैं। उन कानून के निर्माता-विद्वान् विचारकों का मत है कि ऐसे व्यक्ति अपराधों की ओर ही प्रवृत्त हो सकते हैं और समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं, इसलिए उनकी निरुद्देश्यता पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है। उपरोक्त कानून के अनुसार पुलिस किसी आवारा आदमी को गिरफ्तार करके एक साल के लिए जेल भिजवा सकती है।

जिस प्रकार शरीर की आवारागर्दी अपराध है, वैसे ही विश्वास की अस्थिरता मानसिक जुर्म है। जिस आदमी का अपना कोई सिद्धांत नहीं, उद्देश्य नहीं, कार्यक्रम नहीं, आधार नहीं, वह निश्चय ही शैतानी चमक-दमक की ओर आकर्षित होगा और कुमार्ग पर लगेगा। स्थिरता के अभाव में हवा के झोंकों के साथ टूटे पत्ते की तरह इधर-उधर उड़ता फिरेगा। कब कहाँ जा पहुँचे—यह अनिश्चितता पत्ते के बारे में सहन की जा सकती है, पर डाँवाडोल मनुष्य असह्य है। आज आपका विश्वास है कि देशभक्ति कर्तव्य है, कल ही देशद्रोह पर उतर आयें। आज हिंदू हैं, कल मुसलमान हो जायें, परसों ईसाई। आज टोपी लगाते हैं, कल टोप पहनें, परसों साफा बाँधें, तरसों पगड़ी लपेटें। आज विवाह करके दुलहिन लाये हैं, कल तलाक दे दें। आज दान दिया है, कल छीन लें। इस तरह विचार और विश्वासों की अस्थिरता मनुष्य को एक प्रकार का मानसिक अपराधी ठहरा देती है। उसका विश्वास उठ जाता है, लोग संदिग्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और सशंकित दृष्टि से उसे देखते हैं। विश्वास के अभाव में वह दूसरों के सहयोग से वंचित हो जाता है। ऐसा मनुष्य न तो स्वयं अपने लिए ही अच्छा रहता है और न दूसरों को कुछ सहयोग दे सकता है।

अस्थिर विचार और डांवाडोल सिद्धांतों के मनुष्य इस संसार में कम नहीं हैं। चोरी न करने का उपदेश करने वाले, अस्तेय की महिमा गाते-गाते न थकने वाले लोगों में से कितने ही ऐसे मिलते हैं, जो मौका पाते हैं तो चोरी करने में नहीं चूकते। ब्रह्मचर्य के समर्थक होते हुए भी व्यभिचाररत, ईश्वर की सर्वव्यापकता का बखान करते-करते न थकने वाले मंदिरों में बैठकर गजब ढाते हमने देखे हैं। धर्म का महत्त्व मानने वालों को झूठी गवाही देते हुए, अपहरण करते हुए, अनीति में प्रवृत्त होते हुए हमने देखा है। गीता का पाठ करके आत्मा की अमरता को सौ-सौ बार दुहराने वाले जब मौका पड़ता है तो मरने की जोखिम उठाना तो दूर मामूली चोट खाने से भी बुरी तरह डरते हैं। हमारे परिचित एक पंडित जी १७ वर्ष से गीता की कथा कहने का पेशा करते थे, कथा से उन्हें काफी धन मिलता था। अच्छी खासी पूँजी उनके पास जमा हो गई थी। एक बार उनके घर डाकू चढ़ आये—रुपया लूटने के साथ उन्होंने पंडित जी की धर्मपत्नी और सयानी लड़की के साथ बलात्कार भी किया। पंडित जी डाकुओं की आँख बचाकर एक चारपाई की आड़ में छिपे बैठे थे और यह सब दृश्य देख रहे थे। शारीरिक कष्ट के भय से डाकुओं का विरोध करने की हिम्मत न पड़ी और उन खून खौला देने वाले दृश्यों को चुपचाप देखते रहे।

यदि सचमुच पंडित जी को गीता की शिक्षा का ज्ञान होता और आत्मा की अमरता पर सच्चे हृदय से विश्वास करते होते तो कर्तव्य की पुकार को इस प्रकार न दबा देते। मृत्यु से इतना न डरते। हम यह नहीं कहते कि वे गीता को झूठा मानते हैं या अमरता की बात किसी छल से कहते हैं, जहाँ तक विचारों का ताल्लुक है, वे अपने विचारों के प्रति सच्चे हैं ; परंतु विचारों के साथ वह दृढ़ विश्वास नहीं था, जिसको 'श्रद्धा' कहा जाता है। विचारणा ऐसा तत्त्व है, जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जरा-सा दबाव पड़ने पर आसानी से बदल जाता है। कोई विद्वान् या बुद्धिमान् मनुष्य तर्क, प्रमाण और बहस के आधार पर हरा सकते हैं, उसकी युक्तियाँ और प्रमाण किसी को भी शैली ऐसी जोरदार हो सकती है कि आप निरुत्तर हो जायें, हार मान लें और ऐसा अनुभव करने लगें कि शायद मैं गलती पर हूँ। तब यह बहुत सरल है कि अपने विचार बदल दें, यदि दुर्भाग्य से परस्पर विरोधी विचार वाले बहुत से विद्वानों के बीच में रहने का प्रसंग आ पड़े और परस्पर विरोधी तर्कों को सुनें तो आपको रोज विचार बदलने के लिए विवश होना पड़ सकता है। उस स्थिति में किसी निश्चित नतीजे पर पहुँचना कठिन होगा, बुद्धि-भ्रम की अस्थिरता बढ़ जायेगी। इसी प्रकार यदि कोई भारी कष्ट, पीड़ा, आघात, व्यथा, वेदना सामने आए तो उनके दबाव से विचारों को पलट सकते हैं। चोरों का विचार होता है कि पकड़े जाने पर हम अपने साथियों का नाम प्रकट न करेंगे, पर राजदंड की यंत्रणा से घबराकर कइयों को अपना विचार बदलना पड़ता है और वे अपने साथियों का नाम प्रकट कर देते हैं। लोभ का दबाव भी कुछ ऐसा ही है, रुपये का लालच, रूप-सौंदर्य का लालच, मनोरंजन का लालच बड़े-बड़े विचारवानों को डिगा देता है। अपनी पत्नी और पुत्री का अपमान देखते हुए भी—शरीर कष्ट के भय से यदि पंडित जी के अमरता के विचार क्षण भर में विलीन हो गये हों तो कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।

किसी प्रकार के विचार रखना ही इसके लिए पर्याप्त नहीं है कि यह व्यक्ति इस प्रकार के कार्य भी करेगा। बहुत से मनुष्य एक प्रकार के काम में लगे हुए हैं, पर विचार उसके विपरीत दूसरे प्रकार के रखते हैं। बाहर से आचरण कुछ और करते हैं, भीतर से विचार कुछ रखते हैं। कार्य और विचारों का एक न होना इस बात का प्रमाण है कि विचार बहुत ही उथले, निर्बल एवं अपूर्ण हैं, दिमाग तक ही उनकी प्रगति है, अंतःकरण तक ये प्रवेश नहीं पा सके हैं। ऐसे लँगड़े, लूले आधे-अधकचरे विचार, विश्वासों को लोग मन में भरे फिरते हैं। जब मौका पड़ता है, परीक्षा का अवसर आता है तो झट फिसल जाते हैं, जैसी हवा चलती है वैसी ही पीठ कर लेते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभी यह कहते हैं, अभी वह कहने लगते हैं। यह अस्थिरता मनुष्य की मानसिक आवारागर्दी प्रकट करती है, ठीक वैसी ही जैसी शारीरिक स्थिति के कारण दफा १०६ ताजीरात-ए-हिंद के अनुसार जेलखाने की हवा खानी पड़ती है।

यदि मनुष्य का अपना कोई निजी विश्वास न हो, निजी आधार न हो तो हवा के रुख के साथ इधर-उधर उड़ता फिरेगा और जीवन में कोई कहने लायक उन्नति न कर सकेगा। एक मील पूरब को चले—फिर लौट पड़े—आधा मील पश्चिम को आये—फिर विचार बदला, दो मील उत्तर को बढ़े—फिर समझ में आया कि पश्चिम को चलें, डेढ़ मील चलकर वहाँ पर भी रुक गये, फिर किसी तरफ चलने की सोचने लगे। इस पद्धति से महीनों चलते रहने वाला निश्चित मंजिल तय न कर सकेगा, किंतु जो लगातार एक ही दिशा में चलता रहता है, वह एक ही महीने में काफी मंजिल पार कर लेगा। जिसके सुदृढ़ विश्वास हैं, परिपक्व निश्चय हैं, अपने स्थिर सिद्धांतों पर आरूढ़ रहता है, वह समाज में अपना एक नियत स्थान बना लेता है। मजबूती का आदर होता है। जो जिन विश्वासों पर मजबूती के साथ डटा हुआ है, उसे उनके द्वारा ही पर्याप्त लाभ हो सकता है। दृढ़ता से शक्तिशाली पुरुष वीरों की तरह सम्मानित होता है।

महापुरुषों में एक सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वे अपने विचारों पर पूरी तरह से निष्ठा के साथ दृढ़ रहते हैं, अपने उद्‌देश्यों के प्रति उन्हें पूरी श्रद्धा होती है। उस श्रद्धा से, निष्ठा से प्रेरित होकर कार्य करते हैं और कितने ही बड़े कष्ट एवं प्रलोभन सामने आने पर भी विचलित नहीं होते। अपनी निष्ठा के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देते हैं, प्राणों की भेंट चढ़ा देते हैं, परंतु निश्चय से जरा भी नहीं डिगते। यह दृढ़ता ही किसी मनुष्य की सबसे बड़ी प्रामाणिकता है। इस प्रामाणिकता के कारण लोग उस पर विश्वास करते हैं। जिसके ऊपर विश्वास किया जाता है, वह सचमुच महान् है, उसकी महानता चिरकाल तक स्थिर रहेगी। कद्र दानी का संसार में से लोप नहीं हो गया है। दृढ़ता का बहुमूल्य रत्न सदैव उपेक्षित नहीं पड़ा रहता, उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहचानने वाले, कद्र करने वाले जौहरी मिल ही जाते हैं। कई महापुरुषों के विचार कुछ त्रुटि पूर्ण थे, तो भी उनकी निष्ठा, श्रद्धा और दृढ़ता ने उन्हें प्रातःस्मरणीय और पूजनीय बना दिया।

महाराणा प्रताप का जंगलों में रहते फिरना, भामाशाह का दान, हकीकत राय का दीवार में चुना जाना, बंदा-बैरागी का खौलते तेल के कढ़ाव में उबलना, राम का वनवास, हरिश्चंद्र का स्त्री-पुत्रों को बेचना, दधीचि का अस्थिदान, मोरध्वज का पुत्र बलिदान, रानी पद्मिनी का अग्नि-दाह, सुकरात का विषपान, ईसा का क्रुसारोहण, यह सब गाथाएँ निष्ठा के ऊपर अवलंबित हैं। अपने विश्वासों की रक्षा करने के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देना श्रद्धालु आत्माओं का ही काम है। आज के अस्थिर विश्वास वाले लोगों के सामने ऐसे अवसर आयें तो वे चट बदल जायें। बालक हकीकत राय ने दीवार में चुना जाना पसंद किया, पर हिंदू धर्म छोड़ने पर तैयार न हुआ, आज का कोई चालाक लड़का होता तो सोचता—जान गँवाने की बजाय तो मुसलमान हो जाना ही ठीक है—वह चट मुसलमान हो जाता। प्राचीन समय में लोग अपने वचन का पालन के लिए, धर्म- रक्षा के लिए, सिद्धांतों की पुष्टि के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार रहते थे। आज कूटनीति का, चालबाजी का, अधिक लाभ का व्यापार है। फैशन की तरह विचारों को धारण करते हैं और हजामत की तरह जब तक रुचता है उन्हें पाले रहते हैं और जब चाहते हैं सफाचट करा देते हैं। बड़े-बड़े जोरदार व्याख्यान देकर साम्यवाद का महत्त्व समझाने वाले स्वयं पूँजीवाद के केंद्र बने हुए हैं, धर्म-धर्म पुकारने वाले स्वयं अधर्म के संचालक हैं। यह उदाहरण बताते हैं कि उन लोगों ने विचारों को फैशन से अधिक महत्त्व नहीं दिया है।

आज वे शंकराचार्य कहाँ है ? जो वैदिक धर्म की रक्षा के लिए प्राण हथेली पर धरकर निकल पड़ें और नन्हीं-सी जान को विरोधी अपार जनसंख्या के सामने खड़ा करें ? आज वे दयानंद कहाँ हैं ? जो मेवाड़ की रत्नजटित महंती को अस्वीकार करके दर-दर अपमान सहते फिरें और अंत में विषपान करके प्राण त्यागें ? आज का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रोफेसर मोटी तनख्वाह के बदले कुछ घंटे लेक्चर देकर छुट्टी पा जाता है, उन दिनों ऋषि रूखा-सूखा अन्न खाकर अपनी असाधारण विद्या, शिष्यों को घोंट-घोंट कर पिलाते थे। यदि चाहते तो वे ऋषि लोग भी अपनी विद्या के बदले में पैसा कमा सकते थे; परंतु उनके सामने अपने कर्तव्य धर्म का सिद्धांत था, जिसे पालन करने के लिए गरीबी का जीवन स्वीकार करना मामूली सी बात थी।

अध्यात्मवाद के आचार्यों ने सदैव इस बात पर जोर दिया है कि मनुष्य श्रद्धालु बने। काफी सोच-समझकर, पर्याप्त छान-बीन कर, किन्हीं सिद्धांतों को स्वीकार किया जाए और स्वीकार करने के बाद उनका दृढ़ता के साथ पालन किया जाए। वह विश्वास इतने दृढ़ होने चाहिए कि परीक्षा और कठिनाई के समय भी ठहर सकें, उनके लिए कुछ त्याग और बलिदान भी किया जा सके।

तर्क अच्छी वस्तु है, सच्चाई जानने में उससे सहायता मिलती है, अंधविश्वास और भ्रम-पाखंडों की सफाई उससे की जाती है और एक हद तक पथ प्रदर्शन भी होता है, किंतु उसकी कुछ नियत मर्यादा है। जीवन के मूल स्त्रोत में उत्साह तर्क से नहीं, श्रद्धा से पैदा होता है। दृढ़ता, त्याग, भावनापरायणता, स्थिरता श्रद्धा से आती है, लोभ और कष्टों को ठुकराकर जब मनुष्य लौह-स्तंभ की तरह अडिग खड़ा होता है, तब समझना चाहिए कि श्रद्धा की सुदृढ़ शिला में इसकी जड़ें पहुँच गई हैं। केवल तर्कजन्य विचार तो बहुत ही कमजोर होते हैं। बालू के महल की तरह वे जरा से धक्के में तितर-बितर हो जाते हैं।

गुरु का बड़ा भारी माहात्म्य वर्णन किया गया है। कहीं-कहीं तो गोविंद से भी गुरु को बड़ा बताया गया है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर से उसकी उपमा दी गई है, गुरु भक्ति को ईश्वर भक्ति से ऊँचा कहा गया है। इसमें एक व्यक्ति को माध्यम बनाकर श्रद्धा का बीज बोने का प्रयास है। सिद्धांतों, उद्‌देश्यों पर श्रद्धा जमाने की साधना का आरंभ बालकों को गुरु भक्ति द्वारा कराया जाता था। उच्छृंखलता, उद्‌दंडता, स्वेच्छाचार के विरुद्ध यह एक स्वेच्छा स्वीकृत मानसिक नियंत्रण है, जिसके द्वारा बड़े-बड़े मानसिक लाभ अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर शिष्य की मान्यता के अनुसार गुरु का दर्जा सचमुच गोविंद से बड़ा न हो जायेगा। वह अपूर्ण प्राणी ही रहेगा, पर अपनी भावना की दृढ़ता द्वारा शिष्य उससे इतना लाभ उठा लेगा जितना गोविंद से उठाया जा सकता है। द्रोणाचार्य ने अपनी सारी योग्यता खर्च करके पांडवों को बाण विद्या सिखाई थी, पर उनकी मिट्टी की मूर्ति को गुरु बनाकर उसकी शिष्यता में बाण-विद्या सीखने वाला भील पुत्र "एकलव्य" पांडवों से अधिक प्रवीण हो गया, यहाँ तक कि स्वयं द्रोणाचार्य भी उससे पीछे रह गये। यह भी श्रद्धा का चमत्कार है। भील-पुत्र ने मिट्टी के पुतले पर श्रद्धा जमाई और उसके आधार पर अपने अंदर छिपे हुए अनंत विद्याओं के भंडार को जाग्रत् कर लिया। गुरु-शिष्य का उपकरण इसी एक महान् सत्य को अपने गर्भ में छिपाये हुए हैं। आज भले ही 'गुरुडम' के विकृत रूप में यह दृष्टिगोचर हो तो हो, पर मूलतः गुरु माहात्म्य का तत्त्वज्ञान श्रद्धा का प्रारंभिक बीजारोपण करने के निमित्त ही निर्मित हुआ है।

विभिन्न आचार्यों द्वारा निर्मित विभिन्न आध्यात्मिक साधनाएँ श्रद्धा को उपजाने के अपने-अपने ढंग के स्वतंत्र प्रयत्न हैं। वे देखने में पृथक् हैं तो भी अंततः एक ही उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। इन साधनाओं द्वारा जो फल प्राप्त होते हैं, उनका कारण यह है कि श्रद्धा अत्यंत ही प्रबल एक आध्यात्मिक शक्ति है, उसकी प्रचंड प्रेरणा के कारण छिपी हुई अंतरंग योग्यताएँ प्रस्फुटित हो उठती हैं। साधक इनका चमत्कार देखता है। उसे आम खाने से मतलब न कि पेड़ गिनने से। अध्यात्मवाद शक्तिशाली बनाने की विद्या है, इस विज्ञान का प्रधान कार्य यह है कि अपूर्णता की निर्बलता को दूर करके बल का, अस्थिरता को दूर करके स्थिरता का आविर्भाव करे। समस्त साधनाएँ 'श्रद्धा द्वारा शक्ति उत्पादन' के केंद्र बिंदु की परिक्रमा कर रही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन सबका अस्तित्व कायम रहा है।

आप आज की परिस्थितियों में देवी-देवताओं की उपासना में, तंत्र-मंत्रों की साधना में, गुरु-शिष्य परंपरा में दिलचस्पी नहीं रखते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा उसके लिए भी आग्रह नहीं है। जब दूसरे रास्ते मौजूद हैं तो अपनी सुविधा और रुचि का मार्ग पसंद करने की आजादी होनी चाहिए। मूल मंतव्य श्रद्धा से है, आप श्रद्धा को अपने अंदर स्थान देते रहिए। अपनी महानता में श्रद्धा रखिए, अपनी पत्नी के प्रेम में विश्वास कीजिए, बालकों की निष्कपटता पर भरोसा रखिये, माता-पिता और गुरुजनों के वात्सल्य पर यकीन कीजिए। इस दुनिया में पाप की अपेक्षा पुण्य अधिक है। अधर्म से धर्म ज्यादा है। भलाई से बुराई कम है, प्रकाश से अंधकार न्यून है, ऐसी मान्यता बनाइए। अविश्वास और आशंका को कम कीजिए, प्रियजनों की सच्चाई पर भरोसा बढ़ाइए।

यह ठीक है कि ठगी, कपट, धोखा-धड़ी और बनावट बहुत है, पर इतनी नहीं—जो त्याग, स्नेह, सरलता और सच्चाई से अधिक हो। यह विश्व ईश्वर की पुण्य कृति है, इसमें उपयोगी और आनंददायक तत्त्व अधिक हैं, ऐसी मान्यता को बढ़ाते जाइए। अपने बारे में भी इसी दृष्टिकोण से विचार कीजिए कि आप समर्थ हैं, दृढ़ प्रतिज्ञ हैं, वचन का पालन करते हैं, सच्चे हैं, ईमानदारी का आचरण करते हैं। भले ही दूसरे दोष मौजूद हैं, पर निःसंदेह आप में अच्छे गुण भी विद्यमान हैं और उनकी मात्रा दोषों की अपेक्षा कहीं अधिक है। अपने सात्त्विक अंशों का प्रसन्नतापूर्वक बार-बार निरीक्षण कीजिए और अपनी उच्चता पर, महानता पर विश्वास करिए, श्रद्धा करिए।

'परमार्थ' आपका लक्ष्य होना चाहिए, क्योंकि स्वार्थ का सबसे सुंदर वैज्ञानिक विधान परमार्थ है। दूसरों का लाभ सोचने से बढ़कर अपना लाभ और किसी बात में नहीं है। इसलिए परमार्थ पर श्रद्धा रखिए। अपनी पवित्रता पर श्रद्धा रखिए। ऐसे विश्वास और सिद्धांतों को अपनाइए, जिनसे लोककल्याण की दिशा में प्रगति होती हो। उन विश्वासों और सिद्धांतों को हृदय के भीतरी कोने में गहराई तक उतार लीजिए। इतनी दृढ़ता जमा लीजिए कि भ्रष्टाचार और प्रलोभन सामने-उपस्थित होने पर भी आप उन पर दृढ़ रहें, परीक्षा देने एवं त्याग करने का अवसर आये तब भी विचलित न हों। वे विश्वास, श्रद्धास्पद होने चाहिये, प्राणों से अधिक प्यारे होने चाहिये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राण रक्षा के लिए हर संभव उपाय को काम में लाया जाता है, आप अपनी श्रद्धायुक्त मान्यताओं की रक्षा के निमित्त बड़े से बड़ा जोखिम उठाने के लिए तत्पर हो जाइए।

अध्यात्मवाद कहता है कि आप अपनी मनोभूमि की रचना ऐसी कीजिए, जिसमें कोई विश्वास बोये जायें तो दृढ़तापूर्वक खड़े रहें। तर्क द्वारा भले-बुरे की पहचान किया कीजिए, असत्य के अंधेरे में सत्य को ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न किया कीजिये; परंतु मानव तत्त्व के मूलभूत सिद्धांत पर तर्क का कुल्हाड़ा मत चलाया कीजिए। बूढ़े माता-पिता की सेवा में पैसा खर्च करने से क्या लाभ ? स्त्री को जेवर क्यों न बनवा दूँ ? जिससे वह मेरी अधिक सेवा करे तर्क की दृष्टि से यही मानना पड़ेगा कि बूढ़े माता-पिता को एक कोने में पड़े रहना दिया जाए और स्त्री को जेवर बनवाये जाएँ, आज का प्रत्यक्ष लाभ इसी में है। यदि अपने जीवन निर्माण में भी तर्क पर अवलंबन किया तो सारी सात्त्विकता और महानता नष्ट हो जायेगी, मानव में पशुता से अधिक और कुछ शेष न रहेगा। अंतःकरण के उच्च दैवी गुण भले ही तर्क की तराजू में हलके बैठते हों, पर आप उन्हें छोड़िये मत। श्रद्धा द्वारा उनकी रक्षा कीजिए और आग्रहपूर्वक उन पर दृढ़ रहिये।

अध्यात्मवादी भौतिकता अपनाई जाए

इस संसार में भौतिकवादी रहते हैं और आध्यात्मिक व्यक्ति भी। आकार-प्रकार में उनमें कोई विशेष अंतर नहीं होता, दोनों ही सामान्यतया, समान रूप से खाते-पीते, सोते-जागते और काम-काज करते हैं। शारीरिक बनावट और मानवीय वृत्तियों में भी कोई विशेष अंतर नहीं होता। दोनों ही गृहस्थ बसाते हैं। दोनों साधारणतः एक जैसी परिस्थितियों में रहते और व्यवहार करते हैं। विपत्ति, संपत्ति, सुख-दुःख और उत्थान-पतन का काल-चक्र दोनों को छूकर गुजरता है। दोनों के सामने हँसने और रोने के अवसर आते हैं और वे हँसते भी हैं और रोते भी हैं। साधारण रूप से देखने पर भौतिक तथा आध्यात्मिक व्यक्तियों में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। दोनों प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के व्यक्ति एक जैसा दीखते और व्यवहार करते दृष्टिगोचर होते हैं, तथापि उनमें वस्तुतः आकाश-पाताल का अंतर होता है।

भौतिक और आध्यात्मिक व्यक्ति बाह्य आकार-प्रकार में मनुष्य ही होते हैं और साधारण दृष्टि से उनके बीच कोई अंतर नहीं होता। उनके बीच जो मूल अंतर होता है, वह होता है—आचार-विचार और जीवन के प्रति दृष्टिकोण का। भौतिक लोभ और वितृष्णाओं से अभिभूत व्यक्ति अधिकतावादी और आध्यात्मिक व्यक्ति संतोष-धनी होने से 'उत्कृष्टतावादी' होते हैं। जिसे अपने विषय में यह निश्चित करना हो कि वह वस्तुतः आध्यात्मिक व्यक्ति है अथवा भौतिक व्यक्ति, वह अपने आचार-विचार का तटस्थ होकर निरीक्षण करे और पता लगाये कि उसकी वृत्ति अधिकता की ओर जाती है अथवा उत्कृष्टता की ओर। यदि उसकी वृत्ति अधिकता की ओर जाती है तो उसे निःसंकोच भाव से स्वीकार कर लेना चाहिए कि वह भौतिक व्यक्ति है और यदि वह पाये कि उसकी अभिरुचि अधिकता में न होकर उत्कृष्टता में है, तो उसे आश्वस्त होकर परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए कि वह आध्यात्मिक वृत्ति का मनुष्य है। उसे अधिकार है कि वह अपने पर प्रसन्न हो और विश्वास कर ले कि उसका भविष्य उज्ज्वल है।

सामान्यतः लोग आस्तिक होते हैं और बहुत बार कुछ न कुछ भजन-पूजन और उपासना-अनुष्ठान भी करते रहते हैं। यह बातें बहुत कुछ इस बात की सिफारिश करती हैं कि ऐसे लोग अपने को आध्यात्मिक व्यक्ति मान लें। लेकिन यह मान लेने में भय न करना चाहिये कि मनुष्य की यह क्रियायें ही आध्यात्मिकता का प्रमाण नहीं हैं। आध्यात्मिकता वास्तव में वह आत्म-गौरव, आत्म-संतोष और आत्म-शांति है, जो किन्हीं भी कार्य-व्यवहारों में उत्कृष्टता के समावेश से उत्पन्न होता है। यदि सच्ची भावना से विरत रहकर चार-चार घंटे भजन-पूजन किया जाए, अनेक यज्ञ-अनुष्ठानों का आयोजन किया जाए, धर्म-कर्मों की झड़ी लगा दी जाए तो भी आध्यात्मिक उपलब्धि का प्रयोजन पूरा नहीं हो सकता और न ऐसा अन्यमनस्क धार्मिक व्यक्ति आध्यात्मिक ही माना जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इससे भिन्न यदि कोई व्यक्ति भावनापूर्वक श्रेष्ठ साधनों तथा उत्कृष्ट उद्देश्य के साथ आधे घंटे भी भजन-पूजन कर लेता है, छोटा-सा अनुष्ठान पूरा कर लेता है तो निश्चित रूप से वह आध्यात्मिक माना जायेगा और उसका अध्यात्म-परक प्रयोजन भी पूरा हो जायेगा। अध्यात्म का संबंध क्रियाओं की अधिकता से नहीं, उनकी श्रेष्ठता तथा उत्कृष्टता से है।

अधिकता का लोभ छोड़कर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने में आत्म-कल्याण की बड़ी गहरी संभावनाएँ सन्निहित हैं। आधिक्यवादी व्यक्ति बहुधा संसार-लोलुप होते हैं, उनकी इच्छा रहती है कि वे संसार-भोगों को अधिकाधिक मात्रा में भोगें। संसार की संपत्ति का अधिक से अधिक भाग उनके अधिकार में आ जाये। संसार-लोलुप जब व्यवसाय की कामना करता है तो उसकी असीमता में बह जाता है, किसी संख्या अथवा मात्रा में उसे संतोष नहीं होता। सौ के बाद हजार, हजार के बाद लाख—इसी तरह उसकी वित्त-वितृष्णा प्रसार पाती चली जाती है। जब वह मकान की कामना करता है, तो वह चाहता है—हो सके तो हर शहर और हर मोहल्ले में उसकी कोठियाँ और हवेलियाँ हों। सवारियों की कल्पना करता है तो बग्घी से लेकर स्थल, जल और वायु में चलने वाली हर सवारी चाहा करता है। भोजन और वस्त्रों के विषय में हर प्रकार और मूल्य की ओर उसकी जिज्ञासा दौड़ जाती है। संतानों से तो उसका जी भरता ही नहीं। तात्पर्य यह कि भौतिक अथवा संसार-लोलुप का विस्तारवाद किसी क्षेत्र में अपनी सीमा निर्धारित नहीं करना चाहता। वह संसार का सब कुछ अपने पक्ष में अधिकाधिक चाहा करता है।

यह बात ठीक है कि उपलब्धियों की एक निश्चित सीमा नहीं बाँधी जा सकती और न बाँधना ही चाहिए। इससे उन्नति, विकास और प्रगति में व्यवधान पड़ता है। अधिकाधिक उन्नति करना मनुष्य का लक्ष्य होना ही चाहिये, तथापि उसे अपने इस विस्तार अथवा आधिक्यवाद पर कुछ प्रतिबंध लगाने ही होंगे। ऐसा किये बिना वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने शस्त्र से आप घायल हो जायेगा, अपनी उन्नति से आप पतित हो जायेगा।

उन्नति और प्रगति पर लगाने योग्य प्रतिबंध है 'उत्कृष्टता'। मनुष्य जिस सीमा तक चाहे उन्नति और विस्तार करता चले किंतु इस बात का ध्यान रखे कि उसकी उस विस्तारगति में उत्कृष्टता का सन्निवेश बना रहे। आर्थिक विस्तार में उसे चाहिए कि वह कोई ऐसा व्यवसाय न करे, जो निम्नकोटि का हो। लाभ के लिए असत्य, अशुद्धता व विश्वासघात का सहारा न ले। धोखा, ठगी, मक्कारी और कपट से अपने कार्य-कलापों को बचाये रहे। व्यापार में सच्चाई का व्यवहार करे, वस्तुओं की शुद्धता सुरक्षित रखे। उचित मुनाफा और लोभ कमाये। अपने व्यवसाय की उन्नति तथा प्रगति के लिए न तो अनुचित साधनों का प्रयोग करे और न गर्हित उपायों का अवलंबन ले। साथ ही इस बात का ध्यान रखे कि उसका विस्तार किसी के ह्रास का कारण न बने और न शोषण अथवा परपीड़न का आधार लेकर ही आगे बढ़े। इस प्रकार की पवित्रता रखकर जो और जितना भी विस्तार किया जाएगा, वह श्लाघ्य ही होगा। इसके विपरीत जिस विस्तार अथवा विकास का आधार असत्य, अशुद्धता, शोषण और परपीड़न होगा, वह गर्हित तथा अवांछनीय माना जायेगा। इस प्रकार का निकृष्ट और अवांछनीय विस्तार मनुष्य के पतन का कारण बनता है। लोक-परलोक का कल्याण नष्ट कर देता है।

वह छोटी-सी प्रगति भी जो श्रेष्ठता और उत्कृष्टता से अलंकृत हो, उस विशाल विस्तार की अपेक्षा कहीं अधिक शुभ, कल्याणकारी, महान् और वांछनीय है, जो निकृष्ट उपायों को आधार बनाकर किया गया हो। 'थोड़ा किंतु उत्कृष्ट' एक ऐसा दिव्य सिद्धांत है, जो लोक से लेकर परलोक तक और भौतिकता से लेकर आत्मा तक सारे क्षेत्रों में होने वाली क्रियाओं और उनके फलों को आध्यात्मिक बना देता है।

अधिकता का ध्येय लेकर चलने वाले कई लोग यदि उत्कृष्टता की रक्षा कर लेते हैं तो यह नियम नहीं बल्कि एक अपवाद होगा। वैसे विस्तारवाद अथवा आधिक्यवाद में निकृष्टता की संभावना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाभाविक है। यही कारण है कि ज्ञानियों, विद्वानों और मनीषियों ने मनुष्यों को संतोष की शिक्षा दी है और तृष्णा, एषणा और लोभ का निषेध किया है। अन्यथा वे व्यक्ति और समाज के उत्थान के समर्थक विद्वान् अप्रगति अथवा सीमाबद्धता के कांक्षी नहीं हो सकते। उन्होंने मनुष्य की अतिवादी और विस्तारवादी नीति का निषेध उनकी प्रगति अवरुद्ध करने के मंतव्य से नहीं बल्कि इसलिए किया है कि लोभ और वितृष्णाओं के वशीभूत विस्तारवाद में पड़ने वाला व्यक्ति जीवन में उत्कृष्टता की रक्षा नहीं कर पाता। यह स्खलन मनुष्य की उस आत्मा के लिए बड़ा अहितकर होता है, जो जीवन का सर्वश्रेष्ठ सार और व्यक्ति की सबसे बड़ी संपदा मानी गई है। वह वैभव, वह संपत्ति, वह ऐश्वर्य, वह प्रतिष्ठा, वह महानता और वह विस्तार आदि सारी उपलब्धियाँ, जिनका आधार आत्मघातिनी निकृष्टता रही हो उन्नति के रूप में महान् पतन ही होती है। जिसकी आत्मा गिर गई, मलीन और निस्तेज हो गई, वह इंद्र पद पाकर भी दरिद्र ही रहेगा, सर्वस्ववान् होकर भी निकृष्ट बना रहेगा। वही उन्नति-उन्नति है, जो अस्तित्व के साथ व्यक्तित्व की भी संशोधिका हो, अन्यथा वह उस सोने के समान ही अग्राह्य है, जिसे पहनने से कान ही कट जायें।

ऐसा समझना कि भौतिकवाद कोई अपशब्द है अथवा भौतिकवादी कोई पापी लोग होते हैं—ठीक नहीं। मानव-जीवन में भौतिकवाद भी आवश्यक है। हमारे मनुष्य शरीर का जन्म ही पंच-भौतिकता से हुआ है। उसकी आवश्यकतायें भी भौतिक हैं, जिनकी पूर्ति भी भौतिक आधार पर ही हो सकती है। कोरा अध्यात्मवाद शरीर यात्रा को पूरा नहीं कर सकता। संसार में भौतिकता की भी आवश्यकता है, किंतु उसी सीमा तक जहाँ तक आत्मा का क्षेत्र प्रभावित न कर सके। भौतिकता की आवश्यकता शरीर निर्वाह तक है, उसके आगे जब उसमें अतिशयता, आधिक्य अथवा विस्तार का दोष आ जाता है, तो यही शरीर निर्वाह की आवश्यकता अनुचित बन जाती है। शरीर के उस निर्वाह के लिए वस्तुतः जितने की आवश्यकता है, मनुष्य को कोई भी ऐसा काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने की आवश्यकता नहीं है, जिसका प्रभाव आत्मा पर कलुष फेंकने वाला हो।

यदि आवश्यकता पर भौतिकता को साथ लेकर जीवन-यात्रा में चला जाये तो उससे आत्मा को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती और भौतिकता का वह निष्कलुष निर्वाह जिससे आत्मा प्रभावित नहीं होती, आध्यात्मिकता ही कही जायेगी। अध्यात्म संसार से अलग कोई विचित्र वस्तु नहीं है। वह उत्कृष्टता से अलंकृत मनुष्य का एक दृष्टिकोण है, जिसके समावेश से क्या भौतिक और क्या आत्मिक—कोई भी विषय अथवा व्यवहार आध्यात्मिक ही बन जाता है।

जीवन-यात्रा के लिए आवश्यक साधनों से आगे बढ़कर जब मनुष्य 'आधिक्य' अथवा विस्तार को अपना लक्ष्य बनाकर भौतिकवाद का उपासक बन जाता है और आत्म-रक्षा की उपेक्षा करने लगता है, तब ऐसे निकृष्ट भौतिकवाद का शब्द अपमानपूर्वक उच्चारण किया जाता है और ऐसे ही निकृष्ट भौतिकवादी को निम्न दृष्टि से देखा जाता है। उत्कृष्टता द्वारा आत्मा की रक्षा करते हुए, जो जितनी भी भौतिक उन्नति कर सकता है, करे। ऐसा पुरुषार्थी और पवित्र व्यक्ति बाहर से भौतिक अथवा सांसारिक दीखता हुआ भी वस्तुतः आध्यात्मिक ही होता है। ऐसे महान् सांसारियों का श्रेय पथ सदैव निष्कंटक और निरापद रहता है।

किंतु भौतिकता द्वारा अध्यात्म की साधना एक दुःसाध्य काम है। न तो यह साधना सामान्यतः की जा सकती है और न सर्व-साधारण इसे सुरक्षापूर्वक कर सकते हैं। इसीलिए समाज के शुभेच्छु ऋषि-मुनियों ने अनुभव और साधना के आधार पर यह सिद्धांत स्थिर किया है कि मनुष्य को भौतिक-वितृष्णाओं से दूर रहकर संतोषपूर्वक जीवन निर्वाह की शर्तें पूरी करते हुए, इस प्रकार जीवनयापन करना चाहिए, जिससे संसार भी निभता चले और आत्मा की भी रक्षा होती चले। इसी सिद्धांत को 'थोड़ा पर उत्कृष्ट' के कतिपय शब्दों में भी व्यक्त किया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो अधिकता के स्थान पर उत्कृष्टता का ध्यान कर संसार में रमण करते हैं, वे वितृष्णाओं के संकट से बचे रहते हैं। उनका शरीर और आत्मा, लोक और परलोक साथ-साथ ही प्रेय और श्रेय दोनों के द्वारा समान रूप से सुशोभित और आनंदित हो चलता है। अस्तु, हम सबको अधिकता की वितृष्णा त्यागकर उत्कृष्टता को ही ग्रहण करना चाहिए। इस वांछनीय ग्रहण द्वारा हमारा भौतिकवाद भी अध्यात्मवाद की तरह ही सुख एवं शांतिदायक बन जायेगा।

आध्यात्मिक साधना का चरम लक्ष्य

हमारी आध्यात्मिक साधना का चरम लक्ष्य क्या है ? यह उपनिषद् के निम्न वाक्य से स्पष्ट होता है—

"ते सर्वगं सर्वतः प्राप्त धारा युक्तात्मानं सर्वमेवा विशन्ति"। "धीरगण सर्वव्यापी को सकल दिशाओं से प्राप्त कर युक्तात्मा होकर सर्वत्र ही प्रवेश करते हैं।" सर्व में प्रवेश करना, युक्तात्मा होना, उस विश्वात्मा की अनुभूति प्राप्त करना ही हमारी साधना का लक्ष्य है। आत्मा द्वारा विश्वात्मा में प्रवेश करना ही आध्यात्मिक साधना की कसौटी है।

साधारण स्थिति में अथवा प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य एक सीमित आवरण में आवृत्त होकर पृथ्वी पर विचरण करता है। जिस प्रकार अंडे में स्थित पक्षी का बच्चा पृथ्वी पर जन्म लेता है, किंतु अंडे के आवरण में लिप्त हुआ जीवन लाभ भी प्राप्त नहीं करता। ठीक इसी प्रकार साधारण स्थिति में मनुष्य एक अस्फुट चेतना के अंडे में आवृत्त होता है। उस समय वह अपनी उस क्षुद्र इकाई को नहीं देख पाता, जहाँ संकीर्णता होती है, खंडता होती है, विभिन्नता होती है। जिस प्रकार जन्मांध व्यक्ति विस्तृत संसार की जानकारी नहीं कर पाता, वह सोचता है—शायद विश्व में और कुछ भी नहीं है, सर्वत्र अंधकार ही है। किंतु यदि उसकी आँख ठीक हो जाए अथवा विशेष उपकरणों के उपयोग से उसे दिखाई देने लगे तो विस्तृत विश्व की झांकी, संसार के क्रिया-कलापों को वह देख सकता है। विश्व भुवन के वैचित्र्य की, जिसकी उसे अंधेपन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवस्था में जरा भी जानकारी न थी, उसे देखकर वह सोचने लगता है, मैं इतने दिन तो इसी प्रकार कुछ नहीं समझते हुए घूमता रहा, आज मुझे इस संसार का दर्शन हुआ है। ठीक इसी प्रकार आत्मदृष्टि प्राप्त कर लेने पर होता है।

मनुष्य अपने आवरण में, अस्फुट चेतना के अंडे में खंडता, अनेकता के रंगीन चश्मे के परदे से जब अपने आपको निरावृत कर आत्मा द्वारा विश्वात्मा में प्रवेश कर लेता है, तब वह अपने विराट् एवं सर्वव्यापी स्वरूप को सकल दिशाओं में प्राप्त कर युक्तात्मा बन जाता है। सर्वत्र गमन करने की क्षमता प्राप्त करता है। परमात्मा की परम सत्ता में प्रविष्ट होकर ही आध्यात्मिक साधना का चरम लक्ष्य प्राप्त होता है। आत्मा विश्वात्मा में मिलकर ही अनेकों जन्मों की यात्रा पूरी करती है, यही मोक्ष, जीवनमुक्ति, प्रभु दर्शन, आत्म साक्षात्कार का वास्तविक स्वरूप है ? जीव चैतन्य और विश्व चैतन्य की एकता एकरसता प्राप्त कर लेना अध्यात्म जीवन की कसौटी है।

वह विश्व चैतन्य, विश्वात्मा क्या है ? इस पर उसकी अनुभूति प्राप्त करने वाले उपनिषदकार कहते हैं।

"वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक स्तेनेदं पूर्ण पुरुषेण सर्वम्" "वृक्ष की भाँति आकाश में स्तब्ध हुए विराज रहे हैं—वही एक। उस पुरुष में उस परिपूर्ण में यह समस्त ही पूर्ण हैं।

यथा सौम्यं वयांसि वासो वृक्ष सम्प्रतिष्ठन्ते।
एव ह वै तत् सर्व पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठिते।।

हे सौम्य ! जिस प्रकार वास वृक्ष में पक्षी आकर स्थित होते हैं, निवास करते हैं, वैसे ही यह जो कुछ है, समस्त तत्त्व परमात्मा में प्रतिष्ठित रहता है।

परमात्मा की विराट् सत्ता ही सर्वत्र व्याप्त है। यह सारा दृश्य जगत् उसी में स्थित है। जब आत्मा उस विश्वात्मा की अनुभूति प्राप्त कर उसी में लीन हो जाती है, जब जीव चैतन्य और विश्व चैतन्य में एकाकार स्थापित हो जाता है, तभी अनिवर्चनीय आनंद की प्राप्ति होती है। उस प्राप्ति में ही जीवन का सौंदर्य है, शांति है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंगल है, अमृत है। उस विश्वात्मा का, जो सर्वत्र ही व्याप्त है, अनुभूति प्राप्त कर मनुष्य निर्भय होकर विचरण करता है। सर्वत्र उसी के दर्शन करता है, तब उसे दूसरा कुछ और दिखाई ही नहीं देता।

हम जीवन को तथा विश्वात्मा के विराट् स्वरूप को खंड-खंड करके देखते हैं। हम आत्म दृष्टि से न देखकर स्थूल से देखते हैं और खंडता, विभिन्नता को प्रधानता देते हैं। मनुष्य को हम आत्मा द्वारा न देखकर इंद्रियों द्वारा, युक्तियों द्वारा, स्वार्थ, संस्कार और संसार द्वारा देखते हैं। अमुक वकील हैं, डॉक्टर हैं, संत हैं, दुष्ट हैं, नीच हैं, दयालु हैं, कुरूप है, सुंदर है आदि निर्णय दे, हम मनुष्य को विशेष प्रयोजनयुक्त अथवा विशेष श्रेणीयुक्त के आकार में देखते हैं। यहाँ हमारी परिचय शक्ति रुक जाती है। इस संकीर्ण आवरण के कारण हम आगे प्रविष्ट नहीं होते। इस खंडता, विभिन्नता में ही हम अपने को रक्षित समझते हैं, हमारे विषय प्रबल हो उठते हैं, धन, मान, पद-प्रतिष्ठा हमें तरह-तरह से नाच नचाते हैं। हम दिन-रात ईंट, काठ, लोहा, सोना इकट्ठा करने में लगे रहते हैं; द्रव्य सामग्री संग्रह करने का अंत नहीं होता। जीवन के शेष दिन परस्पर की छीना-झपटी, मारकाट अपने प्रतिवेशियों के साथ निरंतर प्रतियोगिता में बीतते हैं। इस खंड-खंडता में दुःख, अशांति, क्लेश, उद्वेग, नाटकीय यातनाओं का भारी बोझा लादे हुए जीवन पथ पर चलना पड़ता है। इनका तब तक अंत नहीं होता जब तक हमारी दृष्टि इन नानात्व से हटकर सर्वात्मा की ओर नहीं लगती। कहा भी है—

"मृत्योः च मृत्यु माप्नोति य इह नानेव पश्यति" जो उसे नाना करके, खंड-खंड करके देखता है, वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है।

येना हं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम

अध्यात्म पथिक कहता है—'जिसके द्वारा मुझे अमृत की प्राप्ति न हो उसे लेकर मैं क्या करूँगा ?" जो बँटा है, विच्छिन्न है, खंड-खंड है, वही मृत्यु के द्वारा आक्रांत है, अतः इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्याग आवश्यक है और उस विश्वात्मा की अनुभूति—उस परम पुरुष, परम-सत्ता जिससे परिपूर्ण यह समस्त ही पूर्ण है, उसे वरण करना आत्मा का, जीव चैतन्य का प्रधान धर्म है। यही परम गति है—

एसास्य परमागतिः एसास्य परमा संपद्।
ऐसोऽस्य परमो लोकः एसोऽस्य परम आनंदः।।

वह परमात्मा ही जीवों की परम गति हैं, परम संपद् हैं। वह ही जीवों का परम लोक एवं परम आनंद हैं।"

एस सर्वेश्वर एस भूताधिपतिरेस भूतपाल।
एस सेतुविधरणा एसां लोकानाम् सम्मेदाय।।

"यह परमात्मा ही सबका ईश्वर है, समस्त जीवों का अधिपति है और समस्त जीवों का पालनकर्ता है। वह विश्वात्मा ही सेतु स्वरूप होकर समस्त लोक को धारण करके ध्वंस से उसकी रक्षा करता है।

अध्यात्म साधना, मानव जीवन का परम लक्ष्य अपने दृष्टिकोण को खंड खंडता, विभिन्नता, संकीर्णता से हटाकर सर्वत्र उस विश्वात्मा, परमात्मा की विराट् सत्ता का दर्शन और उसकी अनुभूति प्राप्त करना मनुष्य के लिए यही सत्य और सनातन राजमार्ग है। जब जाति, गुण, कर्म, स्वभाव, संस्कार आदि समाप्त हो जाते हैं। मानव मात्र में आत्म-दृष्टि से देखने पर सर्वत्र उस विश्वात्मा की प्रतिष्ठापना के दर्शन होते हैं। इतना ही नहीं, प्राणी मात्र को वृक्ष, वनस्पतियाँ, जड़-चैतन्य में उसी परम शक्ति का क्रिया-कलाप दिखाई देता है और तभी अनिवर्चनीय आनंद की प्राप्ति होती है। जिस क्षण उस विश्वात्मा की अनुभूति प्राप्त होगी उसी क्षण समस्त पाप, ताप, अभ्यासजनित संस्कार, आचरणों का अंत हो जायेगा और "अमृत यद्विभाति"—अर्थात् अमृत रूप में जो सबमें प्रकाशित है, उसी अमृत में आत्मा का प्रवेश होगा। फिर सर्वत्र आनंद रूपी अमृत के ही दर्शन होंगे। हमारी आत्मा में भूमा स्थित तत्त्व का दिव्य प्रकाश मुखरित हो उठेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म लक्ष्य की सर्वांगपूर्णता

विश्व शांति और लोक मंगल का आधार यह है कि सब लोग स्वभावतः एक दूसरे के प्रति प्रेम, आत्मीयता, उदारता, सेवा एवं सहानुभूति का व्यवहार करें। एक दूसरे के दुःख-दर्द को समझें और उसे घटाने एवं मिटाने का भी ऐसा ही प्रयत्न करें जैसा कि अपने निज के कष्ट को मिटाने के लिए किया जाता है। दूसरों की उन्नति सुविधा एवं प्रसन्नता में लोग वैसा ही आनंद अनुभव करें जैसे अपने आपको कोई लाभ मिलने पर होता है। दूसरों की प्रसन्नता एवं उन्नति के लिए लोग वैसा ही प्रयत्न करें जैसा अपने उत्कर्ष के लिए किया जाता है। आत्मीयता की, आत्मिक एकता की, इस परिधि को बढ़ाना आध्यात्मिकता का व्यावहारिक बाह्य रूप है।

जिस प्रकार भगवान् के दो रूप हैं, एक निराकार और दूसरा साकार, दोनों का मिला हुआ रूप ही भगवान् का सर्वांगपूर्ण रूप है। इसी प्रकार अध्यात्म का निराकार रूप वह है, जो हमारे अंतःकरण में आस्तिकता, धार्मिकता एवं भक्ति भावना को ओत-प्रोत रखता है। पूजा, उपासना, ध्यान, भजन, स्वाध्याय, चिंतन आदि उसके उपाय हैं। पर इतने मात्र को ही अध्यात्म का पूर्ण स्वरूप नहीं माना जा सकता, यह तो उसका एक अंश मात्र है। पूर्णता तब आती है जब बाह्य वातावरण में भी वह अध्यात्म भावनाएँ साकार रूप से दिखाई देती हैं। जैसे हमारा मन अध्यात्म तत्त्व में डूबा रहने पर सुख प्राप्त करता है, वैसे ही हमारा समाज यदि आध्यात्मिक आदर्शों को अपनाकर धर्म नीति पर चले तो शांति की स्थापना हो सकती है। भीतर उत्पन्न होने वाली दुर्भावनाओं की बाहर फैलने वाली सडाँध ही अशांति के रूप में प्रकट होती है। यदि समाज में उपस्थित अनेक समस्याओं, बुराइयों, उलझनों, संघर्षों का स्थायी समाधान करना है तो मनुष्य के भीतर भरी हुई दुर्भावनाओं की सड़ाँध को साफ करना पड़ेगा। अन्यथा बाह्य उपचार इसके लिए कुछ विशेष कारगर न होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलग-अलग समस्याओं के अलग-अलग उपाय एवं समाधान भी हो सकते हैं, पर वे सब होंगे सामयिक ही, तात्कालिक ही। उनसे स्थायी हल न निकलेगा। रक्त विषैला हो रहा हो तो एक फुंसी को मरहम लगाकर अच्छा भले ही कर लिया जाए, अन्य नई फुँसियाँ उठने से रोक सकने में बेचारी मरहम कैसे सफल होगी ? रक्त को शुद्ध करने वाले उपचार से ही फुँसियों की स्थायी चिकित्सा हो सकती है। इसी प्रकार बाह्य जीवन में, व्यापक समाज क्षेत्र में जो अशांति दीख पड़ती है, उसका शमन तभी संभव है जब मूल कारणों को, आंतरिक दुर्भावनाओं को हटाया जाये।

अध्यात्म तब तक एकांगी एवं अपूर्ण है जब तक कि अपने भीतर के सीमित क्षेत्र तक ही अवरुद्ध है। उसका प्रकाश एवं विकास बाहर भी होना चाहिए। पूजा के साथ-साथ हमें बाह्य वातावरण को भी, समाज को भी—अपना ही शरीर, अपना ही परिवार मानकर उसका सुव्यवस्थित निर्माण करने का भी प्रयत्न करना चाहिए। कोई स्त्री स्वयं तो फैशन बनाये बैठी हो, पर उसके बाल-बच्चे गंदगी में लिपटे, फूहड़पन के साथ अव्यवस्थित रीति से विचर रहे हों तो वह फैशन बनाये बैठी स्त्री निंदा ही नहीं उपहास की पात्र भी होगी। उसका फैशन न बनाना तभी सार्थक होगा, तभी उसकी सुरुचि को प्रामाणित करेगा, जब वह अपने बाल-बच्चों को भी साफ-सुथरा बनाये होगी। बच्चों के प्रति उपेक्षा बरतने से तो यही सिद्ध होता है कि उसके स्वभाव में सफाई या सौंदर्य नहीं है, केवल अपने शरीर का आडंबर बनाए बैठी है। यदि उसे वस्तुतः सुरुचि का अभ्यास होता तो जरूर अपने बच्चों को, घर को तथा अन्य वस्तुओं को भी सुसज्जित एवं शोभनीय ढंग से रख रही होती। ठीक यही बात उन लोगों पर लागू होती है, जो अपने आपको अध्यात्मवादी एवं भजनानंदी कहते हैं। अग्नि के समान ही अध्यात्म भी एक प्रभावशाली तत्त्व है, जहाँ अग्नि रहेगी वहाँ गर्मी और रोशनी भी दीख पड़ेगी। जहाँ अध्यात्म रहेगा वहाँ का समीपवर्ती वातावरण भी श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता की विशेषताओं से प्रभावित हो रहा होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि हम सच्चे अध्यात्मवादी होंगे तो यह हो ही नहीं सकता कि उस तथ्य से निकटवर्ती वातावरण बिना प्रभावित हुए बना रहे।

जिस विश्व शांति का, युग निर्माण का लक्ष्य लेकर हम अग्रसर हो रहे हैं, वह तभी संभव है जब मनुष्य समाज में आदर्शवाद, कर्तव्यपरायणता, आत्मीयता, उदारता, सेवा भावना जैसे गुणों का विकास हो। श्रेष्ठ गुणों से ही मनुष्य की महानता प्रकाश में आती है। संपत्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्ता, संगठन आदि विभूतियाँ कितनी ही बड़ी मात्रा में उपलब्ध हो जाने से मनुष्य श्रेष्ठ नहीं बन सकता और यदि उसका अंतःकरण दुष्टता से भरा रहा तो इनके द्वारा वह और भी अधिक अनर्थ करेगा। इसलिए विश्व-शांति की दृष्टि से श्रेष्ठ सद्गुणों की संपदा को ही इस संसार में बढ़ाया जाना आवश्यक है। इसका ही गीताकार ने "दैवी संपदा" के रूप में वर्णन किया है। इस संसार की सबसे बड़ी संपत्ति एवं विभूति, दैवी संपदा ही है। इसकी जितनी अभिवृद्धि होगी, उतना ही मानव-जीवन में सुख-शांति का आधार सुदृढ़ होता चला जायेगा।

आत्म-कल्याण का लक्ष्य निश्चित रूप में तब तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक बाह्य परिस्थितियाँ, अनीति एवं अव्यवस्था से भरी रहेंगी। त्रेता युग में रावण की अनीति ने बेचारे तपस्वियों को तप करना दुर्लभ कर दिया था, उनकी हड्डियों के बड़े-बड़े ढेर भगवान् राम ने वनवास के समय जहाँ-तहाँ पड़े देखे तो उनकी आँखें बरसने लगीं और तत्काल उन्होंने भुजायें उठाकर "निशिचर हीन करौं मही" की प्रतिज्ञा कर डाली। इस कार्य को संपन्न किये बिना भगवान् राम अपना अवतार लक्ष्य पूरा भी नहीं कर सकते थे। धर्म की स्थापना के साथ-साथ अधर्म का उन्मूलन भी तो अवतार का लक्ष्य होता है। यदि वे केवल ऋषियों की भक्ति भावना का उपदेश मात्र ही देते रहते और उधर असुर अपने उपद्रव यथावत् जारी रखते तो रामचंद्र जी का उद्देश्य कैसे पूरा होता ? बेचारे तपस्वी उसी प्रकार सताये जाते और असुरों द्वारा खाये जाते रहते, बंधन में बँधे हुए देवता रावण के बंदीगृह में कराहते रहते। ऐसी दशा में ऋषियों का ज्ञान, ध्यान और देवताओं की पूजा-अर्चना से भी कितना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोजन सिद्ध होता ? इन तथ्यों को समझते हुए भगवान् ने असुरता का उन्मूलन ही अपना लक्ष्य बनाया था।

हमें अध्यात्म को एकांगी नहीं, सर्वांगीण एवं परिपूर्ण बनाना होगा। हम पूजा-उपासना को अपना एक प्रिय एवं आवश्यक कार्यक्रम मानते हैं। सही दिशा में चलने का यह प्राथमिक, महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली कदम हैं। जो उपासना नहीं करता उसका मार्ग अंधेरे से, कंटकों से भरा हुआ है। जिसका आधार सही है, अवलंबन सच्चा है वह आज न सही कल, अब तक न सही फिर कभी गंतव्य लक्ष्य तक पहुँचेगा ही। पर यहाँ एक ही बात ध्यान रखने की है कि लक्ष्य और दिशा सही हो जाने पर भी दोनों पैरों से चलने का प्रबंध करना पड़ेगा। लंगड़े व्यक्ति भी लकड़ी की टाँग लगाकर या हाथों का सहारा लेकर घिसटने की व्यवस्था बनाकर आगे बढ़ते हैं। यदि ऐसी कोई सहायक व्यवस्था न बनाई जाए तो केवल एक टाँग से सही रास्ता मिल जाने पर भी उस पर चल सकना और गंतव्य स्थान तक पहुँच सकना संभव न होगा। अध्यात्म मार्ग में भी दो टाँगों की जरूरत है। एक टाँग है साधना, दूसरी है सेवा। भीतरी, अंतःकरण की सफाई के साथ-साथ, बाहरी सामाजिक सफाई के लिए भी सक्रिय होना आवश्यक है। इसी प्रयत्नशीलता पर युग निर्माण का आज का सपना कल सार्थक एवं मूर्तिमान् होकर सामने प्रस्तुत हो सकता है।

मनुष्य अपनी स्वार्थपरता पर अंकुश लगाना और परमार्थ वृत्ति को बढ़ाना आरंभ करे तभी यह संभव है कि सभ्य समाज की रचना हो सके। चूँकि विश्व शांति का आधार सभ्य समाज की रचना ही है और वह मानसिक स्वच्छता के आधार पर अवलंबित है, इसलिए हमें सभ्य समाज और स्वच्छ मन के अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने में जुटना होगा। शारीरिक अस्वस्थता का निवारण-स्वस्थ शरीर का लाभ भी तभी मिलेगा, जब मनोभूमि में आत्म-संयम का समुचित स्थान हो। असंयमी लोगों का न शरीर स्वस्थ रहता है और न मन, फिर उन्हीं लोगों का समूह—समाज भी सभ्य कैसे रह सकेगा ? इन सब बातों पर विचार करते हुए हमें अपनी आत्मिक प्रगति को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वांगपूर्ण बनाने की दृष्टि से भी और विश्वशांति की दृष्टि से भी अपने समीपवर्ती समाज की मनोभूमि उत्कृष्ट बनाने का कार्यक्रम हाथ में लेना होगा। विचारों से ही क्रिया उत्पन्न होती है। अवांछनीय क्रियाएँ रोकनी हैं तो उनकी जड़ खोदनी होगी। पाप या पुण्य की जड़ मन में रहती है। मन को पवित्र बनाने का धर्म अभियान जब तक संगठित एवं व्यवस्थित रूप में न चलाया जायेगा तब तक अन्य राजनैतिक एवं आर्थिक आधार पर चलने वाले आंदोलन से कदापि कोई ठोस परिणाम निकल न सकेगा।

पारस्परिक सद्भावनाएँ जिस प्रकार बढ़ सकें, व्यक्ति अपनी तृष्णा और वासना पर जिस प्रकार नियंत्रण रख सके, दूसरों की सेवा सहायता करते हुए जिस प्रकार वह संतोष लाभ कर सके, उसी आधार को बलवान् करने से मनुष्य अधिक सभ्य, अधिक पवित्र, अधिक श्रेष्ठ एवं अधिक महान् बन सकेगा। यह श्रेष्ठता ही देवत्व है। मनुष्य असुर भी है और देवता भी। दुर्बुद्धि और दुष्टता को अपनाकर वह असुर बन जाता है, सद्बुद्धि एवं सज्जनता को धारण कर देवता के रूप में परिलक्षित होता है। बढ़ी हुई असुरता के कारण आज चारों ओर अंधकार एवं विपत्तियों की काली घटाएँ घुमड़ रही हैं, इनको हटाया जाना तभी संभव है, जब देवत्व का तूफानी पवन चलने और आध्यात्मिकता का प्रचंड सूर्य उदय होने लगे। हमारे सत्प्रयत्नों से यह सर्वथा संभव है। मनुष्य की आत्मिक शक्ति की महत्ता अत्यधिक प्रबल है। साधारण लोगों का संघबल असाधारण लगने वाले, आश्चर्यजनक दीखने वाले कठिन कार्यों को पूरा कर दिया करता है, फिर अध्यात्म का आधार लेकर चलने वाले, सदुद्देश्य एवं विश्व शांति के लिए आत्म-त्याग करने वाले लोगों का समूह यदि अपनी गहन श्रद्धा का संबल पकड़कर अग्रसर होगा तो क्या युग-निर्माण का सपना, सपना ही बना रहेगा या वह योजना, योजना मात्र ही बनी रहेगी ? नहीं, ऐसा हो नहीं सकता। युग, अपनी पुकार किन्हीं भी छोटे-बड़े लोगों को निमित्त बनाकर अपने आप पूरा कर लिया करता है। समय की आवश्यकतायें किसी न किसी माध्यम से पूरी होकर रहती हैं। अशांति की विपन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियों से संत्रस्त मानवता की आज एक ही पुकार है—मानवता का युग आये। यह पुकार अनसुनी नहीं रह सकती है, न ही उपेक्षित। वह सुनी भी जायेगी और पूर्ण भी होगी। फिर उस सफलता का श्रेय लाभ करने में हम भी सम्मिलित क्यों न हों ? अपनी आध्यात्मिक साधना को अधूरी, लंगड़ी एवं एकांगी रखने की अपेक्षा उसे सर्वांगपूर्ण बनाने का प्रयत्न क्यों न करें ?

अपने अतीत को भूलिए नहीं

भारतीय धर्म, संस्कृति और सभ्यता का जिन्होंने अध्ययन, अनुभव एवं अवगाहन किया है, उसके मूल तक पहुँचे हैं, उन्होंने इसकी सार्वभौमिकता, विशालता तथा पवित्रता से इनकार नहीं किया। हमारा दर्शन संपूर्ण विश्व के लिए प्रकाश है। उस प्रकाश का लाभ सभी जातियों ने पाया है। अपने ज्ञान, अपनी साधना और अपनी तपश्चर्या के लाभ हमने सारे संसार को बाँट दिये हैं। उस अनुदान का लाभ सारा विश्व उठा रहा है, किंतु हमने तो अपने प्राचीन गौरव को ही भुला दिया। अपने आदर्शों से च्युत होकर अपनी सारी भौतिक विभूतियाँ एवं आध्यात्मिक संपदायें खोकर रख दीं। समय उन्हें फिर से जाग्रत् करने का संदेश दे रहा है। वह युग आ गया जब इस आवाहन को अनसुना कर टाल नहीं सकते।

हीरे की परख जौहरी को होती है। हम जिस अतीत को आज भूलकर बैठे हैं, उसके महत्त्व को पाश्चात्य मनीषियों ने, कला-पारखियों ने समझा और उसकी प्रशंसा की है। इतिहास में अनेकों वर्णन, विश्लेषण एवं विज्ञप्तियाँ भरी पड़ी हैं। उनका अध्ययन करने से आँखें खुल जाती हैं और अपने सही रूप का पता चल जाता है। प्रख्यात जर्मन-दार्शनिक मैक्समूलर ने लिखा है—

"यदि कोई मुझसे पूछे कि वह कौन-सा देश है, जिसे प्रकृति ने सर्वसंपन्न, शक्तिशाली एवं सुंदर बनाया है तो मेरा संकेत भारतवर्ष की ओर होगा। जिन्होंने प्लेटो और कांट के दर्शन का अध्ययन किया है, उन्हें भी अपने मुख्यतम गुणों का विकास करने वाली, जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर गहराई से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोच-विचार करने वाली भारतीय-संस्कृति के अध्ययन की जरूरत है। अपने जीवन को अधिक पूर्ण, अधिक विस्तृत और अधिक व्यापक बनाने के लिए भारतीय विचार पर्याप्त हैं, न केवल इस जीवन के वरन् मनुष्य के अनंत जीवन के पूर्ण वैज्ञानिक विश्लेषण की क्षमता केवल भारतवर्ष में है।"

मैक्समूलर ने इन पंक्तियों में हमारी आध्यात्मिक शोधों की ओर संकेत किया है। इन तथ्यों का विस्तृत विश्लेषण, जिसकी अभी तक कोई थाह नहीं पा सका, वह सब हमारे वेदों में समाहित है। वेद धर्म के मूल आधार हैं। इनमें मनुष्य की आध्यात्मिक तथा भौतिक आवश्यकताओं के सभी विषयों का समावेश है। यह ज्ञान अंत में अनेकों धाराओं में प्रवाहित होकर बहा, जिससे न केवल यहाँ का आध्यात्मिक जीवन समृद्ध बना, अपितु भौतिक संपन्नता भी-अपने ही अनुकूल विशेषण लेकर प्रस्तुत हुई। "इंडिया रिव्यु" में विद्वान् अमेरिकी लेखक मि० डेलभार ने लिखा है—

"पश्चिमी चीजों को जिन बातों पर अभिमान है, वे सब भारतवर्ष से आयी हैं और फल-फूल, पेड़-पौधे तक जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, वे भारतवर्ष से ही लाकर यहाँ लगाये गये हैं। घोड़े, मलमल, रेशम, टीन, लोहा तथा सीसे का प्रचार भी योरोप में भारतवर्ष से ही हुआ है। इतना ही नहीं ज्योतिष, वैद्यक, अंकगणित, चित्रकारी तथा कानून भी भारतवासियों ने ही योरोपियनों को सिखलाया है।"

भारतवर्ष केवल हिंदू धर्म का ही घर नहीं, उसमें संसार की सभ्यता का आदिभंडार है। यहाँ का जीवन सरल, महत्त्वपूर्ण तथा अति प्राचीन है। श्रद्धा और भक्ति, विश्वास और निश्चय से भरा हुआ यह अपना भारतवर्ष किसी समय ज्ञान-विज्ञान का सम्राट् बना हुआ था। यहाँ मनुष्य की शाश्वत आशायें और सांत्वनाएँ घनीभूत थीं। ऋषियों की गंभीरता को हृदयंगम कर पाना भी कठिन है, जिन्होंने सर्वप्रथम इस संसार में विचार और विवेक को जन्म दिया था। वास्तविक जीवन के सिद्धांतों का अनुसंधान इसी पवित्र भूमि में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ है। इसलिए सारे संसार ने इसे शीश झुकाया, इसकी अभ्यर्थना की है। एम० लुई जेकोलियट ने लिखा है—

"ऐ प्राचीन भारत वसुंधरे ! मनुष्य जाति का पालन करने वाली, पोषणदायिनी तुझे प्रणाम है। शताब्दियों से चलने वाले आघात भी तेरी पवित्रता को नष्ट नहीं कर पाये। श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान को जन्म देने वाली भारत-भूमि को मेरा कोटिशः नमस्कार है।"

भारतवर्ष का सम्मान और इसकी प्रतिष्ठा का मूल कारण यहाँ का धर्म है। इसे औरों ने संप्रदाय के रूप में भले ही देखा हो, किंतु वस्तुतः हिंदू धर्म का मूल सिद्धांत है—मानवीय आत्मा के गौरव को प्राप्त करना और फिर उसी के अनुसार आचरण करना। शास्त्रकार ने लिखा है—

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चाऽवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अर्थात् सुनो, धर्म का सार यह है कि दूसरों के साथ वैसा व्यवहार मत करो जैसा तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे प्रति किया जाए, इसको सुनो ही नहीं आचरण भी करो।"

धर्म का यही स्वरूप सुखद व सर्वहित में है। इसमें प्राणिमात्र की जीवनरक्षा और सुखोपभोग की व्यावहारिक कल्पना है। अपने इसी रूप में हमारा अतीत उज्ज्वल, सुखी और शांतिमय रहा है। आज भी सारे विश्व को इसी की आवश्यकता है।

धर्म के जिस रूप की यहाँ व्याख्या की गई है वह आदर्श है; किंतु वह बिना किसी महान् शक्ति के आश्रय में रहे हुए स्थिर नहीं रह सकता। मानवीय हितों की सुरक्षा की आज भी सारे संसार में व्यवस्था है, किंतु उसका परिपालन पूर्णतया कहीं भी नहीं है, इसी से सर्वत्र अस्त-व्यस्तता है। जो शक्तियाँ इन कार्यों के लिए नियुक्त भी हैं, वे भी पूर्णतया विध्वंसक हैं। भारतीय धर्म की पूर्ण शक्ति समन्वय-युक्त है। इसीलिए इसमें समाज के एक व्यक्ति की भी सुरक्षा रही है। वह शक्ति यहाँ की आध्यात्मिक शक्ति ही है। शक्ति का विकास गुण-विकास पर भी है और उसका एक नितांत वैज्ञानिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंग भी है। ऐसी विशेषता केवल हमारे यहाँ ही है। "धर्म" के साथ "साधना" का शब्द जोड़ दिया जाता है, वह इसी शक्ति का ही बोधक है। आध्यात्मिक शक्तियों के विकास पर ही संपूर्ण प्राणियों के हित का सिद्धांत निश्चयात्मक रूप से चल सकता है। बिना इसके सामाजिक जीवन की सुव्यवस्था का और कोई दूसरा ठोस आधार नहीं हो सकता। इसी रूप में हम अपने आपको पूर्ण शक्तिसंपन्न, श्रेष्ठ और शिरोमणि सिद्ध कर सके हैं। विक्टर कोसिन ने इसी तथ्य का दावा करते हुए लिखा है—

"जब हम भारत की साहित्यिक एवं दार्शनिक कृतियों का अवलोकन करते हैं, तब हमें ऐसे अनेक गंभीर सत्यों का पता चलता है, जहाँ पर पहुँचकर योरोपीय ज्ञान की शक्ति शिथिल पड़ जाती है। हमें भारतवर्ष के इसी तत्त्व के आगे अपने घुटने टेक देने पड़ते हैं।"

काल प्रभाव से यद्यपि अब वैसी शक्ति और सामर्थ्य हममें नहीं रही, जो हमारे अतीत का गौरव थी, किंतु अभी न तो वह ज्ञान ही नष्ट हुआ है और न विज्ञान ही पूर्णतया समाप्त हुआ है। हमारी वृत्तियों में जो भौतिकवादी निकम्मापन भर गया है, उसी के कारण आज यह दुर्दशा हो रही है कि हमारा न तो व्यक्तिगत जीवन ही कुशल है, न सामाजिक ढाँचा ही व्यवस्थित है। जिन तथ्यों को विदेशियों ने समझ लिया है उन पर,अभी हमारे अपने ही लोगों की गहरी दृष्टि नहीं पड़ी। हमारे आदर्शों की गहराई में पहुँचने वाले किसी भी व्यक्ति को खाली हाथ नहीं लौटना पड़ा। उन्हें कुछ मिला ही है। अतः अपनी शक्ति का आभास होना पुनर्जागरण की इस पुण्य बेला में प्रत्येक दृष्टि से आवश्यक है।

वे चरित्र और आदर्श जो यहाँ के मानस को संस्कार देते हैं भले ही प्रसुप्त हों, पर अभी भी जीवित हैं। यदि ऐसा न रहा होता तो हमारा धर्म, संस्कृति तथा सभ्यता कभी की टूटकर बिखर गई होती, जैसा कि और जातियों की संस्कृतियों के साथ हुआ। अपने दृढ़ सिद्धांतों और पुष्ट-संस्कारों के कारण, वह आज भी अटूट और अडिग बनी हुई है। अब उन आदर्शों को पुनः जाग्रत् करना होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खोये हुए अतीत को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा, उसी से हमारा और समस्त संसार का कल्याण होगा।

महान् अतीत को वापस लाने का पुण्य प्रयत्न

भारतवर्ष की सबसे बड़ी विशेषता और महत्ता उसका अध्यात्मवादी दृष्टिकोण है। अतीत काल से अब तक हमारे देश का गौरव इसी आधार पर प्रकाशवान् रहा है। एक समय था जब यहाँ के निवासी तैंतीस कोटि देवताओं के नाम से पुकारे जाते थे, ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि में उन्हें जगद्गुरु की पदवी प्राप्त हुई थी। व्यवस्था, दूरदर्शिता और प्रतिभा का स्तर अत्यंत ऊँचा होने के कारण चक्रवर्ती शासन का गुरुतर भार उन्हीं के कंधों पर डाला जाता था। धन, विद्या, चरित्र सब दृष्टियों से यह देश नर-रत्नों की खान माना जाता था। इस सबका कारण यहाँ की आध्यात्मिक विशेषता ही थी।

अध्यात्म-तत्त्वज्ञान को पारस माना गया है, क्योंकि उसका स्पर्श होते ही लोहे के समान तुच्छ श्रेणी के व्यक्तित्व भी सोने के समान बहुमूल्य और आकर्षक बन जाते हैं। अध्यात्म को कल्पवृक्ष कहा गया है, क्योंकि उस दृष्टिकोण के प्राप्त होते ही मनुष्य आप्तकाम बन जाता है। अनावश्यक तृष्णाओं को वह मस्तिष्क में से कूड़े-कचरे की तरह बुहारकर बाहर फेंक देता है और जो कामनाएँ आवश्यक होती हैं, उन्हें तत्परता, पुरुषार्थ और लगन के साथ पूरा करने में जुट जाता है। इस प्रकार कार्य-संलग्न हुए व्यक्ति के लिए असफलता नाम की कोई वस्तु बाकी नहीं रहती। आलस्य और प्रमाद ही असफलता के जनक हैं, इन दो शत्रुओं को परास्त कर देने के बाद मनुष्य को आप्तकाम होने में देर नहीं लगती। उसकी कोई कामना अधूरी नहीं रहती।

अध्यात्म का आधार संयम है और संयमी मनुष्य के लिए शारीरिक अस्वास्थ्य का प्रश्न ही नहीं उठता। अध्यात्म का मूल मंत्र प्रेम है। जो दूसरों के साथ आत्मीयता, उदारता, सेवा, सहिष्णुता और मधुरता का व्यवहार करेगा उसके लिए दूसरों का सहयोग,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्भाव एवं सौजन्य मिलेगा ही। सर्वत्र उसे स्नेही और सज्जन ही भरे हुए मिलेंगे। अध्यात्म-तत्त्वज्ञान आत्मशोधन पर अवलंबित है। जो अपने दोष और त्रुटियों को समझ लेगा और उन्हें सुधारने के लिए सचेष्ट रहेगा, उस व्यक्ति के सामने न तो कोई समस्या रहेगी और न उलझन। जब मनुष्य अपने ही दोष, दुर्गुण, कुविचार, कुसंस्कारों को रंगीन चश्मे की तरह आँख पर धारण किये रहता है तो सर्वत्र उसे नरक दिखाई पड़ता है। पर जब वह अपने को सुधारने और बदलने के लिए प्रयत्नशील होता है तो बाहरी समस्याएँ और परिस्थितियाँ अपने आप ही सरल हो जाती हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक विचारधारा मनुष्य को स्वर्गीय जीवन की आनंदमय अनुभूति कराती रहती है और अतंतः आत्मा-परमात्मा को प्राप्त करने का लक्ष्य भी उसी मार्ग पर चलते हुए प्राप्त हो जाता है।

जीवन का प्रत्येक क्षेत्र जिसके प्रकाश से दिव्य हो उठता है, उस अध्यात्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिए संसार के कोने-कोने से जिज्ञासु लोग यहाँ आते थे। नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-दीक्षा के महान् केंद्र बने हुए थे। वहाँ प्रत्येक लौकिक विद्या का शिक्षण होता था, पर दीक्षा का आधार अध्यात्म रहता था। उनमें शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले प्रत्येक छात्र का जीवन अध्यात्मवादी दृष्टिकोण से ढला रहता था। वे छात्र जहाँ कहीं भी जाते थे, अपने उज्ज्वल चरित्र और सफल जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करके अध्यात्म की विजय पताका फहराते थे। जब तक वह परंपरा यथावत् चलती रही, तब तक भारत संसार के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व भी करता रहा और सुख-शांति की अजस्र धारा यहाँ निर्बाध गति से बहती रही।

भारत की महान् आध्यात्मिक संपदा आज भी शास्त्रों और ग्रंथों में ज्यों की त्यों मौजूद है। वैसे हम आज भी अध्यात्मवादी कहलाते हैं, पर असलियत कुछ और ही हो गई है। जिस प्रकार असली के स्थान पर हर चीज नकली चल पड़ी है, वही दशा अध्यात्म की भी हुई है। जो तत्त्वज्ञान मनुष्य की आंतरिक दुर्बलताओं के हटाने और महानताओं को जाग्रत् करने का प्रधान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधन था, वही अब लोगों को आलसी, कर्तव्यशून्य और दीन-दुर्बल बनाने का निमित्त बना हुआ है। स्वार्थी लोगों ने भोली जनता को अज्ञान में फँसाये रखने और ठगते रहने का जो कुचक्र चलाया, आज उसी को अध्यात्म समझा जाता है। गुरु लोग उसी के आधार पर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं और भोले-भाले अविवेकी लोग उसी टंट-घंट को सब कुछ मानकर स्वर्ग और मुक्ति के सपने देखते रहते हैं।

वर्तमान समय में प्रचलित आध्यात्मिक सिद्धांत बड़े विचित्र हैं। उनके अनुसार "संसार मिथ्या है, इसलिए किसी से मोह-माया न रखकर केवल भजन करते रहना चाहिये।" "जो भाग्य में लिखा है वही होगा, मनुष्य उसे बदल नहीं सकता। इसलिए ज्यादा हाथ-पैर पीटना व्यर्थ है।" "देवताओं की प्रसन्नता-अप्रसन्नता या सिद्ध-महात्माओं के आशीर्वाद से उन्नति होती है, मनुष्य स्वयं कुछ नहीं कर सकता। लौकिक समस्याओं पर विचार करना माया में पड़ना है, जो कुछ हो रहा है सब भगवान् की इच्छा है, उसकी इच्छा में हम क्यों बाधक बनें ? अपनी मुक्ति की बात ही हमें सोचनी चाहिये, दुनिया से हमें क्या मतलब ?" ऐसी विचारधारा में फँसा हुआ व्यक्ति दिन पर दिन स्वार्थी और निराश बनता जाता है। कर्तव्यों के प्रति उपेक्षा दिखलाता रहता है। ऐसे व्यक्ति हर क्षेत्र में असफल होते हैं।

देखा जाता है कि अध्यात्म की चर्चा करने वाले व्यक्तियों में से अधिकांश को बहुत पूजा-पाठ करने पर भी जीवन के हर क्षेत्र में असफलता मिलती है। कारण यही है कि ऐसे लोग अध्यात्म के सबसे प्रधान अंग जीवन-विकास की उपेक्षा किया करते हैं और केवल जप या पाठ को ही सब कुछ मान लेते हैं। ऐसा एकांगी तत्त्वदर्शन किसी एक व्यक्ति को कुछ शांति या संतोष भले ही दे सके पर समस्त समाज को वह किसी भी रूप से स्पर्श नहीं कर सकता और जब तक समाज का उत्थान न हो, तब तक किसी एक व्यक्ति का स्थायी कल्याण हो सकना कैसे संभव हो सकता है ? जिसमें गुण, कर्म, स्वभाव के विकास का, जीवन की समस्याओं का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठीक प्रकार समाधान करने का विधान न पाया जाए, वह तत्त्वज्ञान न उपयोगी सिद्ध हो सकता है और न प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। प्राचीन काल में हमारी आध्यात्मिक विचारधारा मानव जीवन के हर पहलू को विकसित करने की क्षमता रखती थी, इसी से उसे अपनाने वाले भरपूर लाभान्वित हुए और जहाँ कहीं वे गये उनकी प्रशंसा और प्रतिष्ठा हुई।

पूजा, उपासना का अध्यात्मवाद में प्रमुख स्थान है, पर इसके साथ ही यह भी साधना का अनिवार्य अंग माना जाता है कि मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव को उत्कृष्ट और आदर्श बनाये। जीवन के हर क्षेत्र में अध्यात्मवाद का समावेश करके ऐसी जिंदगी जिये जैसी कि मानव शरीरधारी को जीनी चाहिए। पूजा को औषधि और जीवन विकास की परंपराओं को पथ्य, परिचर्या माना गया है। औषधि तभी लाभ करेगी जब परहेज भी ठीक रखा जाए। चिकित्सक के बतलाये सारे नियमों का उल्लंघन करते रहने पर भी यदि कोई आशा करे कि औषधि सेवन मात्र से बीमारी दूर हो जाये, तो यह उसकी गलती ही मानी जायेगी। इसी प्रकार जीवन-विकास, समाज-कल्याण के सारे प्रयत्नों की उपेक्षा करके जो भजन मात्र से लक्ष्य की प्राप्ति चाहता है, उसे भूला-भटका ही माना जायेगा। किसी धर्म-ग्रंथ में यदि पूजा, भजन का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर अलंकारिक भाषा में लिख दिया गया है कि अमुक पूजा से सब कुछ प्राप्त हो जाता है तो उसे मनुष्यों की श्रद्धा बढ़ाने के उद्‌देश्य से अलंकारिक उक्ति ही मानना चाहिये। सच्चे भक्त-जनों में भक्ति-भावना के साथ-साथ कर्तव्यपरायणता, परोपकार, उदारता आदि की प्रवृत्तियाँ भी पूर्ण मात्रा में होती हैं और इन्हीं के आधार पर उनको दैवी शक्तियाँ और जीवन को चरम सफलता प्राप्त होती है।

सच्चरित्रता, सदाचार, संयम, परमार्थ आदि गुणों पर आधार रखने वाला अध्यात्म ही सच्चा अध्यात्म कहा जा सकता है। अपने गुण, कर्म, स्वभाव का शोधन और जीवन विकास के उच्च गुणों का अभ्यास करना ही साधना है। भगवान् को घट-घटवासी और न्यायकारी मानकर पापों से हर घड़ी बचते रहना ही सच्ची भक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। प्राणीमात्र के हित की दृष्टि से उदारता, सेवा, सहानुभूति, मधुरता का व्यवहार करना ही परमार्थ का सार है। सच्चाई, ईमानदारी, सज्जनता, सौजन्य आदि गुणों के बिना कोई मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। जो अपने समय, धन, श्रम, बुद्धि को अन्य लोगों की सेवा में जितना अधिक लगाता है, वस्तुतः वह उतना ही बड़ा महात्मा माना जा सकता है। सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों से जिसका जीवन जितना ओतप्रोत है, उसे उतना ही ईश्वर के निकट समझना चहिए। सन्मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को स्वयंमेव जो आत्मबल प्राप्त होता है, वह किसी योगाभ्यासी की कठिन साधना से कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता। वास्तविक अध्यात्म का स्वरूप यही है और इसी को जीवन में धारण करने वाला व्यक्ति अपना कल्याण करने के साथ दूसरे अनेकों को प्रकाश प्रदान करके उन्हें भी ऊँचा उठाने में सहायक बनता है।

इस समय इस बात की सबसे अधिक आवश्यकता है कि देशवासियों को अध्यात्म का सच्चा स्वरूप बतलाया जाए। उसका महत्त्व समझाया जाय और लोगों की विचारधारा को उस तरफ मोड़ा जाए। इस महान् तत्त्व को केवल कथा-वार्ता का विषय न समझकर, जन-जीवन में व्यावहारिक रूप से उसका समावेश होना परमावश्यक है। मनुष्य का अंतःकरण बदलते ही उसकी दुनिया भी बदल जाती है। अब संसार की परिस्थितियाँ जैसी विकृत हो उठी हैं, उनका परिवर्तन होना अनिवार्य है अन्यथा हम दिन-प्रतिदिन पतन और कष्ट के खड्डे में ही गिरते जायेंगे। यह परिवर्तन बाहरी हेर-फेर से संभव नहीं हो सकता, वरन् उसके लिए मनुष्य की अंतःचेतना को ही प्रभावित किया जाना चाहिए। इस प्रकार के बदलाव से ही हम सब रोग-शोक, क्लेश-कलह, पाप-ताप, आधि-व्याधि से छुटकारा पाने में समर्थ हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ऐसा नहीं है, जिससे संसार भर में फैली अशांति मिटकर लोगों को सुख-शांति का दर्शन हो सके।

युग-निर्माण योजना को मैंने अच्छी तरह पढ़ा और समझा है। उसकी पृष्ठभूमि में जो रहस्यमय शक्तियाँ काम कर रही हैं, उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी कुछ परिचय मुझे प्राप्त हो चुका है। इसलिए मुझे इस बात से बड़ी प्रसन्नता होती है कि जनता को सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी बनाने का एक ठोस प्रयत्न किया जा रहा है। इसके द्वारा मनुष्यों के अनेक कष्ट, संताप तो मिट सकेंगे, पर सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि भारत की महान् निधि, 'अध्यात्म' का सच्चा स्वरूप समझने और उसे अपने व्यावहारिक जीवन में स्थान देने का अलभ्य अवसर सर्वसाधारण को प्राप्त हो सकेगा।

भारतवर्ष यदि अपनी समस्त कठिनाइयों को हल करके संसार का मार्गदर्शक बनना चाहे तो उसका एकमात्र आधार अध्यात्म ही है। इसी के द्वारा हमारा भूतकाल महान् बन सका था और इसी से भविष्य के उज्ज्वल बनने की आशा भी की जा सकती है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम व्यावहारिक अध्यात्म का स्वरूप सर्वसाधारण को समझा सकें और उसके प्रत्यक्ष लाभों से लोगों को अवगत करा दें।

अशांति के दावानल में जलता हुआ समस्त संसार आज अध्यात्म के अमृत के लिए तरस रहा है। हमें आगे बढ़कर इसी महान् तत्त्वज्ञान का सच्चा स्वरूप प्रकट करने में अपनी शक्ति को लगाना है। युग-निर्माण योजना अध्यात्मवाद को जन-जन के जीवन में प्रविष्ट करने की व्यावहारिक विधि है। जितनी गहराई तक इसकी संभावनाओं पर विचार किया जाता है, उतनी ही अधिक आशा बँधती है और लगता है कि यदि हम इस मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चल सकें तो प्राचीन काल की तरह भारत पुनः 'स्वर्ग' कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकेगा और संसार के अन्य भागों के निवासी यहाँ से सन्मार्ग पर चलने की शिक्षा प्राप्त करके इसे पुनः जगद्गुरु का सम्मान प्रदान करेंगे। खोये हुए अतीत को पुनः वापस लाने का यह आध्यात्मिक प्रयत्न हमारे लिए आशा की किरण बनकर आया है और उसका हमें सादर अभिनंदन करना चाहिए।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org